मनोवेदना

लेखक—

श्री अम्बिकाप्रसाद वर्मा 'दिव्य, एम० ए०

प्रकाशक—

विद्याभास्कर बुकडिपो,

चौक, बनारस

मनोवेदना

शरद चन्द्र एम. ए. की परीक्षा देकर आगरा से लौट रहा था। मेल ट्रेन से यात्रा कर रहा था। खिड़की के समीप ही बैंच पर बैठा था। देखने में गोरा-चिट्टा रूपवान आदमी था। वेशभूषा अंग्रेजी थी और पहिली दृष्टिमें तो अंग्रेज हीका धोखा होता था। रेलवेमें इस समय ज़ोन टिकट चल रहा था। डब्बों में इतनी भीड़ थी कि बहुत से यात्री खड़े खड़े ही यात्रा कर रहे थे राजा मंडी से चल केन्ट स्टेशन पर गाड़ी रुकी। यात्रियों ने एक दूसरे को धक्का देते हुए डब्बों में घुसना आरम्भ किया। एक सज्जन एक युवती के साथ, इस डब्बे में भी, जिसमें शरद चन्द्र बैठा था, घुस आये। महाशय अंग्रेजी ड्रेस में थे अतः उन्हें सीट पाने में अधिक कष्ट नहीं उठाना पड़ा। फिर उनके साथ में एक सुन्दर युवती भी थी। कौन इतना अशिष्ट होगा जो एक युवती के लिये जगह न कर दे। जहाँ कुछ ग्रामीण खड़े खड़े यात्रा कर रहे थे वहीं इन महाशय को लेटने को भी जगह निकल आई। किसी ने अपना बंडल सीट पर से उतार कर नीचे रख लिया, किसी ने अपने विस्तर समेट लिये कोई उठ कर बैठ गया। इन महाशय ने विना यहाँ वहाँ नज़र फेंके, अपना विस्तर खोला और सीट पर बिछा कर लेट रहे। युवती उनके सिरहाने शरद चन्द्र के सामने बैठ गई।

युवती की आयु १५ या १६ वर्ष के लगभग होगी। उसके अंग अंग से यौवन फूटा सा निकलता था। गालों पर गुलाब खिल रहे थे। आँखों में कौतूहल और लज्जा का अद्भुत मिश्रण था। जार्जेट की हलकी पीली साड़ी उसके शरीर के रंग में मिली जा रही थी। पेटीकोट की बेल साड़ी के ऊपर भी झलक रही थी। लम्बी चोटी जिसमें रेशमी फीता बँधा हुआ था साड़ी के भीतर इस प्रकार दिखलाई पड़ रही थी जैसे कोई मछली प्रभात के सुनहले सरोवर में तैर रही हो। गले में पड़ी हुई मोतियों की माला, मछली के आन्दोलन से उठे हुए पानी के बुदबुदों की सी शोभा दे रही थी। वह बैठ तो गई परन्तु सहसा शरद चन्द्र के सामने अपने को पाकर कुछ सहम सी गई। शरदचन्द्र की नज़र से नज़र मिलाने का उसको साहस न हुआ। अतः खिड़की के बाहर ही मुँह रखने का उसने संकल्प सा कर लिया। शरद चन्द्र की उन महाशय से अंग्रेजी में बातें होने लगी। ज्ञात हुआ कि उन महाशय का नाम विनोद था। युवती उनकी बहिन थी। उसका नाम कुमुद था। वह बी० ए० की परीक्षा देकर घर जा रही थी। नासिक में उनका घर था। वह पेट्रोल की एजेन्सी लिये थे। देहली में उसकी एक ब्रांच थी। कुमुद वहीं पढ़ती थी।

बात करते करते विनोद को नींद आ गई। वह खुर्राटे भरने लगे। उनके सोते ही शरदचन्द्र अपने को उस थोड़े परिचय ही से, कुमुद तथा उनके सामान की रक्षा का उत्तरदायी सा समझने लगा। वह सामान देखने के बहाने बार बार उसकी ओर देखने लगा। यहाँ विनोद को सोया हुआ जान कर डब्बे के रूप लोलुप यात्री अपनी सतृष्ण आँखें कुमुद की ओर फेंकने लगे। कुछ को तो शरद चन्द्र पर ईर्षा होने लगी। कोई कोई सज्जन जो कुछ दूर बैठे थे, पाखाने को जाने के बहाने कुमुद के पास से निकलने लगे। एक महाशय ने त रेल के धक्के से गिरने का ऐसा अभिनय किया कि कुमुद के कंधे पर हाथ ही रख दिया। मन में तो महाशय ऐसे खुश हुए जैसे हातिम की कब्र पर

लात मार आये हों पर जाहरा बड़े दीन भाव से क्षमा माँगते, और पश्चात्ताप करते हुए आगे निकल गये। कुमुद नाक मुँह सिकोड़ कर रह गई। इस छोटे से अपराध के लिये वह शोर गुल न कर सकी। एक दूसरे सज्जन जो कुमद के समीप ही सीट के नीचे बैठे हुए थे एक दूसरा अभिनय कर रहे थे। कुमुद की साड़ी कुछ सीट के नीचे झूल रही थी। ये महाशय धीरे धीरे अपनी उँगलियाँ बढ़ाते और साड़ी को और नीचे खींच देते। कुमुद देखती तो वे बड़े गम्भीर भाव से दूसरी ओर देखने लगते। साड़ी उसके कंधे से बार बार फिसल पड़ती। वह बार बार उसे सम्हाल लेती पर विना देखे किसी से कुछ कह न सकती। खून का घूँट पीकर रह जाती। पर शरद चन्द्र ने इन महाशय का यह विनोद देख लिया। वे महाशय समझते होंगे कि शरद चन्द्र को भी उनकी इस छेड़ छाड़ में आनन्द आता होगा। पर शरद चन्द्र को यह बात अच्छी न लगी उसने उन महाशय को उचित दंड देना चाहा परन्तु, इस बिचार से की कुमुद की इसमें बदनामी होगी, वह रह गया। पर साथ ही अपने पैर पसार कर उसने, उन महाशय की उस कुवासनामय क्रीड़ा के लिये मार्ग भी बन्द कर दिया। वह महाशय अपना हाथ खीच कर निश्चेष्ट से एक तरफ बैठ रहे। परन्तु उस कुवासना ने शरद चन्द्र को भी न छोड़ा। उसे एक नया खेल सूझा। अचानक उसे अपने केमरे की याद आई। चट उसे अपने बाक्स में से निकाल कर सुधारने के बहाने कुमुद का फोकस मिलाने लगा। शरद के हाथ में केमरा देख कुमुद के मन में कुछ कौतूहल हुआ कुछ जिज्ञासा। कौतूहल यह कि एक अज्ञात और अपरिचित यात्री का फोटो लेकर वह क्या करेगा। जिज्ञासा यह कि क्या वह उससे प्रेम करने लगा। इतने लोगों के सामने कहीं वह फोटो न ले ले और उसे लज्जित होना पड़े इस विचार से कुमुद ने उसकी ओर देखना भी बन्द कर दिया। शरदचन्द्र पर यह उलटी पड़ी। कुछ हताश सा हो केमरे को सीट पर रख खामोश बैठा रहा। कुमुद को यह बात मालूम हो गई। वह अपनी विजय से मन ही मन मुस्कुराई। शरद

चन्द्र को लज्जित सा देखने के लिये एक बार फिर उसने मुख फेरा। उसी समय सामने खिड़की के पास ही कुछ ऊँचे टीले पर एक मृगी रेल की आवाज से भौचक सी दिखलाई पड़ी। केमरा फोकस मिला हुवा तो रक्खा ही था, शरद्चन्द्र ने शीघ्र ही "खट" कर दिया। कुमुद ने कुछ मुस्कराकर मुँह फेर लिया। सामने उसे मृगी दिखलाई पड़ी।

शरद्चन्द्र अपनी विजय से मन ही मन हँसने लगा। सोचने लगा, यदि फोटो अच्छा आ गया तो अमूल्य चीज होगी। इलस्ट्रेटड वीकली में भेजूँगा। अवश्य इस पर फर्स्ट प्राइज़ मिलेगी।

इतने में झांसी स्टेशन आ गया। शरद को यहाँ उतरना था। बिनोद जाग उठे। शरद ने कुली को बुला कर सामान दिया और विनोद से हाथ मिला गाड़ी से नीचे उतर गया। चलते चलते शरद ने फिर एक ब र कुमुद की ओर देखा। कुमुद ने भी इस बार उसकी नज़र से नज़र मिलाई और हँस दिया। गाड़ी चल दी ! शरद भी चलते बना।

२

कुमुद की माँ "रमा" पुराने चाल ढाल की भारतीय रमणी थी। उसे स्त्रियों का पढ़ना लिखना पसन्द नहीं था। उसका ख्याल था कि स्त्रियाँ पढ़ लिख कर बरबाद हो जाती हैं। सतीत्व के बन्धन को तोड़ फेंकती हैं। पढ़ लिख कर वे सीखती ही क्या हैं ? बात बात में पति की बराबरी करना, पति के साथ लगा फिरना, मुँह खोल कर जान अजान से बात करना, क्लबों में जाकर नाँचना और मौज करना। पढ़ी लिखी स्त्रियों का यह भयङ्कर चित्र अपने हृदय पर अंकित किये वह अपने को अशिक्षित होने में ही धन्य भाग्य समझती और सनातन धर्म का अपने को आदर्श मानती हुई, आत्म गौरव से भरी रहती परन्तु उसके पति दिनेश बाबू उसे फूहर और असभ्य समझा करते

दोनों दो आदर्शों के प्रतीक थे। दिनेश पश्चिमीय सभ्यता के और रमा प्राचीन भारतीय सभ्यता की। परन्तु दिनेश के स्वभाव में सहनशीलता अधिक होने के कारण किसी प्रकार पटती जाती थी। पर प्रायः हार में भी वही रहती थे। कुमुद की शिक्षा के विषय में वह प्रायः विवाद छेड़ती और विघ्न उपस्थित करती। पर कुमुद को पढ़ने लिखने का कुदरती शौक़ था। दिनेश बाबू स्त्री शिक्षा के पक्ष में थे ही। इस कारण से रमा की दाल न गलती।

कुमुद बी० ए० की परीक्षा देकर घर आई। रमा प्रेम से हँसती हुई बोली। अब तो मेरी कुमुद मेम बन आई। अब तो उसकी किसी साहब से शादी करनी होगी। कुमुद माता का यह आक्षेप सुन सहम गई। उसके हृदय में सहसा शरद की याद आ गई पर उसने हृदय को वहीं मसल दिया। शिक्षा के ऊपर यह आक्षेप उसे अच्छा न लगा। तिरस्कार सूचक हँसती हुई बोली—माँ जी, आप क्या कहा करती हैं! क्या पढ़ लिख कर स्त्रियाँ मेम ही बन जाती हैं? रमा को कुछ उत्तर न आया। हँस कर उसने प्रेम से कुमुद को हृदय से लगा लिया और बोली कुमुद मैं तो तुझे चिढ़ाने के लिये हँसती हूँ। तू तो ऐसी छुई मुई है कि फौरन बुरा मान जाती है। यह कहते उसकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये। कुमुद ने माँ का मर्म लेने के लिये फिर हँसते हुए पूछा। क्यों माँ! मेमें कैसी होती हैं। हाँ?"बहुत बुरी' रमा तीव्र होकर बोली। सुना नहीं वे अपने मन की शादी करती हैं। पति के साथ फिरती हैं। न किसी से पर्दा करती हैं न किसी की शर्म। "तो इसमें क्या बुरा है?" कुमुद ने फिर पूछा। "तो क्या तू इसमें अच्छा समझती है?" रमा नाक सिकोड़ती हुई बोली "तो क्या तू भी ऐसा ही करेगी? तेरी शादी मैं करूँगी, हरगिज़ तुझे न करने दूँगी। इसी ख्याल में न रहना कि मैं पढ़ लिख गई हूँ तो माँ बाप का कहना न मानूंगी। अपनी चाल चलूँगी।

इतने में दिनेश बाबू एक फोटो लिये हुए आ गये। वह साल भर से कुमुद की शादी के लिये चिन्तित थे। फोटो को देखते ही रमा

बोली "क्या वही फोटो है ?" हाँ ! कहकर उन्होंने रमा को फोटो दिया और चले गये। चाहते तो थे कि स्वयं फोटो कुमुद को दिखलावें और उसका मर्म लें। पर साहस ने जवाब दे दिया। रमा ने फोटो ले कुमुद को दिखलाया और बोली "देख तो कुमुद यह किस का फोटो है। अँग्रेजी में यह क्या लिखा है ? कुमुद तिरछी दृष्टि से फोटो की ओर देखती हुई बोली "माँ जी यह तो तुम्हारा ही फोटो है। तुम्हारा ही नाम इसमें लिखा है। "हट पगली ! मुझसे ही मजाक करती है ?" पढ़ी लिखी नहीं तो क्या इतना भी नहीं जानती ? "ऐसा कहते हुए रमा ने फोटो छीन लिया और लेकर चलती हुई। कुमुद कुछ चिन्तित सी हो आराम कुर्सी पर लेट रही और किताब पढ़ने लगी।

इतने में कुमुद की एक सहेली जिसका नाम विमला था, इलस्ट्रेटड वीकली का एक अंक लिये हुए आई। उसने चुपचाप वीकली का एक चित्र निकाल कर कुमुद के सामने रख दिया और दूर खड़ी हो गई। कुमुद चित्र को देखते ही अवाक रह गई, उसे एक माह पूर्व की याद आई। वह ट्रेन में खिड़की से झुकी हुई बैठी है। पीछे उसके शरद-चन्द्र बैठा है। केमरा लिये उसका फोकस मिला रहा है। वह मुँह छिपा रही है। पर न जाने कब उसे मौका मिल जाता है। उसका फोटो आ गया, मुस्कराती हुई वह सामने बैठी है। उसके पीछे एक हिरणी भौचक सी एक टीले पर खड़ी हुई है।

विमला ने ताना कसा "क्यों कुमुद क्या यह तेरा फोटो नहीं ? किसने तुझे शूट किया है ? मुझे तो वह मिलता तुम्हें ही उस पर निछावर कर देती। कुमुद झुंझला कर बोली "न जाने किस ईडियट ने है यह शैतानी की। मुझे मिलता तो मैं भी उसे बिना शूट किये न छोड़ती। पुरुष बड़े निर्लज्ज होते हैं। उनमें साधारण सी भी सुशीलता नहीं होती। मूर्ख ने यह भी नहीं सोचा कि इस चित्र को मेरे माँ बाप भी देखेंगे। तू ही विमला कह लज्जा के मारे कहाँ गड़ जाऊँ ?" उसी के हृदय में जिसने तुझे शूट किया है" बिमला बोली। लाओ चित्र तुम्हारी माँ को दिखला आऊँ।

नहीं, नहीं, तुझे मेरे सिर की कसम है ऐसा न करना। ऐसा कहते हुए कुमुदने बीकलीमें से चित्र फाड़ लिया और अपनी जेबमें रख लिया बिमला झल्ला कर बोली "बहिन! यह तो तुमने बुरा किया। मेरा नया बीकली फाड़ दिया। मुझे चित्र दिखलाना होगा तो क्या और बीकलीज़ न मिलेंगे? अभी इसकी सौ कापियों के लिये आर्डर भेजती हूँ। सारे शहर में उसे बांटूंगी।

इतने में विनोद आ गये। बोले क्या है विमला। क्यों झल्ला रही हो? बिमला ने शान्ति भाव से कहा "यों ही"। "कुमुद!" ? फिर विनोद बाबू बोले—मैं आज फिर दिल्ली जा रहा हूं। मुझे यहाँ के लिये एक क्लर्क की जरूरत है। तुम इन दरख्वास्तों को देख कर किसी एक व्यक्ति को सौ रुपये का आफर दे देना। दरख्वास्तों की फाइल मेज़ पर रख विनोद बाबू सिगरेट फूँकते हुए चले गये।

बिमला भी चली गई।

२

शरद एम० ए० पास हो गया। अब उस के सामने समस्या थी कि अब क्या करे? उसके पिता ने जिसे वह दादू कहता था, अपनी सब ही घर गृहस्थी बेच कर उसके पढ़ने में लगा दी थी। अब खाली हाथ हो बैठ रहा था। शरद चन्द्र के दिन अभी तक आराम में कटे थे। उसके सामने परीक्षायें पास करने के अलावा कोई चिन्तायें नहीं थीं। उसे जितने रुपये की जरूरत पड़ती थी, पिता को पत्र लिखते हीं उसे मिल जाते थे। पर पिता किस प्रकार रुपया भेजता था उसे पता नहीं था न उसने कभी जानने की ही कोशिश की थी। वह सुलझे हुए दिमाग का व्यक्ति था। उसे दूसरे के काम में हस्तक्षेप करने की क्या पड़ी थी। सोचता था, पिता के पास काफी रुपया होगा तभी मुझे कालेज में रख कर पढ़ा रहे हैं। इसी ख्याल से वह खर्च में भी कभी हाथ नहीं सिकोड़ता था। दादू भी घर फूँक तमाशा देख रहा था।

शरद को रुपया भेजने में कभी हीला हवाला न करता था। दस माँगे तो बीस भेजता था। उसे डर था कि रुपया की कमी कहीं उसके पढ़ने में बाधा न डाले। इसे आशा भी तो थी कि शरद के पास होते ही उसका सब रुपया मय सूद के लौट आवेगा। शरद कहीं न कहीं बड़ा आफीसर हो जावेगा और घर को रुपये से भर देगा। पर पिता और पुत्र दोनों के विचार अब मुकाबले पर आये। शरद को अपने पिता की ग़रीबी का पता पड़ा। उसे पिता की अक्ल पर बड़ा तरस आया। अपनी फिज़ूल खर्ची पर भी उसे दुःख हुआ। सोचने लगा कि इतना रुपया मेरे पढ़ने में न लगाकर किसी रोजगार में लगाया जाता तो आज क्या मालामाल न होते ? एम० ए० करके मैं क्या कमा लूँगा ? पिता जी को एम० ए० बी० ए० की कैफियत का अभी पता नहीं। जानते नहीं कि एम० ए० बी० ए० आज कल कुलियों से भी अधिक सस्ते हैं। जहाँ दरख्वास्त भेजता हूँ वहीं 'नो वेकेन्सी' लिखा आता है। कोई अपना सिफारशी भी तो नहीं। किसी बड़े आदमी से अपना सम्बन्ध भी नही। काम का भी अभी अनुभव नहीं। ट्रेनिङ्ग कोई पाई नहीं। नये रंगरूट को कौन जगह दे। ट्रेनिङ्ग के लिये अब रुपया नहीं। पिता जी ने मुझे पढ़ाया लिखाया क्या है एक समस्या में डाल दिया है। एम० ए० का पट्टा यदि गले में न पड़ा होता तो क्या खोंमचा बेच कर ही दो चार रुपये रोज न कमा लेता ? मुझसे तो एक्का ताँगे वाले ही भले ! वे भी बिना किसी की आरजू मिन्नत किये दो चार रुपया रोज कमा लेते हैं। हम बी० ए० एम० ए० तो एक तिहाई आयु स्कूल और कालेज की चहार दीवारी के अन्दर ही खपा चुकते हैं, शरीर को घुला डालते हैं। आँखों की रोशनी खो बैठते हैं। मजनू की सी शक्ल बना बाहर निकलते हैं। इतनी तपस्या के बाद भी हमें कोई पूछता ही नहीं। हम पढ़ लिख कर मारे मारे फिरते हैं, राजा रईस बिना पढ़े लिखे भी मौज करते हैं। हम उनकी खिदमत के लिये हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। क्या शिक्षा इसी लिये होती है ? क्या पिता जी ने मुझे इसी योग्य बनाया है ? जितना रुपया मेरे पढ़ाने में लगा चुके

उसका आधा भी यदि आज मुझे मिल जाता तो आज लखपति बन के दिखला देता। बी० ए० एम० ए० की मिहनत तो वही बनी है पर मार्केट गिर चुका। लोग तीस पैंतीस से अधिक बतलाते ही नहीं।

शरद् के पिता की भी अब आँखें खुलीं। बी० ए० एम० ए० को असली कीमत मालूम हुई। शरद की दरख्वास्त लिये उसने इस हाकिम के पास उस हाकिमके पास दौड़ लगाई, आरजू मिन्नत की, पर कोई भी पत्थर का देवता न पसीजा। अब उसे मालूम हुआ बी० ए० एम० ए० में कोई सार नहीं, वह केवल गुलाम बनाने के साधन हैं। जिन पड़ौसियोंके बीच वह अपनी घर गृहस्थी बेच शरद की शिक्षा के लिये रुपया भेजता और हर प्रकार के कष्ट सहते हुए भी आत्मगौरव का अनुभव करता, निर्धन होकर भी सगर्व सिर ऊँचा रखता, वे भी अब उस पर ताना कसने लगे। क्यों दादू! सोचते रहे होंगे कि लड़का पढ़ लिख कर कहीं कलक्टर हो जायगा। क्या हम नहीं अपने लड़कों को इसी तरह पढ़ा लिखा सकते थे? हम पर रोब जमाने के लिये हमें निरा काठ का उल्लू सिद्ध करने के लिये तुमने वैसी अपनी गृहस्थी फूंकी अब भोगो उसका परिणाम। अरे आज कल के जमाने में रुपया ही सब कुछ है। रुपया ही शिक्षा है रुपया ही डिगरी। देखो हमारे रोज़गार अब भी ज्यों के त्यों चल रहे हैं। दो चार रुपया रोज विना किसी अड़चन के घर आ जाते हैं। न किसी को सलाम करने जाना पड़ता है न किसी की लाल पीली आँखें देखने को। पढ़ लिख कर बहुत होते तो कहीं बीस पचीस रुपया के मास्टर या क्लर्क हो जाते। दिन भर सिर खाली कराते या कलम घिसते अफ्सर हाकिम होना तो भाग्य की बात है। शिक्षा की नहीं। अशिक्षित राज्य करते हैं और शिक्षित उनकी गुलामी। पड़ोसिओं की बात सुन कर दादू के सिर पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ जाता। बेचारे आँसू पीकर रह जाते। किस बल पर किसी को जवाब देते?

एक दिन गाँव के जिमीदार के दरवाजे पर बैठे हुए कुछ लोग शिक्षा के विषय में ऐसी ही कुछ बातें कर रहे थे। शरद के ऊपर से ही

चर्चा छिड़ गई थी। एक महाशय बड़े घमंड से कह रहे थे "मैंने तो आज कल की शिक्षा का भेद पा लिया। स्कूल कालेजों में शिक्षा नहीं दी जाती लोफर बनाया जाता है। गवर्नमेन्ट अपना उल्लू सीधा करने के लिये यहाँ के लोगों को निरा बुद्धू बनाये हैं और हम लोगों की अक्लों पर भी पत्थर पड़ गये हैं जो नौकरी के लोभ से अपनी सन्तान को अंग्रेजी शिक्षा दिलाते हैं।" दादू उन महाशय की हाँ में हाँ मिलाता जाता था पर भीतर ही भीतर उसके आग सुलग रही थी। जब वे अपना भाषण समाप्त कर चुके दादू अति दीन भाव से बोला "क्यों भैया आपने भी कुछ बी० ए० ए० एम० पास किया है ?"। नहीं, मैंने ऐसी भूल नहीं की यद्यपि मेरे माँ बाप पर भी यही भूत सवार था। कहते तो महाशय बड़े गर्व से कह गये पर उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

इतने में डाकिया आया। सब की आँखें उसकी ओर जा लगी। वह अपनी चिट्ठियाँ उलटने पलटने लगा। सब लोग इस भाव से देखने लगे जैसे लाटरी खुल रही हो। शरद बाबू के नाम एक लिफाफा निकला। लिफाफा दादू को दे डाकिया चलता हुआ। लिफाफा पा कर दादू बड़े कौतूहल से घर भागा। किसी ने पीछे से ताना कसा "क्या कहीं से आफर आ गया ? " पर दादू ने कोई उत्तर न दिया।

शरद ने लिफाफा खोला। उसे कोई उत्सुकता न थी उसे विश्वास था, कहीं से नो वेकैन्सी लिखा आया होगा। परन्तु पत्र को पढ़ते ही उसके मुख पर बिजली चमक गई। वह उछल पड़ा। बोला "ईश्वर बड़ा मालिक है सब की खबर रखता है सौ रुपये का आफर आ गया। नासिक में पेट्रोल की एजेन्सी में एक क्लर्क की आवश्यकता है। सौ से स्टार्ट है आगे तरक्की की आशा है। दादू ने घुटने टेक कर ईश्वर को धन्यवाद दिया। कृतज्ञता के आँसू उसकी आँखों में डबडबा आये। बोला 'जो लोग मज़ाक उड़ाते थे उनके मुँह काले हो जायेंगे। शिक्षा आखिर शिक्षा है, बनियाई, बनियाई। शरद बोला "दादू अभी किसी से कहना नहीं। मुझे जाकर चार्ज ले लेने दो तब बतलाना। कहीं लोग

बाधा न डालने लगें। दादू अपनी अक्लपर गर्व सा करता हुआ बोला भैया मैं पागल हूँ क्या ? यहाँ के लोगों को खूब जानता हूँ। शरद जाने की तैयारी करने लगा।

———

४

जितनी चिन्ता कुमुद की शादी की दिनेश बाबू को नहीं थी उससे कहीं अधिक रमा को थी। लड़का वह पहले से ही चुन चुकी थी, उसका फोटो भी मँगा चुकी थी। फोटो उसे पसन्द आ गया था। दिनेश बाबू को भी वह पसन्द करा चुकी थी। लड़का देखने सुनने में अच्छा था। भले घर का था। परन्तु कुछ अधिक पढ़ा लिखा नहीं था। रमा पढ़ना लिखना अधिक ज़रूरी भी नहीं समझती थी। वह रईस का लड़का था। पढ़ लिख कर उसे स्कूल मास्टरी या क्लर्की तो कहीं करनी नहीं थी। उसके यहां स्वयम् कई बी० ए० एम० ए० नौकर थे। अच्छा रोजगार चल रहा था, जगह जगह दूकाने थी और कोठियाँ भी जिनका किराया आता था। दिनेश को ये सब बातें पसन्द थीं परन्तु लड़के का अपढ़ होना उनको खटकता था। वह इस विषय में कुमुद के विचार जानना चाहते थे। उसे अपनी तरफ से शादी की आज़ादी देना चाहते थे। लड़का चुनने का उत्तर दायित्व अपने सिर न लेना चाहते थे। डरते थे कि यदि लड़का कुमुद के मन का न हुआ तो जन्म भर कोसेगी। लड़का या लड़की, किसी के लिये भी वर या कन्या ढूढ़ कर गले मढ़ना, वे गुनाह वेलज्जत समझते थे। प्रायः उसे "थैंकलेस टास्क कहा करते थे। उन्हें स्वयम् अपने से ही अनुभव था। योग्य सम्बन्ध न होने से जीवन कितना दुखमय हो जाता है, इसके स्वयम् वह भुक्तभोगी थे। वह जब कभी किसी महाशय को अपनी सुशिक्षित लेडी के साथ बाजार में घूमते देखते तो उनके मन में एक ईर्षा एक टीस सी होती। अपने भाग्य को कोसते, अपने माता पिता को कोसते जो उनके गले एक अशिक्षित भैंस बाँध कर चल बसे थे। भैंस मारती तो नहीं परन्तु स्वयम् मार खाने पर

भी अपने रास्ते से टस से मस नहीं होती। रमा का यही हाल था। उन्हें अपनी सभी महत्वाकांक्षा उस पर निछावर कर देना पड़ी थीं। दूध का जला मट्ठे को फूंक फूंक कर पीता है। विनोद को उन्होंने इन्हीं विचारों से अपने मन की शादी कर लेने दी थी। कुमुद के विषय में भी वह यही चाहते थे। जाति पाति के भी वे कायल नहीं थे। हाँ शिक्षा को अवश्य बहुत ज़रूरी समझते थे। कुमुद बी० ए० पास हो गई थी। उसका किसी अपढ़ लड़के से विवाह कर देने पर कैसे पट सकेगा, वह नहीं समझ सकते थे। उनके ख्याल से तो उसके लिये कोई एम० ए० या डीलिट् होना चाहिये था। उन्हे विश्वास था कि कुमुद अपना वर स्वयम् ढूढ़ लेगी। उन्हें इस विषय में उतावली या चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं थी। उसे समय देना चाहिये। इसी ख्याल से वह रमा के प्रस्ताव में कोई दिलचस्पी नहीं लेते थे उसका मन भरने के लिये, तथा अपने सिर का भूत भगाने के लिये, वह रमा की हाँ में हाँ मिलाते रहते परन्तु रमा के दूर हटते ही सब भूल जाते।

रमा साधारण स्त्री नहीं थी। अपढ़ होने पर भी वह सौ पढ़ों के कान काट सकती थी! दिनेश बाबू की वह सब चालें समझती थी वह कैसी कैसी बात बनाते हैं, कैसे कैसे उसका मन भरते हैं, उसका मर्म लेते हैं, उसे मूर्ख और पगली समझते हैं, यह वह सब समझती थी। वह भी पगली बन कर, अपना उल्लू सीधा करना जानती थी। जानती थी कि स्कूलों में सब पढ़ाया जाता है, परन्तु स्त्री चरित्र तो नहीं पढ़ाया जाता। वह धीरे धीरे विवाह की सब तैयारी कर चुकी थी। अन्नादि एकत्रित हो चुका था। बर्तन भांड़े खरीद चुकी थी। लड़के के यहाँ से शादी की मंजूरी भी मँगा चुकी थी। पर दिनेश बाबू को कानों कान पता नहीं था। वह विनोद की शादी में मुँह की खा चुकी थी। बहू विनोद के मन की आ गई हो पर उसके मन की नहीं थी पर लड़के पर पिता का अधिक अधिकार होता है इस लिये वह कुछ बोल न सकी थी पर लड़की पर तो सोलह आना उसी का अधिकार है। अपने अधिकार में वह किसी को हस्तक्षेप करते

नहीं देख सकती थी। दिनेश को उसने शादी तै करने को भेजा।

कुमुद धर्म संकट में थी। उसके सामने, बी० ए० की परीक्षा से भी अधिक कठिन परीक्षा अब थी। किसके नोट्स पढ़े, किन आथर्स को कन्सल्ट करे, किसका ट्यूशन लगावे, उसकी कुछ समझ में नहीं आता था। उसने बहुत से नाविल्स पढ़े थे, बहुत सी कहानियाँ, परन्तु अपनी सी अवस्था में उसने किसी पात्रको नहीं पाया था। माँकी चाल उसे सब मालूम हो चुकी थी। कुतुबनुमा की सुई भी उत्तर से दक्षिण को रक्खी जा सकती थी परन्तु रमा का इरादा नहीं बदला जा सकता था। बात बात में वह कुए में गिर कर मरने की धमकी देती। भाग्य बश घर में कुआ भी था। दिनेश बाबू ने उसे कई बार पुरा देने का भी विचार किया था परन्तु उसी रमा के कारण न पुरा सके थे। कुमुद किसी बात से नहीं डरती थी, परन्तु माँ की मरने की धमकी उसे कायल कर देती थी। वह कह चुकी थी कि यदि तू मेरे मन की शादी न करेगी तो मैं मर जाऊँगी। माँ के ये शब्द कुमुद को नहीं भूलते थे। कुमुद स्वयम् मर सकती थी परन्तु माँ का अपने पर मरना बरदाश्त नहीं कर सकती थी। इसकी कल्पना भी उसको अप्रिय थी। पिता का उसको सहयोग प्राप्त था, भाई भी उदार विचारों के थे परन्तु इन बेचारों की रमा के सामने चलती ही क्या थी? रमा की मरने की धमकी से वे भी सहम जाते थे।

कुमुद ने शरद को आफर तो दे दिया था, परन्तु उसके दिल में चूहे लोटते थे। समझ न सकती थी कि आफर देकर उसने चतुरता की थी या मूर्खता। मूर्खता का ही पलड़ा उसकी नज़रों में भारी पड़ता था। बैठे बैठाये उसने सिर पर बला बुला ली थी। शरद को देखकर लोग उस पर आक्षेप करेंगे, ताने कसेंगे, चुटकी लेंगे। विमला उसकी नाकों दम कर देगी। भाभी भी उसे चैन न लेने देगी। पिता जी भी उसके मनकी बात ताड़ लेंगे और भाई भी न चूकेंगे। वह किसको कैसे मुँह दिखलायेगी? भाई ने मुझे आफर देने का काम क्यों सौंपा? कभी तो देते नहीं थे। क्या मेरा मर्म जानने के लिये ही तो उन्होंने

यह चाल नहीं चली ? अवश्य कुछ दाल में काला है। धोखा खा गई। क्यों न आफर केन्सिल कर दूँ। पर क्या शरद आ ही जायगा ? आफर की प्रतीक्षा में तो बैठा न रहा होगा। अभी तो आफर स्वीकार करने की उसकी चिट्ठी आयेगी। यह भी तो पता पड़े शरद के क्या विचार हैं। वह भी मुझे प्रेम करता है या क्या ? पर यदि वह आ ही गया तब तो लौटाना कठिन हो जायगा। हटाओ ! तार दे दूँ। यह विचार कर उसने ज्यों ही मेज पर से तार का फार्म उठाया, दरवाजे से खटखटाने की आवाज़ आई। जाकर देखा "विनोद और शरद दोनों बातें कर रहे हैं। कुछ सहमी सी होकर बोली—"आ गये भाई साहब।"

"हाँ आगया" सिगरेट जलाते हुए विनोद बोले।

"आपके साथ ये सज्जन कौन हैं ?" कुमुद ने भोली सी बनकर पूछा।

हँसकर विनोद बोले—आप को नहीं जानती ! तुमने आफर किसे दिया है ?।

"क्या ये वही महाशय हैं ?

आफर पाकर आये हैं ?'

कुमुद ने फिर पूछा।

ये आपको कहाँ मिल गये ?

क्या आप इसी ट्रेन से आ रहे हैं ?

'हाँ' विनोद ने उत्तर दिया।

ये वही महाशय हैं।

इन्हें तो तुम पहचानती भी होगी।

एक बार ट्रेन में न इनसे परिचय हुआ था ?

इतनी जल्दी भूल गई !

तुम्हारे सामने ही सीट पर बैठे थे।

कुमुद विनोद के भाव ताड़ गई।

लज्जा से आँखें नीचे किए हुए बोली—

"ऐसे तो ट्रेन में कितनों से परिचय होता रहता है !

क्या सभी याद रहते हैं। ऐसा कहती हुई कुमुद साड़ी को सिरपर सम्हालती हुई अन्दर चली गई।

विनोद ने शरद को ठहरने के लिए समीप ही एक कमरा खोल दिया।

उसका सामान रखवा कर अन्दर गए।

५

दिनेश बाबू आज पचीस वर्ष में अपनी ससुराल आये थे। इतने वर्षों में, रमा को छोड़, ससुराल की सभी वस्तुयें अपरिचित और नई सी हो गई थी। रमा के घर का भी ध्यान जाता रहा था। रास्ता भी भूल गया था। ट्रेन से उतर कर कुछ दूर तक आये परन्तु आगे रास्ता याद न आया। एक युवक को साइकिल पर आते देखा बोले—"राममोहन के मकानका रास्ता कौन है ?" राममोहन इनके ससुर थे। एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। गाँव के सभी आदमी इन्हें जानते थे। युवक उपेक्षा के भाव से बोला "चले जाइये नाक की सीध"। यह कोई सभ्यता का उत्तर नहीं था। मन में कहने लगे बड़ा गँवार मालूम होता है। कहाँ से इससे पूछा। दुबारा कुछ पूछने का साहस न हुआ। परन्तु युवक ही न जाने क्या सोचकर साइकिल से उतरा और बोला "आप कहाँ से तशरीफ लाये हैं। दिनेश बाबू कुछ कम मज़ाकिया नहीं थे। शीघ्र बोले" पीठ की सीध से। युवक बड़ा लज्जित हुआ। उसे फिर कुछ पूछने की हिम्मत न पड़ी। चट साइकिल पर कूद कर सवार हुआ और चलता हुआ। दिनेश बाबू मार्ग में अन्य व्यक्तियों से पूछते हुए राम मोहन के घर पहुँचे।

उनकी आव भगत होने लगी। ठहरने को कमरा खुल गया। पलंग बिछ गया। उनका सामान रख दिया गया। हाथ मुँह धोने को पानी और पीने को शरबत आ गया। खाने की तैयारी होने लगी।

अब रात के आठ बज चुके थे। दिनेश बाबू और राम मोहन

ब्यालू करके फुरसत से कुर्सिओं पर बैठे। पान सिगरेट दी गई फिर कुमुद की शादी की बात छिड़ी।

राम मोहन बोले "सम्बन्ध हो जाय तो है तो अच्छा! कमलाकान्त बड़े भले आदमी हैं। घरके रईस हैं ही, सो आपसे छिपा नहीं। लड़का ही कुछ कम पढ़ा लिखा है। पर धन के सामने पढ़ने-लिखने को आज कल कौन पूछता है। जिसके चार पैसे हैं उसी के चारों-डिगरियाँ हैं। पैसा कमाना ही आज कल सब से कठिन हैं, परीक्षायें पास करना नहीं।

"है तो सही" दिनेश बाबू सिग्रेट में आग लगाते हुए बोले। पर मैं तो ऐसा घर चाहताथा जिसमें शिक्षा और धन दोनो हों। कुमुद इस साल आपकी कृपा से बी० ए० पास हो गई है। रूप रेखा भी जैसी है आपने देखी है। नाना के सामने ननहाल की बातें क्या करूँ। इच्छा थी, कुमुद के लिये कोई बी० ए० एम० ए० ही लड़का मिल जाय। और धन दौलत से भी सम्पन्न हो। पर आप की बहिन कमला बाबू के यहाँ ही सम्बन्ध करने के लिये जोर दे रही है। न जाने कमला बाबू का बुढ़िया को क्या प्यारा है।

राम मोहन हँसने लगा। बोला "आपके विचार तो ठीक हैं। पढ़ी लिखी लड़की के लिये लड़का भी पढ़ा लिखा होना चाहिये। परन्तु मन चाही सभी चीज कहाँ मिलती है? हाँ इतनी बात अवश्य है कुमुद के साथ शादी होने पर सम्भव है लड़का भी लज्जित होकर कुछ पढ़ने लिखने लगे और कुछ इल्म हासिल भी कर ले। अभी उम्र तो कुछ अधिक नहीं। मुश्किल से बीस का होगा परन्तु रईस का लड़का है देखने में काफी हृष्ट पुष्ट मालूम होता है। पर शादी होना इतना आसान नहीं। कमला कान्त बाबू जितने देखने सुनने में भले हैं उतने व्यवहार में नहीं। उन्हें अपने धन का बहुत घमंड है। शादी स्वीकार करने में हजारों नखरे करेंगे। एक ही लड़का है चाहते हैं अच्छी से अच्छी शादी करें। अपनी बराबरी का कोई रईस ही चाहते हैं। शिक्षा दीक्षाकी उन्हें परवाह नहीं न उसके महत्वको वे कुछ समझते

हैं। बी० ए० एम० ए० तो उनकी गुलामी करते हैं। शादी के कई एक प्रस्ताव आ चुके हैं पर किसी को स्वीकृति नहीं दी। उनसे बढ़कर मिजाज है उनकी धर्मपत्नी जी का। बाबू साहब एक हाथ ऊपर उछलते हैं तो वे ९ हाथ। है संस्कार की बात ! यदि कुमुद की शादी यहीं लिखी बदी हुई तो कौन रोक सकता है। बात तो करना ही चाहिये। मेरा वे बहुत लिहाज़ करते हैं, सम्भव है मेरे कहने से राज़ी भी हो जावें।

इतने में किसी ने दरवाजे पर आवाज लगाई। 'रमेश' 'रमेश' सिनेमा देखने चलते हो ? ।

राममोहन ने भीतर ही से बुलाया "बाबू यहाँ तो आना" बाबू साइकिल पटक कमरे में गया। एक कुरसी पर बैठ गया और सिगरेट निकाली।

राममोहन बोले "आप कमला बाबू के सुपुत्र हैं। रमेश के बड़े दोस्त हैं। हरदम साथ रहते हैं। साथ ही साथ पढ़ते थे, साथ ही साथ छोड़ भी चुके। अब साथ ही साथ सिनेमा देखने जाया करते हैं।"

दिनेश बाबू मुस्कराते हुए बोले "आप से तो सबेरे ही मुलाकात हो गई थी। आपके घर का रास्ता आप ही ने बतलाया था। बड़े लायक और सुशील हैं। क्यों बाबू आपने किस क्लास तक पढ़ा है ?"

बाबू अपनी बदतहजीबी की याद कर लज्जित सा हो बोला ""दसवीं तक।"

दिनेश फिर पूछा "आगे क्यों नहीं पढ़ा ?"

"मुझे कौन नौकरी करनी थी।" घर का काम चलाने के लिये काफी पढ़ लिया। अधिक पढ़ने लिखने से दिमाग खराब हो जाता है। बहुधा लोक पागल हो जाते हैं या निरे निकम्मे। पढ़ते पढ़ते नाक में दम हो जाती है। शरीर सूख जाता है। धन सम्पत्ति का नाश हो जाता है और सार कुछ नहीं निकलता। आप ही कहिये हिस्ट्री के नाम और तारीखें रटने से क्या सार निकलता है। ज्योमेट्री और एलजेबरा किस काम आते हैं। पर लकीर के फकीर मास्टर उन्हें रटाये बिना

नहीं मानते। वे तो चाहते हैं कि सभी लड़के उन्हीं जैसे निकम्मे और बरबाद हो जाँय। पढ़ लिख कर मास्टरी करते फिरें। पर आपही सोचिये मास्टरी भी कोई पेशा में पेशा है। लड़कों पर रोब जमाइये या किताबों के पन्ने उलटिये। पबलिक में तो उन्हें कोई पूछता नहीं। हाँ, वार्षिक परीक्षा के वक्त अवश्य उनकी कुछ पूछ बढ़ जाती है; पर कितने दिन के लिये। उस पूछ से दरिद्र की मक्खियाँ तो उड़ाई उड़ती नहीं। ईश्वर न करे किसी को मास्टर होना पड़े।

बाबू का भाषण सुनते सुनते दिनेश बाबू को कुछ नींद आ गई। उन्हें सोता देख बाबू ने राममोहन से पूछा "तुमने किस ईडियट को यहाँ बुला रक्खा है। पढ़ना-लिखना भी पूछना क्या कोई तहजीब है! मालूम होता है कहीं आप मास्टर हैं।

दिनेश बाबू आँखों में ही सो रहे थे। हँस कर बोले। "डरिये नहीं मैं मास्टर नहीं हूँ।" बाबू बहुत लज्जित हुआ। उठकर जाना ही चाहता था कि भीतर से रमेश भी निकल आया। दोनों सिनेमा देखने चलते हुए।

"इसी लड़के पर है कमलाकान्त को इतना नाज़। निरा काठ का उल्लू है।" यह कह दिनेश बाबू ने फिर सिगरेट जलाई और चैतन्य हो पीने लगे।

राममोहन कुछ अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, पर बात करने का ढंग जानते थे। जहाँ मूर्ख बनने की आवश्यकता होती थी वहाँ ऐसे मूर्ख बन जाते थे कि पूरे पैबारा पड़ते थे। जह विद्वान् बनने की आवश्यकता होती थी, बड़े बड़े वकीलों को मात करते थे। बाबू की बदतहजीबी उन्हें भी खटकी परन्तु उस पर कलई करते हुए बोले। "कहा तो बाबू ने सब वाजिब ही है। आप चाहे जो समझिये। कहिये कौन सी बात उसकी बेजा थी?

"मुझे ईडियट कहना भी वाजिब था" दिनेश बोले "इससे तो आप अवश्य ही सहमत होंगे।"

राममोहन को जोर से हँसी आगई। बोले-"सहमत नहीं तो असहमत भी नहीं। नई पोद बुड्ढों को ईडियट ही समझती है। यह

आजकल की शिक्षा ही का प्रभाव है जिसके आप इतने मुरीद हैं। बाबू ने तो दसवीं कक्षा ही तक पढ़ा है। इन्ट्रेंस पास भी नहीं हुआ। खुदा न ख्वास्त पास कर लेता तो शायद कमलाकान्त को भी ईडियट कहने लगता। यों बात करते करते दोनों सो गये।

६

शरद को काम मिल गया। काम को वह इतनी सावधानी और लगन के साथ करने लगा कि विनोद को दिनो दिन उस पर श्रद्धा और विश्वास बढ़ने लगा। विनोद यह भी ताड़ गया था कि कुमुद उस पर प्रेम करती है। विनोद के भी विचार अपने पिता के समान ही एडवान्स्ड थे। वह इस प्रकार की प्रेम की शादियों को पसन्द करता था। शादिओं के पुराने ढर्रे को बदलना चाहता था। कुमुद, उसके एक ही बहिन थी। उसे वह प्रेम करता था। जब कहीं बाहर जाता उसके लिये नये नयेडिजाइन्स की साड़ियाँ, चूड़ियाँ, ब्लाउज तथा ट्वाइलेट्स खरीद लाता। जब से वह बी० ए० पास हो गई थी, वह उसकी नजरों में और भी बढ़ गई थी। अब वह यही चाहता था कि कुमुद अपने मन का वर भी ढूँढ़ ले। शरद को देखकर विनोद का मन भर गया था। शरद किसी भी प्रकार कुमुद के अयोग्य वर नहीं था। था केवल जाति का अन्तर, जिसे वह कोई महत्व न देता था। अन्तर्जातीय विवाह उसे पसन्द था। इन्हीं सब कारणों से शरद पर वह और भी अधिक कृपायें करने लगा था। घर का काम काज भी उसने शरद ही को सौंप दिया था। यदि शरद से कोई गलती भी हो जाती तो उन्हें स्वयम् सम्हाल लेता। प्रायः ऐसे अवसर भी देता रहता कि कुमुद और उसकी भेंट होती रहती। आप छिप कर उनके प्रेम की परीक्षा लेता रहता।

पर शरद का कुछ और ही हाल था। वह कुमुद को प्रेम करता था। रात दिन उसके समीप रहना चाहता था। उससे मीठी मीठी

बातें करना चाहता था ! उसे साथ ही साथ पिक्चर दिखलाने ले जाना चाहता था। साथ ही साथ क्लब भी जाना चाहता था। एकान्त पाकर उसे हृदय से भी लगाना चाहता था। नज़रे चार करना चाहता था। परन्तु नौकरी चले जाने के भय से वह बहुत ही सतर्क रहता था। ऐसा कोई भी अवसर न आने देता था कि लोग उसकी ओर उँगली उठा सकें। वह अपने हृदय को इस प्रकार मसल कर रखता जैसे कोई पहलवान प्रतिद्वन्दी पहलवान को नीचे गिरा कर मसले। यदि कुमुद को खड़ा देखता तो कतरा कर निकल जाता। कुमुद यदि उसकी ओर नज़र उठाती तो वह अपनी नज़र नीचे गिरा लेता। यदि कुमुद कुछ इशारे करती तो वह उनका कुछ उत्तर न देता। पर मन ही मन अपने को कोसता। अपने को कायर समझता। अपने कालेज के दिनों को याद करता, जब वह लड़कियों से छेड़छाड़ करने में सदा आगे रहता। उन पर कागज के फूल चलाता, दीवालों पर उनके चित्र बनाता, उनके नाम लिखता, उन्हें देख प्रेम के गीत गाता, उनसे नज़र लड़ाता और न जाने कितनी शैतानियाँ करता। कालेज से एक्स-पल्सन (निकाले जाने) के लिये भी न डरता। नौकरी ने उसे क्या से क्या बना दिया था वह स्वयम् आश्चर्य में था। बीकली में कुमुद का जो चित्र भी उसने छपवाया था, उसे अब देखने का भी साहस नहीं करता था। जब वह स्वतंत्र था अब परतंत्र।

कुमुद का भी कुछ विचित्र हाल हो रहा था। वह प्रायः शरद से बात करने का मौका ही ढूँढ़ती रहती। उसे नज़रों से दूर न करना चाहती। जब जैसी ड्रेस बदलती, चाहती शरद को दिखला दूँ। किसी न किसी बहाने शरद को बुला भेजती। कभी कोई चिट्ठी लिखवाने का बहाना होता कभी बाज़ार से कुछ साड़ियाँ ब्राउज़ खरीद लाने का कभी कुछ हिसाब समझने का, कभी फोटो उतराने का। शरद सौ बार बुलाने पर एक बार आता और थाँह सी छू कर चल देता। कुमुद कुछ कारण न समझ पाती ! वह इतनी कृपायें करती, कभी उसे छिपा कर खाना भेजती, लिफाफों में रख कर नोट्स भेजती,

उसका बहुत सा काम खुद कर देती, उसकी ग़लतियाँ सम्हाल देती। तब भी शरद की ओर से उसे कुछ प्रोत्साहन न मिलता। सोचती क्या शरद बिलकुल ईडियट है या क्या? पुरुष समाज में ऐसा तो विरला ही निकलेगा जो स्त्रियों के इशारों का भी उत्तर न दे। यह स्त्री समाज का अपमान है। फिर सोचती शायद वह डरता है कि उसका भेद न खुल जाय तो वह संकट में पड़ जाय। या संभव है वह मुझे प्रेम भी न करता हो। उसे किसी दूसरी युवती पर प्रेम हो। या उसकी शादी हो गई हो। इन सब बातों का पता लगाना वह जरूरी समझती थी और ऐसे अवसर की तलाश में रहती थी कि शरद से एकान्त में कुछ देर बात कर सके। अवसर उसे मिल गया। माँ और भाभी को उसने चित्र देखने भेज दिया। वह खुद न गई क्योंकि पहले दिन देख आई थी। फिर घर में किसी का रहना भी तो ज़रूरी था। एकान्त पा उसने शरद को बुलवाया। यहाँ वह अपनी अच्छी से अच्छी ड्रेस पहिन कमरे को खूब सजा कर प्रतीक्षा में कुरसी पर बैठ रही। एक एक मिनट उसे घंटे के समान गुज़रने लगा। बार बार सोचती, यदि शरद आज न आया तो कल ही उसे निकलवा दूँगी। फिर कभी उसका नाम न लूँगी। न मुंह देखूँगी। जो पुरुष अपने भाग्य में वदा होगा उसी से संतोष करूँगी।

कुछ पैरों की सी आवाज आई। कुमुद उतावली से उठ खड़ी हुई। देखा तो एक कुत्ता था। कुमुद को ऐसा गुस्सा आया कि चाय का प्याला जो हाथ में लिये थी उसी से कुत्ते को फेंक कर जोरों से मारा पर कुत्ता तो बाल बाल बच गया। वहाँ से शरद बाबू आ रहे थे। प्याला उनके पैर में पड़ा। बेचारे वहीं बैठ गये। कुमुद पश्चात्ताप करती हुई दौड़ी। उनका हाथ पकड़ कर उठा लाई। आराम कुरसी पर बैठाला और हवा करने लगी। शरद बाबू ने पेन्ट उठाकर देखा तो पैर में गूम पड़ आया था। कुमद दौड़ी और भीतर भंडार में हल्दी तलाशने लगी। यह वर्तन पटका वह वर्तन पटका। कही भी हलदी न मिली। चूना था पर अकेली कैसे लगाती। टिंचर कहीं था नहीं।

बेचारी लौट आई और शरद का पैर मलने लगी। एक दूसरे के शरीर के स्पर्श से दोनों के शरीरों में बिजलियाँ दौड़ने लगीं। शरद और भी जोरों से कराहने लगा। पैर का दर्द तो शान्त था पर हृदय में बढ़ गया था। कुछ देर में धैर्य धारण कर बोला। कुमुद ! बस रहने दो। मुझे अधिक लज्जित मत करो।

शरद के कंधे से टिक कर बैठती हुई कुमुद ब ली। "आप मुझे लज्जित कर रहे हैं। मैं कितनी कठोर हूँ कितनी निर्दय हूँ। कुत्ते को यदि चोट लग जाती तो उसका पैर कौन मलता।"

शरद, कुमुद के गले में हाथ डालता हुआ बोला ! "कुमुद यह भी तो एक कुत्ता ही है जो रोटियोंके डरसे प्रेम ऐसी चीज को भी स्वीकार नहीं कर सकता। तुम्हारे सामने आने से डरता है तुम्हारी ओर नज़र उठाने से डरता है।

कुमुद उसी कुर्सी पर शरद की बंगल में सट कर बैठती हुई बोली "शरद बाबू नौकर का भय क्या ! नौकरी तो मेरे हाथ में है। मैं तुम पर निछावर हूँ, मेरी नौकरी भी। शरद बाबू "यह चित्र किसने लिया था। इलस्ट्रेटेड वीकली का उसने अपनी पाकेट से चित्र निकाला और उसके सामने रख दिया। इसका एक इनलार्जमेन्ट करदो।

शरद मुस्कराया और बोला "कर दूँगा" पर इसे किसी को दिखलाइयेगा नहीं। हाँ यह तो कहो कुमुद ऐसा छिपा यह प्रेम कब तक चलेगा। यदि प्रेम के लिये हम कुछ बलिदान करने के लिये तैयार नहीं तो प्रेम करना ही बेकार है।

'ठीक कहते हो शरद बाबू' कुमुद आह भर कर बोली। कुछ और कहने ही वाली थी कि बाहर से किसी की पुकारने की आवाज आई। शरद खिड़की से निकल गया। रमा और भाभी सिनेमा देख कर आ गये।

७

दिनेश कुमुद की शादी तै करके घर आ गये। रमा दौड़ी हुई उनके पास आई। दिनेश अपना सामान उठा कर भीतर भी न रख पाये थे कि वह बोली "क्यों शादी तै हो गई। दिनेश ने कुछ उत्तर न दिया। यहाँ जब से शरद आया था, रमा की चिन्ता और बढ़ गई थी। वह कुमुद और शरद को प्रायः बड़ी सतर्कता से ताकती रहती। दोनों पर उसे कुछ संदेह भी हो चला था। कभी कभी दोनों को बात करते भी देख लिया था। कुछ शिकायतें भी सुनी थीं। शरद उसकी आँखों का काँटा था। चाहती थी कि उसे निकलवा दूँ पर उसका विनोद पर कुछ बस न चलता था। घर में अन्दर आने से भी उसे मना करती। यदि वह आ भी जाता तो कुमुद के साथ लग जाती। जब तक शरद अन्दर रहता कुमुद का साथ न छोड़ती। और शरद से प्रायः आप ही बात करती। उस दिन सिनेमा देखने चली तो गई थी परन्तु उसका मन घर ही में रक्खा रह गया था। आधा खेल ही देख कर लौट आई थी। यहाँ शरद उतावली में अपना हैट कुमुद के कमरे में ही छोड़ गया था। उस हैट को देखते ही उसे आग लग गई थी। कहा तो कुमुद से कुछ नहीं था दिल में सब रहस्य समझ गई थी। ये सब बातें भी दिनेश से कहने को मन में भरे थी। दिनेश से उसने फिर पूछा "क्यों शादी तै हो गई।

"हाँ हो गई" दिनेश कुरसी पर बैठते हुए बोले। पर बड़े मुश्किल से तै हुई! कमला बाबू ने बड़े नाज नखरे किये।

"खैर तै तो हो गई" रमा ने प्रसन्न हो कर कहा 'सिर की चिन्ता दूर हुई' यहाँ कुमुद का कुछ अजब हाल हो रहा है, कहने का नहीं। जितनी जल्द हो उसके हाथ पीले करना और घर से बाहर करना है। लड़का कैसा है। तुम्हारा मन भर गया या नहीं? दहेज कितना ठहरा शादी इसी वर्ष करेंगे न!

"लड़का अच्छा है पर पढ़ा लिखा कुछ विशेष नहीं।" दहेज कुछ ठहरा नहीं पर तब भी उनकी हैसियत का देना होगा। शादी इसी

साल होगी। "सब तुम्हारे मन का हो गया। लाओ मिठाई खिलाओ।"

इतने में कुमुद भी वहाँ आ गई! उसे देखते ही रमा हँसकर बोली। मेरी कुमुद का कैसा अच्छा भाग्य निकला। कैसा अच्छा घर वर मिल गया। कुमुद को सुनते ही आग लग गई। झल्लाकर बोली। माँ जी तुम मेरे सामने ऐसी बात मत किया करो। भाड़ में जाय तुम्हारा घर और वर! मुझे शादी करना ही नहीं।

"न बिटिया ऐसा मत कह" रमा ने कहा। ऐसी अशुभ बात मुंह से क्यों निकालती है।" पढ़ लिख गई है तो तू बड़ी उद्दंड हो गई है। न सगुन असुगुन को मानती है न देवी देवता को। न घर के जेठे बड़े को। अपने मन की चाल कुचाल चलती है। जिसको जैसा मन आता है कह डालती है। अपने को दुनिया भर से परे समझती है। मैं तेरे सब रंग ढंग देखती रहती हूँ। मुझे तो तू बिलकुल लौंडी छेरी समझती है। भाई की शय पाये है। वह तुझे बरबाद करना चाहता है। भाभी की सलाह है। तू तो अभी समझती नहीं। पढ़ना और चीज़ है दुनिया का अनुभव और चीज़।"

कुमुद ने माँ के मुंह से पूर्व कभी ऐसी बातें न सुनी थी। वह समझ गई, शरद ही इन सब बातों का मूल कारण है। अगर उसके बस का होता तो खड़े खड़े प्राण त्याग देती। गुस्सा आँखों से आँसू बन कर बहने लगा। रोती हुई बोली। "माँ जी समझ में नही आता तुम क्यों मेरे पीछे पड़ी हो। तुम रात दिन भूत के समान मेरे सिर पर सवार रहती हो, मेरा पहरा दिये रहती हो, तब भी मैं चाल कुचाल चलती हूँ। जो तुम्हारे मन में पाप हो कह क्यों नहीं डालती। क्यों ताने कसती रहती हो। मैं घर में रहूँ या निकल जाऊँ।

रमा कुछ धीमी पड़ के बोली। "बेटी तू ही तो रोके जीत पाई है। मुझसे कुछ कहला मत। तेरा रोज का कच्चा चिट्ठा मेरे दिमाग में लिखा है। साँप कैसा ज़हर उगल चलूँगी। लाज का पर्दा टूटेगा। अपनी जाँघ उघारने से अपने ही को लाजों मरना पड़ता है। मैं दूध नहीं पीती। ये बाल धूप में नहीं सफेद किये! उड़ती चिड़िया पहि-

चानती हूँ। पर कुछ कहने से लाभ ही क्या है। कुछ ही दिनों में तेरी भाँवर पड़ी जाती है फिर तू भली और मैं भली।

दिनेश को कुछ बात समझ में न आई? उन्होंने माँ बेटी में पूर्व कभी ऐसा झगड़ा होते हुए न सुना था। रमा से झल्ला कर बोले। "बात क्या है? क्यों तुम ऐसी बे मतलब की बातें करने लगी। कहाँ शादी की बात हो रही थी, कहाँ यह बरबादी की होने लगी। क्या कुमद को अपना ही ऐसा फूहड़ बनाकर रखना चाहती हो।"

रमा क्रोध से उठ खड़ी हुई'और बोला "सुन नहीं लिया कुमुद ने अभी क्या कहा है। कहती है "भाड़ में जाय घर और वर, 'मैं शादी न करूँगी।' क्या यह ऐसा कहने की है। क्या शहर में यही अनोखी पढ़ी है। विमला को ही देखो कितनी सुशील लड़की है। जहाँ माता पिता ने शादी करदी, चुपके से चली गई। क्या वह पढ़ी नहीं। पर इनके तो मिज़ाज ही निराले हैं। इन्हें इनके भाई और भाभी ने है भरमा रक्खा। मेम वनाना चाहते हैं। रहें झोपड़ी में ख्वाव देखें महलों का। उनका तो मतलब यह समझती नहीं। चाहते हैं शादी में रुपया न लगाना पड़े, यों ही इसे वहाँ दें। पर मेरे जीते'जी ऐसा नहीं हो सकता। आखरी लड़की है, धूमधाम से शादी करूँगी। मुँह माँगा रुपया दूँगी। अगर कुमुद अपनी जिद करेगी तो इस पर प्राण दे दूँगी। कुए में गिरकर मर जाऊँगी। दुनिया का अजब हाल है। मैं तो इसी के लिये मरती हूँ और यह मुझे दुश्मन समझती है और जो छिपे हुए दुश्मन हैं उन्हें मित्र बनाये है।

कुमुद अपनी बात सुनकर शान्त हो गई। परन्तु उसके सामने की समस्या और भी जटिल हो गई। वह आँसू पोंछते हुए अपने कमरे में चली गई।

इतने में विनोद भी आगये और शादी की चर्चा फिर छिड़ गई। रमा, विनोद का मर्म लेने के लिये हँसकर बोली। "भैया शादी तै हो गई। अब धूमधाम से कर डालो। सिर का बोझ हलका हो। फिर अपना घर देखो गृहस्ती देखो; हम दोनों प्राणी कहीं बैठकर माला जपें।

"कहाँ तै हुई" विनोद ने पूछा। "शरद ही से न। कुमुद शरद ही से शादी करना चाहती हैं। दूसरे किसी से न करेगी। शरद को वह प्रेम करती है। मैंने खूब पता लगा लिया है! छिपकर उनकी बातें सुनी हैं। उनके प्रस्ताव सुने हैं। यदि शरद के साथ शादी न हुई तो अवश्य बरबादी होगी।

रमा झल्ला कर बोली "हरगिज़ न होगी! हो जो बरबादी होना हो। तुमने है उसे बहका रक्खा। रुपया न खर्च करना पड़े। मैं सब चाल समझती हूँ। एक निठल्ले को जिसकी न जाति का पता है न घर का, उसके लिये बुला रक्खा। आँख देखते मक्खी नहीं निगली जाती। उसके एम० ए० को क्या कुमुद देख देखकर जियेगी! जब घरमें चूहे लोटते होंगे तभी न बाहर नौकरी करता फिरता है। तुम अपनी मालकिन की शिक्षा में लगे हो। बिटिया को बरबाद कर देना चाहते हो। या मेरे जीते जी तुम्हारी कुछ न चलेगी।

दिनेश कुल पूछने ही वाले थे कि विनोद बीच में बोल उठा "मां जी, मैं न समझता था कि कि तुम्हारे दिल में ऐसा कपट भरा है। आज ही यह पर्दा खुला। मैं तो कुमुद को जैसा प्रेम करता हूँ ईश्वर देखता है। जब कभी बाहर जाता हूँ कुमुद के लिये कुछ न कुछ ले आता हूं और चाहे किसी के लिये कुछ न लाऊँ। शरद को मैंने तो बुलाया नहीं। कुमुद ही ने बुलाया है। पहले से उसका प्रेम और परिचय है। कुमुद ही के कारण मैंने उसे रख छोड़ा है नहीं तो ऐसे रंगरूट को कौन नौकर रखता। कुमुद ही के कारण मैंने न जाने कितने का नुकसान सहा जिसका कभी तुमसे जिक्र भी नहीं किया। शरद का आधे से अधिक काम खुद करता हूँ पर कुमुद के कारण उस पर बल नहीं पड़ने देता। दुनिया ठीक कहती है 'नेकी का फल बदी।'

रमा से अधिक देर चुप न रहा गया। विनोद अपनी बात पूरी भी न कर पायें कि वह बोल उठी "नेकी का न नाम लो। तुम्हारी नेकी मैं खूब जानती हूँ। जिसको ठगना होता है, जिसका गला घोंटना होता है, उसके साथ ऐसी ही नेकी करनी पड़ती है। कुमुद और शरद की प्रेम

देखते रहे और लीला चुप चाप पेट में डालते रहे। बड़े नेक थे तो मुझसे भी तो कभी जिक्र करते या पर्दा ही खुटक देते। बड़े पढ़े-लिखे बनेहो, मेरी लड़की को मेम बनाना चाहते हो। अपने होती तब यह शौक पूरा कर लेते। तुम्हें दोष नहीं है सब तुम्हारी मालकिन को। पूरी चुड़ैल है। घर का धुँआँ देख कर रहेगी। जाने किस बड़े घर की बेटी है। न जाति का पता न पाँति का। मैं तो उसका छुआ पानी भी नहीं पीती। तुम भले उसके तलवे जीभ से चाटो। जितना पानी वह पिलाये पियो। उसीके कुलक्षण हैं कुमुद ने सीख लिये। मेरे भी मुंह लगने लगी है नहीं तो कभी जीभ न हिलाती थी।

विनोद अपना सा मुँह लिये चले गये। दिनेश बोले "आज तुम कैसी बात कर रही हो। कुछ नशा तो नहीं कर लिया। अफीम तो नही खाली। कहाँ ऐसी खुशी से शादी करनी थी कहाँ तुमने कलह का बीज बो दिया। अपढ़ आदमी कुछ नहीं ? तुमने सब का दिल खट्टा कर दिया अब शादी कैसे सुख पूर्वक हो सकेगी। यह शरद कौन है ? कहाँ से आन मरा है ? यदि कुमुद उसे ही चाहती है तो हानि ही क्या है, उसीके साथ शादी कर दी जावे। ज़माना बदल गया है। पढ़ी लिखी लड़कियों को जबरन किसी के गले मढ़ना वाज़िब नहीं। कमला बाबू से सम्बन्ध करने में तो हम लुट जायेंगे। घर का टाट उलट जायगा। मेरी भी राय है यदि कुमुद शरद को चाहती है तो उसीका मन रक्खा जाय।

"तुम भी ऐसा कहने लगे" रमा क्रोध से आँखे निकाल कर बोली। तुम्हें भी लड़की प्यारी नहीं। रुपया का मुँह देखते हो। विनोद की तरफ ही झुकते हो। तुम्हारा सबका एक षड़यंत्र है। मेरी लड़की को बहा देना चाहते हो। अच्छा है बहा दो। जाती हूँ कुँए में गिर कर अभी प्राण दिये देती हूँ। न आँख से देखूँगी न दुख होगा।

यों कहते हुए जोर से रोती हुई रमा कुँए की ओर बढ़ी। दिनेश ने दौड़ कर उसका हाथ पकड़ा। फिर सब लोग जुड़ आये। सबने समझाया और वचन दिये कि माँ जी, सब तुम्हारे ही मन का होगा। तब वह मानी।

बाबू यद्यपि इन्ट्रेंस पास न कर सका था, परन्तु सिनेमा देखते देखते, बाजार की सड़कों पर आवारा घूमते घूमते, सभी टाइप के मनुष्यों से मिलते मिलाते उसका व्यावहारिक ज्ञान बहुत बढ़ गया था। वह किसी भी विद्वान से बात करते न झेंपता था। डिगरी होल्डर्स को भी वह अपने सामने नाचीज़ समझता था। उसको घमंड था कि जिसके दिल में अरमान हो मुझसे आकर अंग्रेजी में बात कर ले। उसने स्थानीय पुस्तकालय की सभी किताबें, पढ़ी नहीं तो देख अवश्य डाली थीं। लाईब्रेरियन तो उसके मारे परेशान रहता था। छुट्टी के दिन भी उसे घर से घेर लाता और किताब इश्यू कराता। कमला बाबू का दबाव था। बेचारे को किताबें इश्यू करनी पड़ती।

बाबू के घर में भी खासी लाइब्रेरी थी। जिल्दें की जिल्दें अलमारियों में भरी पड़ी थीं। उसकी चारपाई पर भी चारो ओर किताबें बिखरी पड़ी रहतीं। कोई भी ऐसा विषय और कोई भी आथर न बचा था जिसकी उसने किताबें न मँगाकर रक्खी हों। मोटरों के मेकर्स, सिनेमा के स्टार्स, मरकेन्डाइज के डीलर्स इत्यादि सभी की नामावली उसकी जबान पर रहती। लोग यद्यपि उसे मनमें निरा काठ का उल्लू समझते तब भी उसे ह्यूमर करने के लिये, उसकी प्रशंसा के पुल बाँध देते। कहते "बाबू! जीनियस हो जीनियस। भला नान मेट्रीकुलेटस में भी कहाँ इतनी तमीज़ होती है। किसी बड़े शहर में पैदा हुए होते तो तुम्हारे जौहर खिलते। बड़े बड़े बी० ए० एम० ए० देखे। उनसे एक भी जुमला सही बोलते बनता है न लिखते। न जाने कैसे डिगरियाँ ले लेते हैं। बाबू! क्या तुम नहीं कोई डिगरी ले ले सकते थे? कोशिश क्यों नहीं की। डिगरी लेने में जरा अच्छा रहता है। मार्किट वेल्यू बढ़ जाती है। बी० ए० एम० ए० से तुम कम नहीं पर और सोने में सुगन्ध हो जाती। बाबू बड़े घमण्ड से कहता "जब चाहूँ डिगरी ले लूँ। बाँयें हाथ का खेल है। कोशिश ही नहीं की।" ऐसा कह

शीघ्र ही वह बात टालने के लिये दूसरा विषय छेड़ देता। सिनेमा की बात करने लगता या मोटरों की, या सिगरेट निकाल कर पिलाने लगता। मन ही मन डरता कि कहीं कोई मेट्रिक की परीक्षा की बात न छेड़ दे जिसमें वह तीन बार फेल हो चुका था और उसके जीनियस होने में बट्टा लग जाय। लोग जानते हुए भी इस अप्रिय प्रसंग को न छेड़ते। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो मुफ्त में सिग्रेट ही छुला दे।

बाबू को जब से यह पता पड़ गया था कि उसकी शादी बी० ए० पास लड़की के साथ हो रही है तब से उसका घमण्ड और भी अधिक बढ़ गया था। वास्तव में वह अपने को बी·ए· से श्रेष्ठ समझने लगा था। मन में तर्क करता "यदि मैं बी० ए० से अधिक योग्यता न रखता होता तो कौन ईडियट अपनी बी० ए० पास पास लड़की मेरे गले बाँध देता। ऐसा सोच कर वह इतना प्रसन्न रहता मानो बी० ए० पास लड़की नहीं बी० ए० की डिगरी ही मिल रही हो। पर कभी-कभी यह प्रसन्नता चिन्ता में भी परिणत हो जाती थी। सोचने लगता था 'ऐसा न हो बीबी के सामने मुँह की खाना पड़े।' उसकी योग्यता का पर्दा फाश हो जाय। लज्जित हो घर छोड़ कर भागना पड़े। बीबी उस पर रोब जमा ले। उसे अपना गुलाभ बना ले। उसके स्लिपर्स में पालिश करना पड़े, उसे पोशाक पहिराना पड़े। बहुत सी पढ़ी लिखी बीबीयों का वह हाल भी पढ़ सुन चुका था। सिनेमा में भी कई एक का रहस्य देख चुका था। मूर्ख पतियों का वह कैसा बुरा हाल करती हैं उससे छिपा नहीं था। यदि बीबी मूर्ख हो तो आदमी तो निभा ले जाता है और यदि कहीं दुर्भाग्य वश पति मूर्ख हुआ तो उसकी तो मौत ही आ जाती है। कसाइनें बुरा हाल करती हैं। आज ही नहीं पहले से भी यही होता आता है। कालिदास का भी न यही हाल हुआ था।

बाबू एक दिन अपने कमरे में बैठा कुछ ऐसे ही विचारों में मस्त था। उसी समय उसका एक छोटा भाई, जो अपनी शैतानी में रिकार्ड बीट कर चुका था, आया और दरवाजे पर खड़ा होकर मुँह बनाता हुआ बोला "बीबी बी० ए० मियाँ मूसर—ट्रूथ आई टेल-इक्सक्यूजमी

सर" भाई के ये शब्द सुनते ही बाबू का पारा चढ़ गया। दौड़कर भाई के एक तमाचा कस दिया। बच्चा रोता हुआ माँ के पास गया। माँ झल्ला कर बोली। " मत रो, आ जाने दे अपनी भाभी को। उसी से बाबू की शिकायत करना। बी० ए० पास है, स्लीपरों से दुरुस्त करेगी। बच्चू की सब शान बिगड़ जायगी।"

बाबू ने ये शब्द सुन लिये। उसके हृदय में तीर सी लगी। फिर कमरे में रंजीदा सा आकर बैठ गया। माँ के शब्द अब भी उसके कानों में गूँज रहे थे। बार बार सोचता "क्या वास्तव में लड़की स्लीपर्स से मेरी मरम्मत करेगी। क्या इतनी बेहया होगी। शादी करूँ या न करूँ। न करने में भी तो मर्द के लिये चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है। फिर मेरे इन्कार करने से भी मानता कौन है। पिता जी तो शादी की मंजूरी दे ही चुके हैं। पर पिता जी का भी कुछ अजब हाल है। लड़की की सूरत देखी न शकल, शादी की मंजूरी दे दी। क्या उसको बी० ए० देख कर ही ललचा गये। रमेश मिले तो उससे फोटो मँगवाऊँ।

बाबू बैठा स.च ही रहा था कि रमेश भी आ गया। मेज पर हैट पटकते हु ए कुरसी पर बैठ गया और बोला "क्यों भाई आज घूमने नहीं निकले ! बड़ी देर से इन्तज़ार करता रहा।

"आने ही वाला था" बाबू ने सिगरेट देते हुए कहा। इतने में बाबू का छोटा भाई लड़कों की एक सेना लिये हुए फ़िर आन धमका ! सब ने एक कतार में खड़े हो रट लगाई।

"बीबी बी० ए० मीयाँ मूसर—द्रध आई टेल एक्सक्यूजमी सर।" बाबू पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया। रमेश जोरों से हँस पड़ा। बोला "यह शैतानी भी इसे किसने सिखाई ? अच्छी ट्रेनिङ्ग दी है।" लज्जित सी आँखें किये बाबू बोला "यह सब तुम्हारी ही करामात होगी। बड़े उस्ताद हो। ईश्वर करे तुम्हें एम० ए० पास बीबी मिले पर इस बदमाश को ऐसा न सिखलाया करो। बड़ा हरामी है पीटने से और रेवेजंफुल होता है।

रमेश हँसने लगा। बच्चे अपनी विजय से प्रसन्न हो हँसते और जोर जोर से गाते चले गये।

यकायक बाबू बोला "रमेश मैं शादी नहीं करूँगा। इसका उत्तरदायित्व तुम्हारे ऊपर है। देखो लड़के अभी से कैसी बदनामी करते फ़िरते हैं। सारे शहर में अब यह पोइट्री फैले बिना नहीं रुकती। बोले मैं किसे मुँह दिखलाऊँगा। सोचो तुम्हीं मेरी जगह पर होते तो क्या तुम्हें यह अच्छा मालूम होता। ऐसा भी कोई मजाक होता है। मज़ाक करना ही था तो तुम कर लेते। सिनेमा जैसा एडवरटाइज़मेन्ट क्यों कराते हो।

रमेश अपनी गलती पर पछताया और बोला "मैं सब को मना कर दूँगा। आप बेफिक्र रहिये शौक से शादी कीजिये। भाग्यवानों को ही बी० ए० पास बीबियाँ मिलती हैं। मुझे तो इन्ट्रेंस पास ही मिल जाय तो फ़क्र मनाऊँ।

बाबू बात काटते हुए बोला "यार उसका फोटो तो मगवा दो। उसकी सूरत शकल का भी तो कुछ पता चले। बी० ए० क्या वह तो हौआ हो रही है। उसने मेरे दिमाग की सभी शान्ति भंग कर दी है।

'मँगवा दूँगा' रमेश बोला और घूमने के लिये उठ खड़ा हुआ। बाबू भी खड़ा हो गया और दोनों घूमने चले गये।

६

वासुकी बहुत पढ़ी लिखी न थी पर रूपवती थी। लड़की भी बड़े घर की थी। शान शौकत से रहना, सभ्यता से बात करना, तथा अन्य ऊपरी बातें खूब अच्छी तरह से जानती थी। विनोद को उसने मुट्ठी में ले रक्खा था। जब से वह आई थी तभी से उसके गुलाम बन गये थे। जितना पानी वह पिलाती उतना ही पीते थे। उसकी बिना अनुमति के यहाँ की चीज़ वहाँ भी न रख सकते थे। घर में भी उसकी इज्जत थी।

दिनेश भी उसकी सेवा सुश्रूषा से प्रसन्न रहते। प्रायः उसकी प्रशंसा भी कर दिया करते थे। कुमुद तो उसे माँ से भी अधिक मानती और प्रेम करती थी। प्रायः उसी के पास रहती और अपने दिल की बात उससे कहती रहती। कभी-कभी उसे पढ़ा भी दिया करती। उपन्यास और कहानियाँ तो प्रायः नित्य ही पढ़कर उसे सुनाती। सीना-पिरोना भी उसके पास बैठकर साथ-साथ करती। साथ-साथ खाना खाती साथ-साथ घूमने फिरने जाती।

वासुकी यदि किसी की आँखों में खटकती थी तो रमा की। जाहर तो रमा उससे प्रेम करती, वक्त पर उसकी सेवा सुश्रूषा भी करती, साथ खाना खाने को बुलाती, मन्दिरों में दर्शनों के लिये ले जाती, उसके कहने पर साथ-साथ सिनेमा भी देखने चली जाती। पर हृदय में उसे देख-देख कर जलती रहती। जलने का कारण भी था। आते ही वासुकी ने घर के सभी खजाने की चाभी अपने हाथ में कर ली थी। घर की सोलह आने मालकिन वन गई थी। बिना उसके दिये किसी को एक पाई दवा-दारू के लिये भी न मिल सकती थी। रमा ने विश्वास में आकर अपना सारा जेवर वा रुपया भी उसी के हाथ में सौंप दिया था। आप कुड़की-सी कराकर बैठ रही थी। दिनेश भी अब कोरे फक्कड़ थे। उनके हाथ में भी कुछ नहीं था। पेट की रोटियों के लिये भी विनोद के मुहताज़ थे। रमा को वासुकी की यह मालकी न देखी जाती थी। मन ही मन आवाँसी सुलगती रहती पर झगड़ा होने के डर से कुछ कह न सकती। दिनेश से सब कुछ रोती पर बेचारे वह भी लाचार थे। यद्यपि विनोद उन्हें किसी प्रकार का दुःख न देता था, उनकी सभी जरूरतें पूरी करता रहता था, तब भी जब कभी उनकी सहज आशंका जाग उठती वे दुखी हो जाते थे। ऐसा दिन भी न जाता था कि रमा उनकी इस आशंका को जगा न दे। जैसे नदी अपना थोड़ा सा जल समुद्र को सुपुर्द कर सूख जाती है, उसी तरह विनोद की बड़ी कमाई देखकर दिनेश भी अपना सब उसी को सौंप, सूख रहे थे। जब वह अपना चार्ज विनोद को देने लगे थे, कुमुद की

शादी की चिन्ता न थी। कुमुद छोटी थी और विनोद पर उन्हें अविश्वास भी नहीं था।

रमा और दिनेश के हृदयों में जो कुभावना काम करती आ रही थी, वासुकी को अभी तक उसकी हवा न लगी थी। वह निष्कपट भाव से उन दोनों प्राणियों को दिलजान से चाहती और आव-भगत करती। मुँह से निकलते ही उनकी ख्वाहिश पूरी करती। रुपए पैसे का मुँह न देखती। उनकी ख्वाहिश पूरी करने में ही अपना तथा अपने पति का गौरव समझती। अपनी कमाई की सफलता मानती और एक सहज अभिमान से प्रसन्न रहती। कुमुद की शादी के भी बड़े बड़े मनसूबे बाँधती और रमा को सुनाती रहती। कुमुद की ऐसी शादी करूँगी, ऐसा दूँगी, बारात का ऐसा आदर सत्कार करूँगी। पर उस दिन का झगड़ा ज्यों ही उसके कान में पड़ा, उसका हृदय ऐसे फट गया जैसे खटाई पड़ने से दूध। दूसरा कोई कहता तो उसे संदेह करने की भी गुंजायश रहती। विनोद ही से उसने सब कोरा चिट्ठा सुना। उसके सब मनसूबे बदल गये। उसकी सब सद्भावनायें कुभावनाओं में परिणित हो गईं। क्रोध के मारे दाँत पीसने लगी। मौका ढूँढ़ने लगी कि रमा से खुलकर दो दो चोंचे हो जायें। पर पहले तो विनोद ही पर टूट पड़ी। बोली "क्यों तुम्हीं न माँ-बाप के बड़े सगे थे। देख लिया कितना कपट भरा है उनमें? रात न दिन उन्हीं की गुलामी किये मरे जाते थे। जो कुछ हो माँ बाप को पहले हो। उन्हीं के पीछे मिट गये। उसी साल जब तुम्हारे पिता बीमार पड़े हैं कितना रुपया खर्च नहीं पड़ा? है कुछ उसका अहसान। न रुपया खर्च करते तो चारपाई पर ही घुल घुल कर मर जाते। यह डाक्टरों की फीस दो, यह दवा मँगाओ, वह दवा मँगाओं इसीमें दिवाला निकल गया। तुम्हें बतलातीतो शायद तुम भी इतना रुपया खर्च न करते। पूरे चार हजार पर पानी पड़ गया था। उस रमा के भी जब पैर में फोड़ा हुआ है तब मैं ही कीड़े निकालती थी। काले मुँह की डायन को सब भूल गया। लड़की तोखुद हरजाई है उसे तो दोष नहीं देती, हमें है सीधा साधा पाया

दुनियां कितनी बेईमान और दगाबाज़ है। अब देखूँगी बेईमानों को। एक एक को अलहदा अलहदा समझूँगी। काले कवरे एक न बचेंगे।

विनोद को वासुकी की बातें अच्छी नहीं तो बुरी भी न लगीं। रमा का आक्षेप उनको भी असह्य हो गया था। पर तब भी माँ से कोई बदला लेने के लिये तैयार नहीं थे। घर का भंडाफोड़ भी उन्हें देखना स्वीकार नहीं था। "बोले बकने दो। जो जैसा होता है उसे ईश्वर वैसा फल भी देता है। हमारी करनी हमारे साथ है उनकी उनके। अपने ही माता पिता हैं भगवान उनका भला करे। चींटा मारा पानी निकला। उनसे वैर भजा कर हम क्या उगाह लेगें।" बोलना मत। कुमुद की शादी जैसी वे चाहें हो जाने दो। फिर वे कितने दिन के अतिथि हैं।

विनोद ने बहुत कुछ समझाया पर वासुकी की क्रोधाग्नि शान्त न हुई। वह तोप सी भरी बैठी ही रही।

१०

रमा के सामने अब कठिन प्रश्न था। तैश में आकर उस दिन कहते तो बहुत कुछ कह गई थी, परन्तु अब मन ही मन पश्चाताप कर रही थी। उसी दिन से न तो विनोद उसके पास आया था न वासुकी। कुमुद भी उससे सीधे न बोलती। दिनेश आते और उसीको दो चार भली बुरी कह जाते। शादी के दिन समीप आ रहे थे। हाथ में उसके कुछ था नहीं। घर वालों का किसी का सहयोय प्राप्त नहीं था। कभी सोचती कि विनोद को मनाऊँ, कभी सोचती वासुकी के पैरों पड़ूँ। अपनी गलती मान लूँ और किसी तरह अपना दबा हुआ हाथ उनके नीचे से निकाल लूँ। कभी सोचती क्यों किसी के सामने नीचा देखूँ। कुमुद भाड़ में न जाय। जो कुछ उसे करना हो करे। वह भी तो अपने कहे की नहीं जिसके लिये आकाश सिर पर ले रही हूँ। सबसे झगड़ा कर रही हूँ। निकल जाय, शरद के साथ ही निकल जाय, घर

का कलह तो बच जायगा। फिर सोचती, पर इसमें बदनामी कितनी बड़ी है। किसको मुँह दिखलाने लायक रहूँगी ? संसार ताने कसेगा। मज़ाक उड़ायेगा। मुँह पर मक्खी बैठेगी। नाक नीचे को आयेगी। कुल में दाग लगेगा। जीते जी मुझसे यह तो न देखा जायगा। फिर लगी हुई शादी कैसे उचटा दूँ। कुमुद की अकल तो भांग पी गई है। क्या बाबू जैसा लड़का उसे कहीं ढूँढ़ने पर भी मिलेगा। शरद तो उस पर निछावर है। कुमुद पर अभी जवानी का भूत चढ़ा है। उसकी आँखें बन्द हैं। कहीं ऐसे रमते योगियों से भी विवाह शादी की जाती है। शरद का कुछ ठिकाना भी है आज यहाँ कल वहाँ। कुमुद आखिर अपनी ही आत्मा तो है ! कैसे उसे देखते हुए भाड़ में कूद जाने दूँ। जैसे हो शादी करूँगी।

प्रश्न है रुपये का। वासुकी से अब रुपया मिलने का नहीं। न विनोद को भी अब पिघलना है। विनोद ने सब हाल वासुकी से कह ही दिया होगा। तोप सी भरी बैठी होगी। शैतान की खाला को मौत भी नहीं आती। मौत तो दूर कभी बीमार भी नहीं पड़ती कि आँखों को उसे घुलते देख कुछ तसल्ली हो। राक्षसी ने न जाने विनोद पर कौन सा जादू फेरा है कि सोलहो आने उसीका गुलाम है। जिन माँ-बाप ने पैदा किया है, पाल पोष कर बड़ा किया है, उन्हें भी कुछ नहीं समझता। अपनी गरज पड़े सौत के घर भी जाना पड़ता है। परन्तु वासुकी के पास जाना तो बेकार ही होगा। सौत चाहे पिघल आवे पर वासुकी पिघलने की नहीं।

हाँ रुपया मिलने का एक उपाय है। शारद के कैश बाक्स में भी हजारों का हिसाब रहता है। रोजगार तो सब उसी के हाथ में है। बीमें पर बीमें भेजता रहता और लेता रहता है। किसी प्रकार उसके कैश बाक्स की चाबी मिल जाय तो सब बन जाय। शरद निश्चय जेल जायगा और कुमुद के दिल में उसके लिये जो हवस भरी है वह भी निकल जायगी। एक ही पत्थर से दो चिड़ियाँ मरेंगी। पर चाबी कहाँ मिले ! काम तो बहुत आसान है। जाहरा कोई

कठिनाई नहीं। हाँ चाबियों का गुच्छा एक कुमुद के पास है सम्भव है उसमें से कोई चाबी शरद के कैश के बाक्स में लग जाय।

विचार उठते ही, उतावली सी, रमा दौड़ी हुई कुमुद के पास गई। कुमुद अपने कमरे में अकेली बैठी हुई अपने भाग्य पर रो रही थी। संसार में अब उसका कोई कहीं नहीं था। भाई और भाभी भी अब उससे सीधे न बोलते थे। माँ उसकी शत्रु थी ही। पिता जी का कुछ विचित्र ही हाल था उन्हें किसी बात में विशेष दिलचस्पी ही न थी। जब संसार विमुख हो जाता है तब मौत भी साथ नहीं देती। परमात्मा भी संसार के साथ सहयोग करता है। अब यदि उसके सामने कोई अपना हितू था तो शरद। उसके साथ ही भाग निकलना एकमात्र उपाय था। हर एक पहलू से इस बात की परीक्षा करती हुई अपना समय बिताती। शरद को पत्र लिखती, पर भेज न सकती! बात करने का मौका ढूढ़ती पर कोई नजर न आता! बात खुल गई थी और लोग उसे विशेष तीक्ष्ण नजरों से देखने लगे थे। शरद भी कुछ विशेष सतर्क रहने लगा था।

रमा धँसती हुई उसके कमरे में चली आई। सहसा उसे रोता हुआ देख कर बोली "बेटा क्यों रोती है? क्या कुछ तबियत नासाज़ है तो डाक्टर को बुला दूँ। कुमुद के हृदय में माँ की बात बाण सी लगी। क्रोध से आपे से बाहर बोली "क्यों जले पर नमक छिड़कने के लिये आ गई। डाक्टर को नहीं, बस का हो तो मौत को बुला दो। "तुमने मुझे कहीं मुँह दिखलाने लायक भी नहीं रक्खा।" जाओ तुम मेरी माता नहीं दुश्मन हो।

कुमुद के सिर पर हाथ फेरती हुई रमा फिर बड़े प्रेम से बोली "बेटी तू अभी नादान है। पढ़ी लिखी अवश्य है पर तुझे अभी संसार का अनुभव नहीं! तू अपना और पराया भी नहीं समझती माँ को दुश्मन कहती है? भाई और भाभी के वरगलाने में लगी हुई है। वे तो तुझे मिटाना चाहते हैं। अपना रुपया बचाना चाहते हैं। तू भी सोच, कहीं रमते योगियों से प्रेम करना होता है। शरद का कुछ ठिकाना

मी है। न मालूम शादी करके तुझे कहाँ बेच आयेगा। तू समझती है वह तुझे प्रेम करता है पर वह जिससे प्रेम करता है मैं जानती हूँ। कह तो तुझसे कह दूँ। वह विमला "जानती है अब क्यों घर नहीं आती ?

कुमुद के दिल में, रमा की बात सुनकर एक पेंच और पड़ गया। रमा की बात कुछ जँचती हुई सी मालूम हुई। पर इतना समय कहाँ था कि उसकी तर्क सहित विवेचना कर सके। उपेक्षा भाव प्रकट करती हुई बोली "मुझे क्या पड़ी है शरद से और क्या विमला से। भाड़ में न जावे ! संसार है जिसके जो मन में आवे करे।"

रमा इतनी भोली नहीं थी कि कुमुद के इन शब्दों को सही मान लेती। पर अपनी बात पर आने के लिये विषय को बदलती हुई बोली "कुमुद मैंने पहले तुझे नहीं समझा था। जैसा तू पढ़ी लिखी है वैसी समझदार भी। ऐसे ही ख्याल रखना बेटी। किसी ठग के वरगलाने में न आना। पढ़ना लिखना अपनी हिफाजत के लिये ही होता है। जैसी बड़े घर की बेटी है वैसी बड़ी चाल चलना। हाँ, थोड़ी देर के लिये अपनी चाबियों का गुच्छा तो देदे। अपना एक बाक्स खोलना है।

कुमुद ने चाबियाँ दे दीं। रमा चाबियों की जाँच करती हुई शरद के आफिस की अ.र बढ़ी। अ।फिस दूर नहीं था। दो कमरे लाँघ कर बाहर की ओर था। रात हो चुकी थी। बिजली जल चुकी थी। चारों तरफ सन्नाटा था। आफिस बन्द था। पहरे वाला कहीं दूर बैठा किसी से गप हाँक रहा था। चोर डाकू की शंका या संभावना ही किसे थी ? पहरे वाला तो केवल खेत का विजूखा था।

रमा आगे बढ़ी, पर उसके पैर काँपने लगे। इधर उधर देखने लगी। किसी की छाया पड़ती हुई दिखलाई पड़ी। समझी कोई आदमी होगा। उसके निकल जाने के लिये रुक गई। थोड़ी देर में मालूम हुआ कुत्ता है। फिर साहस को समेट कर आगे बढ़ी। आफिस के दरवाजे तक पहुँच गई। इतने में सड़क पर किसी के आने की आवाज मालूम हुई। मालूम हुआ शरद आ रहा है। फिर लौटी। भय का भूत वह भी

निकल गया। इस बार वह बाजी मार ले गई। आफिस का ताला खोल भीतर घुस गई। भाग्यवश शरद उस दिन अपने बाक्स का ताला खुला ही छोड़ गया था। रमा ने शीघ्रता से उसमें से जितना जो कुछ था अपने अंचल में भरा, ताला दबाया और बाहर निकल चली। पर बाहर आते ही उसे दरवाजे पर कोई खड़ा हुआ दिखलाई पड़ा। उसका सीना धड़कने लगा। शरीर प ीने पसीने हो गया। पैरों तले से पृथ्वी खिसकती हुई सी मालूम पड़ी। काँपती हुई आवाज में बोली—"कौन"?

कुमुद ने रमा को चाभी तो दे दी थी, पर उसे कुछ संदेह हो गया था। रमा क्या खोलती है यह देखने को वह पीछे पीछे चली आई थी। फिर रमा घर के भीतर की ओर न बढ़ कर बाहर की ओर चली थी, इस कारण से कुमुद का संदेह अ र भी बढ़ गया था। रमा की यह काली करतूत देख कर घृणा और क्रोध से ऐंठती हुई सी जबान से बोली—"क्या कर रही हो माँजी ?"

कुमुद की आवाज पहिचान कर रमा के जी में जी आया। बोली—"कुछ नहीं बेटा, यह सब तेरे ही लिये कर रही हूँ। किसी से कहना नहीं।"

"मैं तो कह दूँगी, तुम ऐसा करती क्यों हो, तुम्हें बुढ़ापे में यह क्या सूझा है।" कुमुद ने कहा।

"तू कह देगी तो तेरी कसम करके कहती हूँ, फौरन कुएँ में कूद पड़ूँगी। समझती है, रहूँगी मैं किसी को मुँह दिखलाने लायक।" बोल कहेगी तो नहीं। इस बूढ़ी बछिया की हत्या लेना हो। अपनी बदनामी करनी हो तो कहना। बार बार कहती हूँ, देख, कहना नहीं। तेरी माँ हूँ! दुश्मन नहीं। तेरे ही लिये यह पाप सिर पर ले रही हूँ। बुढ़ापे में परलोक बिगाड़ रही हूँ! कहना नहीं।

ऐसा कहती हुई रमा अपनी विजय से प्रसन्न भीतर चली गई।

११

शरद् दस बजे सबेरे अपना दफ्तर खोलता था। वही समय पोस्ट आफिस खुलने का भी था। जो मनिआर्डर, बीमा, तार उसे भेजना होते थे पहले से बनाकर तैयार रखता था। डाकखाना खुला नहीं कि वह पहुँचा। उसका रोज का यही नियम था।

आज खाना खाकर ज्यों ही उसने आफिस जाने को कपड़े पहने और दरवाजे के बाहर पैर रक्खा, छींक हुई। वह, वैसे तो अन्धविश्वासों को मानता नहीं था, तब भी उनके मानने में कोई विशेष हानि भी नहीं समझता था। पाँच मिनट के लिये, छींक का दोष मिटाने की गरज से वह कुरसी पर बैठ गया। जेब से सिगरेट निकाली और पीने लगा। घड़ी देखी तो पाँच मिनट लेट हो चुका था। फिर उठा और ज्योंही दरवाजे पर आया एक काना मिला। मन में उसके एक धक्का सा लगा, पर इस बार उसने लौटना वाजिब न समझा। देर हो रही थी, यदि लौटता तो यों ही असगुन का फल मिला जाता था। डाकखाने को देर हो जाती और वहाँ भीड़ हो जाने का डर था, फिर उसे घंटों अपने काम के लिये इन्तजार करना होता। आगे बढ़ा! आगे बढ़ते ही एक काला कुत्ता रास्ता काट गया। सोचने लगा, आज अवश्य कुछ दुर्घटना होगी। सम्भव है नौकरी से जवाब मिल जाय, या घर से कोई बुरी खबर ही आ जाय। कुमुद के प्रेम की बात अब किसी से छिपी नहीं थी और प्रायः उँगलियाँ उठने लगी थी। लोग ताना कसते थे और उसे बनाते थे। विनोद का भी कुछ दिनों से उस से कुछ व्यवहार बदल गया था। वे प्रायः उसकी आलोचना करने लगे थे। आँख भी दिखाने लगे थे। हिसाब किताब भी खुद देखने और जाँचने लगे थे। घर से भी बहुत दिनों से दादू का कोई पत्र नहीं आया था। मर न गया हो?

इसी प्रकार के तर्क वितर्क करता हुआ आफिस पहुँचा। कुर्सी पर बैठकर पंखे को स्टार्ट किया। पसीना बिलमाया! फिर सिगरेट पी

और अपना बाक्स खोला। बाक्स खोलते ही बाईं आँख फड़की। अपने आप हृदय धड़कने लगा। देखा तो सभी बीमें गायब थे। दस हजार के बीमे तैयार करके रख गया था। शरीर में पसीना आ गया। मुँह पीला पड़ गया। असगुनों की याद आ गई। कुरसी पर बेहोश सा होकर लेट रहा जैसे पान लग गया हो। सोचने लगा क्या करूं। शोर करूँ तो भी कोई विश्वास न करेगा। ताले सब जहाँ के तहाँ लगे हैं। कहीं से सेंद हुई नहीं। पहरेवाले और चपरासियों पर संदेह भी करूँ पर लोग उन्हींका ही पक्ष लेंगे। जाने किसकी शैतानी है? किसने दुश्मनी भँजाई है। हर प्रकार से मैं ही फसूँगा। मेरा उत्तर-दायित्व है। पहले हथकड़ी मेरे ही हाथ पड़ेगी। बाप-दादों के नाम को बट्टा लगेगा। एम० ए० की डिगरी भी बदनाम होगी। जहाँ अभी एक दो उँगलियाँ उठतीं, केस चलते ही हजार उँगलिया उठेंगी। लोग न कहने की बात भी कहने लगेंगे। उन्हें मौका मिल जायगा। दिलों में छिपी हुई हसद रखने वाले तो फूले न समायेंगे। उन्हें तो बिना ताज का राज ही मिल जायगा। हसद करने वाले एक दो नहीं कई हैं। कई कुमुद को देख-देखकर आंहें भरते हैं और मेरे भाग्य की सराहना करते हैं। यह चोरी बाहर से नहीं भीतर से ही हुई है। सम्भव है विनोद बाबू का ही षड़यन्त्र हो। इसी बहाने मुझे जेल में डलवा कर सड़ाना चाहते हों ताकि मेरा और कुमुद का प्रेम फलीभूत न हो सके। परदेश है। कोई गवाह साक्ष्य देने वाला भी नहीं। लोग विनोद की तरफ बोलेंगे कि मेरी। मुझसे स्वार्थ साधन ही किसका होता है? वे लक्ष्मी पुत्र हैं, बिना स्वार्थ के भी लोग उन्हीं की तरफ आकृष्ट होंगे। उन्हीं की ठकुरसुहाती कहेंगे। भाग चलने के सिवा अब दूसरा उपाय ही कौन है? सचाई का जमाना नहीं। झूठ और फरेब की ही आज कल फतेहयाबी है। सीधे सच्चे लोग तो आजकल इडियट समझे जाते हैं। विनोद बहुत करेंगे वारण्ट कट-वायेंगे। कुछ समय लगेगा। शीघ्र ही तो पकड़ न जाऊँगा। हुलिया तबदील कर लूँगा! देश विदेश में विचरूँगा। पिताजी को रुपया

भेजता रहूँगा। उन्हें भी कोई शक सन्देह नहीं होगा। पर कुमुद कहाँ मिलेगी, उसे भी भगा ले चलूँ! पर सम्भव कहाँ? विनोद बाबू आफिस आने ही वाले होंगे। यहाँ रहने पर भी अब कुमुद नहीं मिलती तो कुमुद मुझसे प्रेम करती है तो स्वर्ग में भी मुझे ढूँढ़ लेगी।

कुछ देर बाद उसकी समाधि खुली। फिर मन भरने के लिये उसने कागज पत्र उलटना शुरू किये। कहीं लिफाफे किसी दूसरी फाइल में न रख गया हूँ। किसी रेक में न रक्खे रह गये हों पर कहीं भी न दिखे। एक दूसरे बाक्स में एक लिफाफा और पड़ा था। उसमें एक हज़ार के नोट्स थे। उनका भी बीमा होना था। मन ही मन बोला "चोर तो बना ही हूँ, अब इसे ही क्यों छोड़ जाऊँ। जब चोरी ही करना है तो डरते डरते क्यों करूँ। उस लिफाफे को भी उसने जेब में डाल लिया और चलता हुआ। पहरेवाले और चपरासियों से कह गया, पोस्ट आफ़िस जाता हूँ। किसी को कुछ संदेह भी न हुआ।

विनोद आज दो बजे के करीब आफिस आये! आते ही उन्होंने चपरासियों से पूछा "क्यों आज शरद कहाँ है पोस्ट आफिस से क्या अभी तक नहीं लौटा।

चपरासी बोला "नहीं मालिक।" आज उनकी कुछ चेष्टा भी बिगड़ी हुई सी थी। रोज के समान खुश नहीं थे। न आज किसी से बात की है न बोले हैं। तब के गये अभी तक आये भी नहीं।

"जा देख तो आ।" विनोद ने कहा। कल ग्यारह हजार रुपया बीमा करने को दिया था। कहीं लेकर फरार न हो गया हो, स्टेशन की तरफ जाता हुआ दिखाई पड़ा था।

चपरासी बोला "मालिक तब तो मुझे जरूर कुछ दाल में काला मालूम पड़ता है। अच्छी खासी रकम हाथ में थी। तबियत तो है डुलआई होगी। आप और भी, हुजूर! कसूर माफ हो परदेशियों को दामाद बना लेते हैं। सब घर गृहस्थी उन्हींको सौंप देते हैं। फिर कभी लुक छिप कर जाँच पड़ताल भी नहीं करते, शरद तो सरकार का सोलह आना जमाई बन गया था। घर बाहर एक किये

था। आप को निरा बछिया का ताऊ समझता था। मुझे तो वह फूटी आँखों न देख सकता था। अब उसके सब रहस्य खुलेंगे।

ऐसा कहता हुआ चपरासी मरे मरे पैर रखता हुआ आफिस से शरद को देखने के लिये निकला। पोस्टआफिस एक मील दूर था। वहाँ जाता ही कौन था। पास ही एक दूकान में बैठकर चिलम पीने लगा। चिलम पीकर जमीन पर लेट रहा। चपरासियों को नींद तो दहेज में मिलती है। लेटते ही नींद आ गई। जागा तब चार बज चुके थे। लौटकर आँखें मलता हुआ फिर विनोद बाबू के पास पहुँचा। बोला—"क्या सरकार अभी तक नहीं आया क्लर्क बाबू?" मैं तो डाक घर, स्टेशन सब एक कर आया। कहीं नहीं दिखा।

अब विनोद का सन्देह और भी जड़ पकड़ गया। खुद साइकिल उठाई और डाकखाने दौड़े। मालूम हुआ, वहाँ शरद नहीं पहुँचा, न जहाँ को बीमा होने थे, न वे भी हुए हैं टेशन पर जाते तो पता ही क्या पड़ता। उन्हें विश्वास हो गया कि शरद भाग गया। पर तब भी एका-एक पुलिस में रिपोर्ट न कर सके। लौट कर फिर घर आए। पूछा कुमुद कहाँ है। संदेह था कहीं कुमुद न साथ भाग गई हो। पर कुमुद घर में थी। ईश्वर को धन्यवाद दिया। रात हो गई, शरद न आया! कई बार उसके क्वार्टर में दिखवाया पर ताले ने ही जवाब दिया। पर अब भी किसी से कुछ कह न सके। सिनेमा चले गये। वहाँ भी शरद न दिखा सिनेमा से रात के दो बजे आये। फिर शरद को तलाशा। जब रहा नगया तब वासुकी से सब कह सुनाया। वासुकी को नींद उड़ गई। बोली इसमें सब कुमुद और रमा का हाथ होगा। ग्यारा हजार रुपया थोड़ा नहीं होता। अपना सब रोजगार ही चौपट हो जायेगा। इतनी बड़ी चोट सहना अभी हमारी हैसियत की बात नहीं। आप भी फिर ऐसे भोले भाले बन जाते हैं कि आपको किसी पर शकसंदेह होता ही नहीं परदेशियों के हाथ में ही घर सौंप देते हैं। मैं तो कहूँगी शरद ने अच्छा किया। आपकी आँखें तो खुल जावेंगी। आप ऐसे लोग ऐसे ही न ठगाये जावें तो दुनिया ही कैसे चले। ठगों और धूर्तों के लिये

आप ही लोग तो कमाते हैं। मैं कहती कि मुझे एक हार बनवा दो तो इतनी बड़ी रकम लगाते माता मरती। अब भले खून का घूँट पीकर रह जाओगे।

"रह कैसे जाऊँगा" विनोद क्रोध से बोले "रुपया तो शरदके पीरों से वसूल कर लूँगा। कल ही वारंट कटाऊँगा। बेटा जहाँ होंगे पकड़ आयेंगे। रुपया देंगे और जेल भोगें। मैं न समझता था कि एक पढ़ा लिखा देखने में शरीफ आदमी भी ऐसा दगाबाज निकलेगा।

यों ही बात करते-करते सवेरे के वक्त दोनों आदमी झँप गये।

१२

कुमुद के फोटो के लिये कमलाकान्त का पत्र आया। दिनेश पत्र को ले रमा के पास आये। पत्र देते हुए बोले "लो कमला बाबू ने कुमुद का फोटो मँगाया है। उसका कोई फोटो हो तो दो, भेज दूँ।" रमा ने कहा फोटो मेरे पास कहाँ? उसीके पास होगा, पर वह देगी कैसे। देखो उसके कमरे में होंगे तो एक निकाल लाऊँगी। हाँ, तुमने रुपये का भी कुछ इन्तजाम किया? विनोद के विश्वास पर मत रहना! वहशायद ही रुपया दे।

आँखें निकालते हुए दिनेश बोले—"तो मैं कहाँ से इन्तजाम करूँ। मैं नौकर न चाकर। और रुपया भी कौन थोड़ा लगना है। हजारों का वारा न्यारा होना है। मेरे बस का नहीं। तुम्हीं विनोद को मनाओ पथाओ। तुम्हीं ने उसे नाराज किया है। उसीसे रुपया मिल सकता है उधार भी मैं किसी से मागूँ तो क्या बहाना बनाऊँगा। विनोद की बदनामी होगी घर की बात बाहर होगी। मैंने तो कहा था विनोद के मन की ही शादी होने दो, पर जैसी बला सिर ली है उसे सुलझाओ।"

दिनेश की बात सुनते ही रमा की तेवरी बदल गई। क्रोध में आकर बोली। "लो तुम मेरी धोती पहिन कर घर में बैठ रहो, फिर

देखो मैं सब किये लेती हूँ या नहीं। मियाँ मर्द ही नहीं। भगवान ने क्यों तुम्हें आदमी बनाया था। मेरा भी कैसा भाग्य फूटा, जो ऐसे मरे मुर्दा आदमी से भांवरें पड़ी। घर में बैठे-बैठे ही सारी जिन्दगी गुजार दी। मैंने तो तुम्हारा कोई साका न जाना। जब से विनोद ने होश सम्हाला तब से है आराम से टुकड़े तोड़ने को मिले। लड़की की शादी नहीं की होती। कहीं दो चार हो जातीं तो आटा-दाल का भाव मालूम होता। मुझे नहीं किसी के हाथ-पैर पड़ना, पड़ो तुम्हीं चाहे न पड़ो। मेरी अकेली की लड़की नहीं है। कल ही लगन भेजना है, हजार दो हजार भेजोगे कि नहीं?

'इसी हजार दो हजार के मारे तो मैंने कहा था' दिनेश बोला कि कुमुद की नये ढंग की शादी हो जाने दो। पर तब एक न सुनी। विनोद की कमाई में मेरा कोई हक नहीं न मैं उससे रुपया माँग सकता हूँ। यही बहुत है कि वह हम दोनों को रोटियाँ देता जाता है। सब काम सरलता से हो जाना था पर तुम्हारी जीभ आग लगाने लायक है। बीछी कैसा डंक मारती हो। जाने कौन पुण्य किये थे कि तुम्हारा साथ बदा था। तुम्हारे मारे कभी चैन से रोटी खाने को न मिली। खोपड़ी खा डाली और अब भी नहीं छोड़ती, कि बुढ़ापे में भी तो चैन से गुजरे।

रमा शान्त न हुई, दुगुने तैश से बोली। खोपड़ी खा डाली, तो क्यों खोपड़ी पर बैठाले रहे। मेरा काला मुँह क्यों न कर दिया। दूसरी शादी कर लेते। जो तुम्हारे रात दिन पैर दबाती उसे रख लेते। जब कभी भी काम के लिये कहा तभी खोपड़ी चाटना हो गया। इन बन्दर घुड़कियों से मैं दबने वाली नहीं। घर ढूँढ़ दिया वर ढूँढ़ दिया, अब रुपया मैं कहाँ से लादूँ, मेरा कोई दूसरा आशिक तो बैठा नहीं।

"क्यों नहीं! भाई से मँगालो" दिनेश ने हँसकर कहा? रमा बोली "उनका क्या मजाक उड़ाते हो मँगाके ही दिखला दूँगी।"

स्त्री पुरुष में यह झगड़ा चल ही रहा था कि बीच में विनोद आ पहुँचे। बोले "पिताजी सुना। वह शरद ग्यारह हजार रुपया खाकर

भाग गया। रमा मुँह बनाती हुई बोली "ग्यारह हजार! सब झूठ! विनोद, मैं सब समझती हूँ। कुमुद की शादी को रुपया न देना पड़े उसके लिये है यह बहाना। बेचारे शरद को बरखास्त कर दिया है और यह रचना लेकर हमें समझाने आगये हो।"

दिनेश भी सहसा विश्वास न कर सके। बोले ग्यारह हजार कैसे खा जायगा। कुछ समझ में नहीं आता? क्या भाग गया। तुम क्या करते रहे।

विनोद के पीछे पीछे बात सुनने को बासुकी भी चली आई थी। रमा की बात सुनते ही उसके हृदय में आग लग गई। दरवाजे की ओट में खड़ी खड़ी बोली "माँ जी कुमुद का हमने कौन कर्ज काढ़ा था, यह तो हमारे मन की बात है, शादी को रुपया दें या न दें। अगर बहाना है तो बहाना ही सही। कर लो अपनी लड़की की शादी। क्या हमारे लिये लड़की पैदा की थी। तुम्हारी ही लड़की के पीछे यह नुकसान उठाना पड़ा। हरजाई न जाने कहाँ के गुंडे को ले आई थी।

रमा क्रोध में भरकर बोली "उसी गुंडे पर तो तू जान देती थी। अभी भैया को सब बता दूँ तो तेरा मुँह न देखेगा। मौज आप करती थी, बदनाम करती थी कुमुद को। न मुझसे कहला। चुपचाप यहाँ से चली जा।

शोर सुनकर कुमुद भी आ गई और एक तरफ खड़ी होकर सब चुपचाप सुनने लगी।

वासुकी अब बड़े चक्कर में पड़ी! मन ही मन रमा को कोसती हुई बोली "माँ जी गोमारी हत्या न लगाओ। घर का सर्वनाश न देखने को फिरो! अब ऐसी बात कहोगी तो तुम्हारे ऊपर प्राण दे दूँगी।"

रमा बोली "प्राण देना है तो अभी देदे। शैतान की खाला तुझ से डरता कौन है? जब से तू आई तभी से घर का नाश मिटा दिया। अब मैं क्या मिटाऊँगी। मेरे लड़के को सीधा साधा पाकर बनाती है।"

वासुकी चुप न रह सकी "तुम्हारे लड़के दूध नहीं पीते। मेरी ब तुम्हारी चालों को खूब समझते हैं।"

"तभी हैं जो ग्यारह हजार के उल्लू बने" रमा ने कहा।

वासुकी बोली "उल्लू बनाया है तुमने। तुम्हारे ही पीछे मिट गये। सब कमाई तुम्हारे ही नीचे समा गई। दोनों आदमियों को सिर पर लादे जिन्दगी बीत गई, कुमुद को पढ़ाया लिखाया उसका फल यह निकला। तुम्हें दोष नहीं माँ जी! दोष है हमारे भाग्य को। खैर। ईश्वर सब देखने वाला है। दिन भर का भूला शाम को भी घर आ जाये तो भी भूला नहीं कहलाता। अब करलो कुमुद की शादी।

रमा बोली "शादी के लिये ही तो यह सब भूमिका बाँधी जा रही थी। यह चरित्र रचा जा रहा था। जिस दिन ग्यारह हजार चले जाते उस दिन दोनों आदमी नंगे नाचते। शादी की फिकर मत करो। मेरा भी भाई भतीजा अभी जीता है। एक लड़की की शादी कर ही देगा, रुपया के बिना न बैठी रहूँगी।"

झगड़ा बढ़ते देख दिनेश बोले "इन बातों में क्या रक्खा है? घर का भंडाफोड़ होगा, बदनामी होगी। हमारे एक ही लड़की है। किसी तरह उसके हाथ पीले करना ही हैं। शादी तुम दोनों को ही करना है। यह बुढ़िया तो पागल हो गई है। इसकी बुद्धि सठया गई है।"

"करा लेना शादी, इन चिकनी चुपड़ी बातों में अब वासुकी आने की नहीं। एक बार ठगाये सो ठगाये, दूसरा ठगाये सो छप्पूनाथ कहाये।" ऐसा कहती हुई वासुकी फनफनाती हुई चली गई।

विनोद बोले "ये औरतें तो घर का नाश मिटा देंगी। यहाँ की वहाँ, वहाँ की यहाँ करने के सिवा इनके काम ही क्या है। ये तो किसी की गर्दन न कटा दें तो भी थोड़ा। यह सब अशिक्षा का कारण हैं। कुमुद की शादी तो होवेगी ही, पर मार्ग में बाधा अवश्य बहुत बड़ी पड़ गई। ग्यारह हजार का घाटा थोड़ा नहीं, नहीं जानता था शरद ऐसा बेईमान निकलेगा।

रमा बोली "विनोद! बुढ़ापे में हमें न बनाओ। रात दिन तो

शरद के सिर पर सवार रहते थे। वह रुपया खाकर भाग कैसे गया। यह सब तुम्हारी चाल है। स्त्री की शिक्षा है! मैं तो पहले ही कह चुकी थी। स्त्री के कारण तुम भी नीम निबौरी हो गये हो।

"माँजी! तुमसे कोई नहीं पार पा सकता।" ऐसा कहता हुआ विनोद उठ गया। दिनेश भी उसके पीछे पीछे बात करते हुए चले गये।

कुमुद बोली "माँ जी क्यों घर का नाश मिटा रही हो। 'जिसका तुम्हें डर था वह तो भाग ही गया। जिसके गले मुझे बाँधना हो बाँध दो न। मैं तो सब कहे देती हूँ।"

रमा दाँत पीसते हुए बोली "मेरी हत्या लेना हो तो कह दे। अभी जाकर कुँए में कूद पड़ूँगी।"

—·—

१३

कमलाकान्त, बाबू की शादी कर, घर आगये। शादी बिना किसी झगड़ा फिसाद के होगई। पर उनके मनका मिला जुला कुछ नहीं। लड़की को देखकर अवश्य उन्हें संतोष हुआ। चारो तरफ कुमुद की प्रशंसा होने लगी। कुमुद की प्रशंसा को वे अपनी प्रशंसा समझते और मन ही मन प्रसन्न होते। कोई कहता मिला जुला कौन रक्खा रहना था, बहू तो मिल गई सोने की-सी मूर्ति। ऐसी बहू लाख रुपया खर्च करने पर भी न मिलती। जैसी सुन्दर है वैसी सुशिक्षित भी, सोने में सुगन्ध है। वास्तव में लड़का तो उसका निछावर है। कोई कहता, जब ईश्वर देता है तब इसी प्रकार देता है। लक्ष्मी में लक्ष्मी आती है। खासा दहेज मिल गया, दस पन्द्रह हजार से कम का न होगा, उस पर बहू तो साक्षात लक्ष्मी ही है। जैसी रूप की है वैसी गुणों की भी। बाबू के भाग्य खुल गये। कोई कहता, दहेज मिला तो सही पर कमला बाबू की हैसियत का नहीं है। कमला बाबू तो लड़की को देख कर ही गिर पड़े। कहीं दूसरी जगह शादी करते तो लाख दो लाख से कम का

न मिलता। शादी में कुछ जल्दी करदी, लड़का कौन अभी बुड्ढा हो गया था। अभी दो तीन साल और ठहर जाना था। कोई कहता कमला बाबू को कौन धन की भूख थी। जो कुछ मिला है उससे दुगना तो वे नाई कहरों में लुटा आये हैं। हाँ, लड़की में जरूर कोई नुक्स नहीं है, और वही तो अच्छी चाहिये थी जिसे जिन्दगी भर घर में रहना है। जिससे घर की रौनक बढ़ना है। धन दौलत तो हाथ की मैल है। कोई कहता लड़की की तकदीर फूट गई। ऐसी पढ़ी लिखी और सुन्दर लड़की को बिलकुल बे-दीन का लड़का मिला। कहाँ तो लड़की बी. ए. पास और कहाँ लड़का निरा काठ का उल्लू। बाप की क्या दोनों फूट गई थीं जो लड़की को बैल के गले बाँध दिया।

बाबू के कानों में भी ये शब्द सुनाई पड़ते। वह कभी कभी अपनी विजय समझ कर प्रसन्न भी होता और कभी कमी अपना अपमान समझ कर दुखी भी। कुमुद की प्रशंसा बढ़ते बढ़ते इतनी बढ़ गई कि वह उसे असह्य होगई। वह समझने लगा कि लोग कुमुद की प्रशंसा नहीं करते बल्कि मुझे चिढ़ाते हैं। कुमुद के बहाने ही मुझे भला बुरा कहते हैं। मुझे अपढ़ और मूर्ख साबित करना चाहते हैं। मियाँ ही की जूती से मियाँ ही का सिर तोड़ना चाहते हैं। किसी ने न तो उसको सार्टीफिकेटस् देखे हैं न डिपलोमा। न उससे बात की है न चीत। लगे हैं बे मतलब प्रशंसा के पुल बाँधने। मेरे सामने कुमुद क्या चीज़ हो सकती है? मैंने बड़े ग्रेजुएट्स को भी बिना किश्त के मात दिये हैं। फिर बेचारी कुमुद किस मूली कि जड़ है। युनिवर्सिटीज़ लड़कियों को योंही सनदें दे देती हैं। उनमें ऐजूकेशन बढ़ाने की गरज़ से उन्हें फेल तो कभी करती ही नहीं। फिर एक ही सेक्स की ठहरी न। गला तो घोंटती हैं लड़कों का। तब भी देखूँगा कुमुद कैसी बी. ए. पास है। पर यदि वह अंग्रेजी में बोली तब क्या करूँगा। बीस बिस्वा वह अपनी ल्याकत दिखलाने के लिये हाई इंगलिश बोलेगी। अगर न समझ पाया या जवाब न दे सका तब तो मेरी नाक ही कट जायगी। बीड़ी सिग्रेट तो पीती न होगी कि उसमें बहला लूँगा? मुकाबला है जरा

मुशकिल आदमियों से बात कर लेना बात दूसरी है। स्त्रियाँ बड़ी सेन्सीटिव होती हैं। बाल की खाल निकालती हैं। पुरुषों का मज़ाक उड़ाना तो उन्हें स्वभाव ही से प्रिय रहता है। कहीं नान्सेन्स, वल्गर, या ईडियट कह दिया तब क्या होगा? ऐसे शब्द तो मैंने पिता जी से भी कभी नहीं सुने? क्या उन्हें दर गुज़र कर जाऊँगा? नौसिखों को अपनी शान बघारने का बड़ा शौक होता है। मेरे पर पूरा रोब जमाने की कोशिश करेगी। यह तो सुन ही लिया होगा कि मैं बी. ए. पास नहीं, बी. ए. क्या मेट्रिक भी नहीं। निश्चय आड़े हाथों लेगी। क्या उसके पास ही न जाऊँ? क्या किसी प्रकार बी. ए. पास नहीं कर सकता? किसी का सार्टीफिकिट लेकर दिखला देता। पर बी. ए. पास लेडी को इस प्रकार धोखा देना कहाँ तक सम्भव है। सुना है जर्मनी में ऐसी मशीन निकली है कि एक ही साल में एम. ए. पास करा देती है। क्यों न एक साल के लिये वहीं चला जाऊँ? वहाँ डिगरियाँ भी तो मोल बिकती हैं। अगर मशीन की खबर झूठ भी हुः तो डिगरी मोल खरीद लाऊँगा, यही सबसे सीधा उपाय है। साल भर और कुमुद से न मिलूँ? समझ लूँ अभी शादी ही नहीं हुई।

बाबू इस निश्चय को पहुँचा ही था कि बाबू की फूफी आई। आज सुहाग-रात थी। बोली "बाबू भीतर चलो कुछ नेंग दस्तूर होना है। बाबू का छोटा भाई फूफी के साथ था। बोला "स्लीपरों से सिर पूजा जाना है मैंने भाभी से शिकायत करदी है। वह कहती थी 'आने दो उनकी कैसी मरम्मत करती हूँ।" फूफी बोली "तू बड़ा मूर्ख है रे! पहले से क्यों बतला दिया। भैया भीतर ही न जायेगा तो क्या करेगा। बाबू ज़ाहरा तो हँसने लगा पर मन ही मन रोने! बोला "क्या मेरा सिर फालतू है। मैं नहीं जाता।"

बच्चे ने हाथ पकड़ा और बाबू को घसीटता हुआ अन्दर ले गया। कुमुद को देखकर बोला "भाभी पकड़ो इन्हें! कहीं भाग न जाय। खूब स्लीपरों से मरम्मत करना ये मुझे मारा करते थे।" सब लोग हँसने लगे। बाबू को भी हँसी आई। बच्चा फिर नाच नाच कर

कहने लगा "बी बी. बी. ए. मीयाँ मूसर—ट्रूथ आई टेल इक्सक्युज मी सर" ! सुनते ही बाबू पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया। बच्चे पर ऐसा क्रोध आया कि पत्थर पर पटक दे। पर खून का घूँट पीकर रह गया। बच्चा बोला " बाबू साहब अब क्यों नहीं तमाचा मारते। तब तो बड़े शेर बने थे अब क्यों बिल्ली बन गये। अब मारो तमाचा तब जानूं। सब स्त्रियाँ इस अभिनय में आनन्द ले रही थी और हँस रही थीं। कोई कहती थी "किसी ने सिखलाया होगा। बड़ा शैतान है।" कोई कहता "बाबू इसी के काबिल है। थोड़ी अँग्रेजी पढ़ली थी तो बड़ी शान गाँठता था। अब सब शान भूल गई'। स्त्रियाँ हँसते-हँसते लोट-पोट हो गईं। कुमुद भी भीतर कमरे के खड़ी-खड़ी हँसदी। सबको हँसता देख बच्चा और भी जोर-जोर से अपनी पोयट्री गाने और नाचने लगा।

बाबू की सब शान बिगड़ गई। मुँह पीला पड़ गया। क्रोध के मारे आँखों में आँसू भी आगये। छिपाकर रूमाल से पोंछना चाहा पर सबने देख लिया। एक स्त्री बोलीं "देखो बेचारे को रो आया ! यह लड़का बड़ा शैतान है। उस स्त्री की सहानुभूति पा आँसू और भी वेग से बहने लगे। बाबू की माँ ने बच्चे को भगा दिया। बाबू को अब इतनी शर्म थी कि मुँह नहीं दिखलाया जाता था। आँसू न आते तो भी गनीमत थी। आँसुओं ने और उसे मज़ाक का पात्र बना दिया। अब कुमुद के सामने जाने का उसे और भी साहस न रहा। बाहर जाने का बहाना ढूँढ़ने लगा। जिस घर में उसकी ऐसी शान थी कि कोई नज़र उठा कर सामने देख नहीं सकता था उसीकी आज उस गधे की सी दशा हुई जिसने शेर का चमड़ा ओढ़ रक्खा था। औरतों ने ऐसा मज़ाक उड़ाया कि उससे ही अब ऊपर नज़र नहीं उठाई जाती थी। दायें बायें देखकर रह जाता था। कहीं से निकल भागने का रास्ता नज़र न आता था। कोई बहाना भी न मिलता था।

जब मनुष्य बिलकुल लाचार हो जाता है, ईश्वर भी उसकी सहायता करता है। भाग्यवश बाहर से रमेश की आवाज़ आई। डूबते

को तिनके का सहारा। "अभी आता हूँ" कहता हुआ बाबू बाहर निकल गया।

स्त्रियाँ प्रतीक्षा करते ही रह गईं। अब आता है, अब आता है। आठ बजे, दस बजे, बारह बजे, सारी रात गुज़र गई। बाबू न आया। रमेश घर ही में था।

सबको सन्देह हुआ। लोग ढूँढ़ने को निकले! पर कुछ पता न चला।

१४

बाबू घर से भाग कर बिना टिकट के रात की ट्रेन से बाम्बे पहुँचा। अब उसके सामने रुपए का प्रश्न था! घरसे एकाएक भाग खड़ा हुआ था! कुछ हाथ में ले न सका था। किसी से पैसा माँगने का साहस नहीं होता था। परदेश में पैसा देता ही कौन। सहसा एक बात उसे सूझ गई। शादी के अब भी वह कुछ बहुमूल्य जेवर पहने था। उन्हीं पर उसकी सुदृष्टि पड़ी। उन्हींको बेचा और पैसे हाथ में किये। जर्मनी जाने का विचार था। शान्ति का समय था। विदेशों को आने जाने में कोई विशेष बाधा नहीं पड़ती थी। पास पोर्ट मिल गया।

वह जर्मनी पहुँच गया। पर जर्मनी में जैसी मशीन उसने सुन रक्खी थी कोई ईजाद नहीं हुई थी। जिससे वह पूछता वही उसे उल्लू बनाता। डिगरियाँ भी जरमनी में मोल नहीं बिकती थी। और उन डिगरियों की कोई वक़्त भी नहीं थी। वे घर बैठे भी मँगाई जा सकती थीं। जर्मनी आकर उसे बड़ी निराशा हुई। अब खाली हाथ वापिस जाना भी आत्मघात करके मर जाने से भी बुरा था। कालेज में भरती हो आठ दस वर्ष गँवा देना उसके वस का नहीं था। आठ दस वर्ष में दुनिया ही पलट जाती, क्या विश्वास था। सहसा एक विचार और उसके दिमाग़ में उठा। क्यों न एक इंगलिश लेडी ले चलूं? बी० ए० की डिगरी से इंगलिश लेडी तो लाख

दर्जे अच्छी होगी। इंगलिश लेडी मिल जाना भी उतना कठिन नहीं जितना बी० ए० की डिगरी। लेडी को देखते ही कुमुद की सब शान मिट्टी में मिल जावेगी। लोगों की नजरों में भी मैं और ऊँचा उठ जाऊँगा। मेरी योग्यता फिर किसी से छिपी न रहेगी। पर इंगलिश लेडी इंगलैंड में ही अच्छी मिलेगी। इंगलैंड के एक मिस्टर ग्रे से उसका परिचय भी था। उसका पता भी उसे ज्ञात था। मिस्टर ग्रे कुछ दिन उसका टयूटर रहा था। जब वह इङ्गलैण्ड वापिस जाने लगा था बाबू से भी आने को कह गया था।

बाबू इङ्गलैण्ड पहुँचा। मिस्टर ग्रे लंडन में रहते थे। पता लगाते लगाते बाबू मिस्टर ग्रे के पास जा पहुँचा। ग्रे साहब ने उसे शीघ्र ही पहिचान लिया। बहुत खुश भी हुआ। मेम साहिबा भी बहुत खुश हुईं। बाबू को उन्हींके बँगले में ठहरने को जगह मिल गई। बाबू को भी यहाँ कुछ शान्ति मिली। नई आब हवा, नये नये नज्जारे, नये नये अनुभव उसे यहाँ प्राप्त होने लगे।

मिस्टर ग्रे के एक लड़की थी मिस जावरा। जावरा देखने सुनने में सुन्दर और बड़ी भोली भाली लड़की थी। यौवन की पहली सीढ़ी पर अभी उसने पैर ही रक्खा था। हिन्दुस्तान में रहते रहते, हिन्दुस्तानियों से भी उसे कुछ प्रेम हो गया था। बाबू के साथ भी वह तीन चार वर्ष पूर्व खेली कूदी थी। बाबू को वह भूल न गई थी। लंडन में भी जब कभी वह बाबू को याद कर लिया करती थी। अपने पिता से प्रायः पूछा करती भी कि बाबू से मिलने के लिये अब हिन्दुस्तान कब चलोगे। बाबू को अपने घर में पा वह फूली न समाई। रात दिन बाबू के साथ रहने लगी और खेलने कूदने लगी। बाबू की सेवा भी वही सब करने लगी। टी तैयार करती, उसे खाना खिलाती, उसके बर्तन साफ करती, कपड़े साफ करती, जूतों में भी पालिश करती। शाम सबेरे टेनिस खिलाने ले जाती रात को सिनेमा देखने। जब कब लंडन के देखने योग्य स्थान भी दिखाती।

बाबू को रहते रहते एक साल बीत गया और एक दिन सा मालूम

हुआ। वियोग में दिन बढ़ता है संयोग में घटता। जावरा और बाबू दोनों के दिलों में एक दूसरे के लिये प्रेम था और दोनों इसे जानते थे। जावरा उससे हँसती और मज़ाक भी करती। बाबू भी उसका जवाब देने से न चूकता। मज़ाक ही प्रेम की भूमिका है। दिल का अंदाजा मज़ाक ही से लिया जाता है। मज़ाक से दोनों एक दूसरे को खूब समझ गये, परन्तु अब भी कुछ समझना शेष था। इतना हिलमिल जाने पर भी मज़ाक में बाबू को अगुआ होने का साहस नहीं होता था! जबाब में ही वह जो चाहे कह सकता था। अगुआ होना जावरा ही का काम था।

एक दिन जावरा हँसते हँसते बोली 'क्यों बाबू क्या तुम्हारी शादी हो गई?

बाबू को कहना चाहिये था "नहीं" पर कह गया "हाँ"। हाँ सुनते ही जावरा पर सैकड़ों घड़े पानी पड़ गया। निराशा की गोधूली सी मुख पर छा गई। विचार हीन सी हो बोली "कब"।

बाबू जावरा के भाव ताड़ गया! अपनी बात पर पश्चात्ताप सा करता हुआ बोला "अभी" जब आपने पूछा। मैं आपके इरादे को समझ गया।

जावरा हँसने लगी। उसकी निराशा, आशा में परिणित हो गई। बोली "मैं भी तुम्हारे इरादे को समझ गई।" ऐसा कहकर जावरा कुछ लज्जित सी हो वहाँ से उठ गई। उस दिन से फिर बाबू के सामने भी नहीं आई। बाबू को बड़ा संदेह हुआ। क्या जावरा नाराज़ हो गई। क्या मेरे दूषित विचारों को समझ गई? क्या उसने अपने माता पिता से कह दिया होगा? मैंने बड़ी भयङ्कर भूल की। एक भोली भाली लड़की को बरगलाना चाहा। अपनी लोलुपता यहाँ भी न छोड़ सका। कोई आपत्ति आ पड़े तो कौन यहाँ बचाने आयेगा। माता पिता को तो मैंने एक पत्र भी नहीं लिखा। वे तो मुझे शायद मरा ही समझ चुके हों।

बढ़ते बढ़ते, बाबू के मन में इतनी उद्विग्नता बढ़ी कि अब उसे एक मिनट भी लंडन में रहना कठिन हो गया।

लंडन के जो विशाल भवन पहले उसे स्वागत के हेतु खड़े हुए से प्रतीत होते थे, वही अब खाने से लगे। मोटरों, ट्राम्वेज़, रेलों हवाई जहाजों इत्यादि का शोर, जो पहले जावरा की मृदु मधुर बात से दबा रहता था, सहसा उखड़ सा पड़ा। इस भयंकर शोर गुल में लोग कैसे रहते हैं उसे अब कल्पना क़रना भी कठिन हो गया। धुयें से आच्छादित आकाश के नीचे उसका दम घुटने लगा। बार बार उसे घर की और कुमुद की याद आने लगी। इङ्गलिश लेडी ले चलने का अब उसने विचार छोड़ दिया। लंड न से जाने की ही ध्वनि सवार हो गई। उसने अपने जाने का प्रस्ताव मिस्टर ग्रे के सामने पेश कर दिया।

ग्रे ने उसके प्रस्ताव को बड़े आश्चर्य से सुना। वह जावरा और उसकी शादी की तैयारियाँ कर रहा था। कल ही शादी की तिथि थी! कल ही जावरा और बाबू को गिरजे में जा पादरियों के सामने एक पवित्र बन्धन में बँधना था। ग्रे साहब आँख निकालते हुए बोले "यह क्यों! कल तो तुम्हारा और जावरा का पवित्र सम्बन्ध है। गिरजे में तुम्हारी दोनों की शादी होगी। क्या तुमको शादी करना स्वीकार नहीं?"

बाबू आश्चर्य और प्रसन्नता से स्तम्भित सा खड़ा रह गया, एक मिनट तक उसके मुख से कोई शब्द नहीं निकला। अपनी बात को सम्हालते हुए बड़े गम्भीर भाव से बोला "शादी के बाद ही मेरा जाने का इरादा है।"

ग्रे साहब उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए बोले "इतनी जल्दी क्यों कुछ दिन और रह कर अंग्रेजी जीवन का अनुभव करो। यहाँ अनुभव के लिये विशाल क्षेत्र हैं जो इन्डिया में नहीं हैं। सर्विस करना चाहो तो वह भी यहाँ मिल जावेगी।

मेम साहिबा भी अन्दर से निकल आईं। उन्होंने भी बाबू के

प्रस्ताव को आश्चर्य से सुना। बोली "कैसी एब्सर्ड बात है। जावरा से कल तुम्हारा पवित्र सम्बन्ध स्थापित होना है। क्या तुम उसे नहीं चाहते। क्या वह धोखा खा गई है।

नहीं, नहीं, कहते हुए बाबू ने सारी बात सम्हाली। मैं कल नहीं जा रहा हूँ। शादी के बाद ही जाऊँगा। जावरा साथ जायेगी।

"नहीं कुछ दिन और ठहरो! तुम हमारे गेस्ट हो हमारी मरजी से जाओगे"। मेम साहब ने रोब भरी आवाज में कहा।

बाबू तो मन में यही चाहता था। लंडन उसे फिर प्रिय लगने लगा था। उसकी आशा हरी ही न हो उठी थी वरन् उसमें फूल भी लगने लगे थे। वह बोला "मैं आपके डिसपोजल पर हूँ।"

दूसरे दिन जावरा और बाबू की शादी हो गई।

बाबू विदेश गया, कुमुद के लिये घर ही विदेश हो गया। चारों तरफ ढूँढ़ने पर, जब बाबू का कुछ भी पता न लगा, और दिन, सप्ताह, महीने गुजरने लगे, तो सब की दृष्टि कुमुद पर पड़ने लगी। उसका घर में रहना कठिन हो गया। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा उसकी तरफ उँगली उठाता। पीठ पीछे तो जो कड़ी आलोचना होती कुमुद शायद सुनते ही मुरझा जाती! प्रायः स्त्री पुरुष कहते "कैसी अभागिन बहू आई कि सुहागरात का भी सुख न जाना। पढ़ना लिखना कहीं स्त्रियों को फलता भी है? कमला बाबू ने भी आँखों देखते मक्खी खाई। धन की शान में आ पढ़ी लिखी बहू घर में लाये। वैसे ही सब कोई कहता है कि लक्ष्मी और सरस्वती का वैर है। बहू बेटी को घर की लक्ष्मी कहते हैं। फिर सरस्वती का उनसे मेल कैसा। मनुष्य अपनी उद्दण्डता में स्वाभाविक, अस्वाभाविक चाहे जो भी काम कर डाले परन्तु ईश्वर उसे दण्ड दिये बिना नहीं रहता। कमला बाबू कुछ दिनों से बहुत इतराने लगे थे। अपने आपे में नहीं थे। सीना फुला फुला कर चलते थे। सबसे हाथ भर ऊँचे दिखने की सदा कोशिश में रहते थे। अभी यहाँ किसके किसके पढ़ी लिखी बहुयें हैं आई वही अगुआ होने चले थे, अगुआ या पछेला, दो ही तो मारे जाते हैं। फिर कहीं गधे के गले से

ऊँट भी बाँधा जाता है, कहाँ कुमुद बी० ए० पास और बाबू इएट्रेंस भी नहीं। बेचारा शर्म के ही मारे भाग निकला! न जाने अब मरा या जिया। कोई चिट्ठी भी उसने नहीं डाली! बीस विस्वा उसने अवश्य जान दे दी होगी। चारों तरफ से बेचारे पर सत पथरी सी पड़ी थी। सभी उसे चिढ़ाते थे। बीवी क्या उसके लिये हौआ हो गई थी। आखिर था तो अभी बच्चा ही। कहाँ तक लोगों के वाग्बाण सहता। कुमुद भी मन ही मन अपने भाग्य को कोसती। न पेट भर खाना खाती न नींद भर सोती। पढ़ना लिखना भी सब भूल गया। काम काज था ही क्या? विधवा की सी शक्ल बनाये रात दिन अपने कमरे में पड़ी रहती। घर की जब कोई स्त्री आकर बार बार अनुरोध करती तब उठ कर नहाती धोती और दो चार निवाले मुँह में डाल लेती। जितना बनता शरीर को कष्ट देती, स्वास्थ्य की उपेक्षा करती, अँधेरे उजेले में भी जाने से न डरती, तब भी उसे न साँप काटता, न बीछी, न उसके पापी प्राण निकलते। अन्ध विश्वासों में श्रद्धा न होने पर भी देवी देवता को मनाती, रोती और प्रार्थना करती। परन्तु कहीं से उसका छुटकारा न दिखता। वह यह न चाहती थी कि बाबू आकर उसे हृदय का हार बना ले केवल इतना चाहती थीकि उसका पता पड़ जाय। वह घर आ जाय।

इतनी दयनीय अवस्थामें रहते हुए भी कोई भी घर का छोटा ब । उसपर तरस न खाता। अभागिन, कुलक्षणा, छोड़ कोई भी उससे मुँह न बोलता। कानों में तेल सा डाले वह सब सुनती और सहती रहती।

दो महीने बीत गये, बाबू तो न आया न उसका कुछ पता ही पड़ा। विनोद अवश्य उसकी रुखसत कराने को आ गये। बिनोद को देखते ही वह फूट फूट कर रोई। विनोद को भी उसकी दशा देख कर रो आया। बाबू की बेवकूफी सब पहले ही से सुन चुके थे। परन्तु बाबू की बेवकूफी पर उन्हें जितना क्रोध न आता था जितना रमा की। मन ही मन उसे कोस कर रह जाते थे। कहते ऐसी कुमाता ईश्वर शत्रु को भी न देना। अपनी ही लड़की को डुबा दिया। मूर्खता और हठ के सामने ईश्वर को भी सिर झुकाना पड़ता है।

आंचल से आँसू पोंछती हुई कुमुद बोली "भैया तुम भी मुझे भूल गये। पिता जी ने भी खबर न ली। माँ क्यों लेने चली, वह तो पूर्व जन्म का बैर भँजा रही हैं। माँ के रूप में पूर्व जन्म की शत्रु हैं। भाभी का भी मैनें क्या बिगाड़ा था। माँ से दुश्मनी थी पर मुझसे तो नहीं। किसी को दोष नहीं दोष है मेरी तकदीर को। इतना कह कुमुद आँसुओ को न रोक सकी। फिर रोने लगी।

आँसुओं से डबडबाई हुई आँखें पोंछते हुए विनोद बोले "कुमुद मैं क्या करूँ" माँ पर कुछ भी मेरा बस चलता होता तो कुछ भी ऐसी बात न होने पाती। न बाबू से तुम्हारा सम्बन्ध होता न वह घर को छोड़ कर ही भागता। आत्म ग्लानि के कारण ही उस बेचारे को भी घर छोड़ना पड़ा। कहीं और कुछ भी न कर बैठा हो कुछ पता नहीं। माँ जी ने तुम्हें ही नहीं दूसरे के लड़के को भी कुएँ में पटक दिया। शरद से शादी हो जाती तो ये एक भी दुर्घटनायें न घटतीं। उस बेचारे के खिलाफ भी मुझे वारण्ट कटाना पड़ा। उसने भी जब शादी होने की आशा न देखी, ऐसा अप्रिय काम कर बैठा। और करता ही क्या।

शरद का नाम सुनते ही कुमुद के मन में आया कि रमा की सब कुचाल बतला दे। विपन्नावस्था में शत्रु की सहानभूति भी मनुष्य के हृदय को जीत लेती है। कठोर से कठोर हृदय भी राँग सा पिघल जाता है। कुमुद के मुँह तक बात आ गई, कहने ही वाली थी कि किसी अज्ञात भय ने फिर उसका कंठ रुद्ध कर दिया। रमा को मालूम हो गया तो कुए में कूद पड़ेगी। माँ की हत्या उसे किस नर्क में डालेगी वह कल्पना न कर पाती। माँ के लिये सर्वस्व बलिदान करना यदि वह धर्म नहीं तो कर्तव्य अवश्य समझती थी। मुँह में ताला लगा कर रह गई।

इसी समय कमला बाबू आ पहुँचे। कुमुद भीतर चली गई। कमला बाबू ने विनोद से कुशल प्रश्न पूछा और उसके पास ही कुरसी पर बैठ गये। विनोद ने पूछा "बाबू का कहीं पता पड़ा।" आखिर वह भाग क्यों गये। भागने की क्या बात आ पड़ी थी। बड़ी गलती की।

फिर चिट्ठी भी कोई नहीं डाली। बाबू कैसे समझदार निकले। कुछ समझ में नहीं आता।

कमला बाबू ने आँखों में आँसू भर कर कहा। साहब कुछ न पूछिये। मैं न समझता था कि वह इतना नालायक निकलेगा। मैंने तो इसी गरज से शादी की थी कि कुमुद के साथ में रह कर कुछ सीख लेगा। शर्म लगेगी तो कोई परीक्षा भी पास कर लेगा। परन्तु उसे ऐसी शर्म लगी कि घर से भाग ही निकला। औरतों ने शायद कुछ छेड़ छाड़ की थी। औरतों का तो स्वभाव ही होता है। आप जानते ही हैं। उसे शायद उनकी छेड़ छाड़ ही खटक गई। अब या तो वह पढ़ लिख कर ही लौटेगा या तो लौटेगा ही नही। बड़ा सेन्सीटिव है। मैं उसके स्वभाव को खूब जानता हूँ। डर तो यही है कि कहीं कुछ और न कर बैठा हो।

विनोद ने कहा "आपने उनके तलाशने के लिये क्या किया? क्या किसी अखबार में नोटिस निकलवाया।

कमला बाबू सिर हिलाते हुए बोले नहीं। मैंने यह उचित नहीं समझा। यह बात उसे और बुरी लगेगी। चिट्ठियों के द्वारा ही यहाँ-वहाँ पता लगा रहा हूँ। कुछ दिन और प्रतीक्षा करता हूँ। यदि कुछ पता न पड़ेगा तो नोटिस निकलवा दूँगा।

विनोद ने समर्थन किया और कहा "कुमुद की रुखसत कर दीजिये। वह यहाँ बहुत दुखी रहती है। बहुत रिड्यूस्ड हो गई है। पहिचानी भी नहीं जाती। वहाँ रहेगी तो दुख को कुछ भूल जावेगी। यहाँ आत्म ग्लानि के मारे ही मरी जा रही है।

कमला बाबू बोले ले जाइये। मुझे भेजने में कोई आपत्ति नहीं, परन्तु हमारा घर और सूना हो जायगा। छोटा बच्चा कुमुद के पास ही खेलता रहता है, वह भी दौड़ेगा। पर तब भी कुमुद के हित के लिये उसे भेजना ही जरूरी है। यहाँ वह अवश्य मर जायगी। न वक्त पर खाना खाती है न नहाती धोती। एक तो स्वयम् दुखी है फिर स्त्रियाँ भी ताना कसती रहती हैं। अपनी मूर्खता का परिदर्शन इस पर ताना

कस कर करती हैं। उनका तो मुँह है। कौन रोक सकता है। सोचने की बात है हमारा अबला समाज कितना गिरा हुआ है।

"सोचनेकी नहीं रोने की" विनोद ने कहा। इस देश का जाने कब उद्धार होगा। कुमुद को पढ़ा लिखा देना ही हमारे लिये एक आपत्ति हो गया है। घर बाहर सब हँसते हैं। इस शादी ने तो और कोढ़ में खाज पैदा कर दी है। अपढ़ और मूर्ख लोगों का ताना कसने का खूब मौका मिल गया है। न पढ़ने वाली लड़कियों को भी इस दुर्घटना से बहुत कुछ रिलीफ मिला है। एक तो खुद पढ़ना लिखना न चाहती थीं, तिस पर एक बहाना मिल गया। कुमुद बेचारी तो गूँगों के गाँव की ऊँट बन गई है। वह भी सोचती है मैंने न पढ़ा लिखा होता तो अच्छा रहता।

कमला बाबू बोले "थोड़ी थोड़ी गलती हम सबकी है। कुमुद के पढ़ने लिखने में कुछ नुक्स नहीं, नुक्स है शादी में। उसकी शादी उसके समान ही पढ़े लिखे लड़के से होना चाहिये थी। खैर" कहते हुए कमला बाबू उठ गये।

कुमुद फिर आ गई। विनोद ने उससे चलने की तैयारी करने को कहा। कुमुद बोली "नहीं भैया, अभी मेरा चलना उचित नहीं। मेरे जाते ही यहाँ मेरे खिलाफ और भी बुरा वातावरण बन जावेगा। मुझे दुबारा आने को भी रास्ता न रहेगा। जब तक उनका पता नहीं लग जाय, मुझे यही रहने दीजिये। मैं सब दुख भोगूँगी और अपने पापों का प्रायश्चित्त करूँगी। अभी चलूँगी तो लोग कहेंगे, घर का नाश करके चली गई। जाने कहाँ की अभागिनी आई थी। अभी मुझे देख कर इन लोगों का गुस्सा आक्षेपों और व्यंगों द्वारा निकालता रहता है। मैं लक्ष्य बनी हुई सब सुनती और सहती रहती हूँ। मेरे जाते ही इन्हें कोई आधार न मिलेगा और इनका दुख दुगना हो जायगा। दूसरे के फलते फूलते घर का नाश देख कर जाना मुझे सह्य नहीं। आग जलता रहना ही पसन्द करती है बुझना नहीं। मुझे यहीं जलते रहने दो। कलंक लेकर यहाँ से न जाने दो। अभी तो यहाँ

ही के आक्षेप और ताने सुनती हूँ" वहाँ और और लोगों के भी सुनना पड़ेंगे। यहाँ तो अभ्यस्त हो चुकी हूँ वहाँ नया अभ्यास करना होगा।

विनोद बोले 'कुमुद ! तुम्हारा कहना ठीक है परन्तु तुम्हारी तन्दुरुस्ती बहुत गिर गई है। यहाँ रहोगी तो बीमार पड़ जाओगी। तुम क्यों मन में कोई ग्लानि करती हो। तुम्हारा अपराध ही क्या है। तुमने तो बाबू को भगा नहीं दिया। अपराध है हम लोगों का जिन्होंने अविवेक पूर्ण तुम्हारी शादी कर दी। शादी की आजादी तुम्हें नहीं दी। तुम पर जो ताने कसते हैं वे अन्धे और मूर्ख हैं। भारतवर्ष इन शादियों ही के मारे मिटता आया है और मिट जायगा। कहीं दहेज का प्रश्न है, कहीं बे-मेल विवाह का, कहीं जाति और कुजातिका, भारत के सामने और कोई प्रश्न ही नहीं। हम भारतीय शादी ही के लिये पैदा होते और उसीके लिए मरते हैं। ऐसे समाज के खिलाफ जबतक सिर न उठाया जायगा तब तक हमारा उद्धार होने का नहीं। तुम अपने मन को मलिन मत करो। मेरे साथ चलो, फिर चाहो तो कुछ दिनों में आ जाना।

कुमुद ने आँखों में आँसू भर कर कहा "भाई मैं तुम्हारी बात कैसे काट सकती हूँ परन्तु······।"

विनोद बीच में ही बोल उठे। यदि तुम्हारी इच्छा नहीं तो मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूँगा। जब तुम लिखोगी, मैं तुम्हें लेने के लिये आ जाऊँगा। परन्तु अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना।

विनोद एक दो दिन और रह कर अपने घर चले गये।

१६

शरद, विनोद के घर से भाग कर हरद्वार पहुँचा। यद्यपि उसने अपनी हुलिया बदल ली थी, डाढ़ी रख ली थी और जटा बढ़ा ली थी तब भी हृदयको नहीं बदल सका था। हृदय में कुमुद बसी ही थी,

पकड़े जाने का भय और आ लगा। कुमुद के मिलने की तो अब कोई आशा थी नहीं, परन्तु पकड़े जाने का भय पग पग पर था। जितनी हुलिया उसके बदलने से न बदली गई थी उससे कहीं अधिक इसी भय ने बदल दी थी। रंग काला पड़ गया था शरीर सूख कर काँटा हो गया था संसार में कोई भी अभय दान देनेवाला नहीं दीखता था। पशु पक्षियों से भी वह डरता था, और तरु-पादपों से भी। कभी कभी अपनी छाया ही उसे भयभीत कर देती। अपना मन ही उसे भयङ्कर स्वप्न लाता। खाना भी वक्त बे वक्त सूखा रूखा मिलता और उसकी भी चिन्ता लगी रहती। इन तकलीफों से इतना आजिज आ गया था कि मिनट मिंनट अपने को पुलिस के हवाले कर देने को सोचता पर तब भी हिम्मत न पड़ती। पुलिस के सिपाही की छाया भी देखना उसे स्वीकार न था।

साधु बनकर अकेला रहना सहल नहीं। साधुओं को भी चेला की जरूरत होती है या गुरु की। शरद चेला बनने के योग्य तो था नहीं गुरु बनने योग्य अवश्य। उसे ऐसे गुरु की तलाश थी जो उसे अभयदान दे सके, उसके मन को सान्त्वना और साहस भी दे सके। जिसकी जमात में वह खप सके और वह पकड़ा न जा सके।

हरद्वार में गंगाजी के किनारे, शहर से कुछ दूर एक सांधु महाराज निवास करते थे, ये महाराज सी. आई. डी. थे परन्तु किसी को इस बात की हवा भी नहीं लगी थी। साधु महराज काफी हृष्ट पुष्ट, ४० वर्ष के जवान होंगे। सिर पर जटाओं का मुकुट और शरीर में भस्म। माथे के त्रिपुण्ड भी कभी न छूटते। अपने आसन पर २४ घंटे ऐसे डटे हुए दीखते जैसे कोई पत्थर की मूर्ति हो। कब शौच के लिये जाते थे कब नहाते धोते किसी को कुछ पता न पड़ता। जाने अपना डुपलीकेट भी रक्खे थे या आसन पर ही सब हो जाता। लोग आश्चर्य में थे। परन्तु इन बातों के पता लगाने की किसको पड़ी थी। कौन ऐसा बेकार था जो साधुओं के चरित्रों की छान बीन करता फिरे। सारे शहर में उनका आतंक और सन्मान था। दूर दूर से भी

भक्त लोग उनके दर्शनों को आते। इतनी चढ़ोती चढ़ती कि साधु महाराज और उनके दस बीस भक्तों के खाए न निबरती।

महराज मन्त्रों में बात करते थे। कभी किसी का गाली दे देते थे, कभी किसी को आशीर्वाद। सत्य वक्ता और निष्कपट तो इतने थे कि किसी से अपने पापों को भी छिपा न रखते। बचपन की जवनी की सब लीलायें सुना देते। सुनते ही लोग उनपर लट्टू हो जाते, कोई कहता "इसे हैं कहते आत्मबल! महाराज कितने स्पष्टवक्ता हैं। अपने भी पाप कहने से नहीं चूकते। भाई महापुरुष हैं, उनके सामने पाप और पुण्य दोनों एक हैं। भेद-विभेद तो हम दुनियाई आदमियों के लिये हैं। कोई कहता "संसार में पूजा योंही थोड़े ही होने लगती है। मनुष्य में कुछ होता है तभी संसार उसे पूजता है। कोई हमें तुम्हें भी तो पूजे। पर कोई-कोई यह भी न कहने से चूकते "कपट मुनि है। इन्हीं मुनियों ने देश का नाश कर दिया। एक दो नहीं बाब लाख मूर्तें हैं जो दूसरे की कमाई के लिये जमाई बने हुए हैं। इन लोगों को अपने मन से भी कुछ ग्लानि नहीं होती कि देश संकट में पड़ा हुआ है, लोगों को खाने के लाले पड़ रहे हैं, तब भी ये लोग अकर्मण्य बने हुए उदर पोषण कर रहे हैं। क्या इसे ही साधुता कहते हैं। गवर्नमेन्ट ने इन्हें एम्बुलेन्स बेगन में भरती करने की जो स्कीम बनाया था, कहीं चल जाता तो कितना अच्छा रहता। तब होते महात्माओं को ईश्वर के दर्शन। पाखंडियों को इतना बड़ा जटाओं का बोझ सिर पर रक्खे न जाने कैसे रहाई आती है। राख भी शरीर पर चढ़ाने में कसमसाहट नहीं होती।

पीठ पीछे संसार राजा को गाली देता है, पर किसका साहस होता है कि मुँह पर भी एक दो बोल कहले। साधु महाराज के कानों तक इन कुतर्किओं की आवाज न पहुँचती।

शरद को साधु महाराज की कैफियत जानने की न पड़ी थी। उसे तो किसी की शरण की आवश्यकता थी। साधु महाराज की सराय तो आगन्तुकों के लिये हर समय खुली रहती थी। शरद को

शीघ्र ही प्रवेश मिल गया ! वह साधु महाराज की सेवा में रहने लगा। चैन से कटने लगी। न खाने की फिकर रही न पकड़े जाने की। साधु महाराज के आश्रम से कौन पकड़ने वाला था। सोचने लगा ईश्वर बनावे तो साधू ही बनावे। इस बाने में बड़ा आराम है। बिना शरीर हिलाये डुलाये भी लड्डू लुढ़कते हैं। कभी कभी यह सोचकर लज्जित भी होता कि जिन साधू सन्तों का वह कड़ा आलोचक था, उन्हीं की शरण लेनी पड़ी। परन्तु मन के भाव मन ही में दवा के रह जाता। कभी कभी यह भी डरता कि साधु महराज मनुष्य के हृदय की बात न जान लेते हों जैसा कि प्रायः साधु सन्तों के विषय में प्रसिद्ध है। कहीं वही न मुझे अभियोगी समझ कर पकड़ा दें ? साधुओं से कपट करना ठीक नहीं। उन्हें सब बात साफ बतला दी जाय तो सम्भव है वे मेरी सत्यप्रियता पर प्रसन्न हो मुझे अभयदान ही नहीं कुछ और भी देने को तैयार हो जायें। इस विचार से शरद अपना सब किस्सा साधु महाराज को सुनाने को तैयार हो जाता परन्तु फिर रुक जाता। सोचता, साधु महाराज कहीं सी. आई. डी. न हों। मन ही मन वह उनकी परीक्षा लेता रहता। कुछ डरता सा दूर दूर बना रहता।

साधु महराज तो उड़ती चिड़िया पहिचानते ही थे। शरद को पहिचानने में उन्हें देर न लगी। उसके रंग-ढंग देखकर ही ताड़ गये कि कुछ दाल में काला अवश्य है। पर तब भी उससे सहसा न बोले। उसे और हिल-मिल जाने दिया। उस पर और भी विशेष कृपा दिखलाने लगे। कभी बुलाते और उसे अपने हाथ से प्रसाद देते, कभी अपनी चिलम भी उसे दे देते। प्रसाद तो शरद गट्ट से निकल जाता परन्तु चिलम पीते उसकी माता मरती। तब भी संदेह हटाने की गरज से दो एक सुट्ट लगा ही लेता। कभी-कभी नशे में अंग्रेजी भी बकने लगता और जिस सन्देह को हटाने की कोशिश करता उसे और भी बढ़ा देता।

जब सन्देह पुख्ता हो गया, साधु महाराज ने एक दिन परीक्षा ली। सब चेलों को बुला कर बोले "हमारी जमात में कुछ अभियोगी

अपराधी और पापी भी शामिल हुए हैं। मुझे ईश्वर का आदेश है कि उनकी परीक्षा लूँ और उन्हें यहाँ से निकाल दूँ। एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है। ऐसा न हो मेरी जमात बदनाम हो जाय। लो हर एक मेरी चिलम पिओ। जो अपराधी होगा इससे ज्वाल न उठा सकेगा। लो पहले मैं ही पीता हूँ, अपनी भी परीक्षा दे दूँ। महाराज ने दम लगा। चिलम से बीताभर ऊँची ज्वाल उठ गई। सब चेले वाह वाह करने लगे। शरद का मुँह सूख गया। सोचने लगा, उठकर भाग जाऊँ, परन्तु उठते ही न बना। पैरों ने भी जवाब दे दिया। आँखों के तले भी अँधेरा छा गया। शरीर में शून्यता सी छा गई। पसीना आ गया। हृदय जोरों से धड़कने लगा। साधु महाराज ने पहले उसे ही चिलम दी! सब षडयंत्र पहले ही से तैयार था। शरद ने चिलम ली। लेते ही उसके हाथ काँपे। चिलम जमीन पर गिर पड़ी। चोर की दाढ़ी में तिनका। चेलों ने उसे पकड़ लिया।

धैर्य और सान्त्वना देते हुए साधु महाराज, बोले 'क्यों बच्चा हम साधुओं से भी कपट करता है। बतला दे सच सच तू कौन है? कौन सा अपराध करके भागा है। जानता तो सब मैं हूँ, मनुष्य की शकल देखकर ही उसके हृदय का हाल बतला सकता हूँ, पर तुझसे पूछना है। तेरे मुँह से कहलाना है।

शरद काँपता हुआ हाथ जोड़कर बोला "हाँ महाराज मैं अपराधी हूँ। क्षुद्र जीव हूँ। आपकी शरण में अभयदान के हेतु आया था। पर आप से भी कपट किया। शरद ने अपना सब सही सही हाल कह सुनाया और अभयदान माँगने लगा।

साधु महाराज बोले 'अभयदान देने का अधिकार तो एक मात्र सरकार को हैं जिसका तू अपराधी है।—

शरद गिरफ़्तार हो गया। उसे मालूम हो गया कि साधु महाराज सी. आई. डी. थे।

जावरा को साथ लें बाबू इंगलैंड से वापिस अपने देश को आ गया। आने का उसका विचार तो नहीं था, चाहता था कि लंडन में ही बस जाऊँ पर अपने घर में उसे अपनी विजय पताका फहरानी थी। जिन लोगों ने उसे नाचीज़ समझ कर उसका मज़ाक उड़ाया था, उनकी नज़रों में ऊँचा उठकर दिखलाना था। जो लोग उसे मूर्ख और अपढ़ समझते थे, उन्हें अपनी विलायत से लाई हुई डिग्री दिखलानी थी। सब से अधिक उत्सुकता थी उसे कुमुद से मिलने की। उसी की नजरों में वह सबसे नीचे गिरा था। उस दिन का हँसना उसके कानों में अब भी गूँज रहा था। परन्तु मनमें उसके कुछ झेंप भी थी और कुछ ग्लानि भी। कमला बाबू क्या कहेंगे ? उसकी माँ इस काम को कैसा पसन्द करेगी ? ये प्रश्न उसे कुछ चिन्तित सा कर देते थे। पर अब तो वह आही गया था और सब कुछ सुनने और सहने के लिये तैयार था। उसे अपनी पराजय का भी पता था और अपनी जय का भी। यूरोपियन लेडी से शादी करना, जहाँ सामाजिक दृष्टि से नीच काम था, वहाँ शिक्षा और सभ्यता के नाते उच्च काम भी। शिक्षित और सभ्य कहलाना ही उसे इस समय दरकार था। नीच और उद्दण्ड कहा जाना भी उसे स्वीकार था परन्तु मूर्ख और असभ्य नहीं। कुमुद की डिग्री को अपनी डिग्री से मात करना ही उसका एक मात्र ध्येय था।

घर आकर वह अपने कमरे में टिका। उसका आने का समाचार सुनकर घर वाले फूले न समाये। कौतूहल से उसे देखने को दौड़े। पर जब देखा कि वह साथ में एक मेम लाया है, किसी का साहस उस तक जाने का न पड़ा। कमरे के इर्द गिर्द खड़े हो लोग खुस खुसाने लगे। तरह तरह की आलोचना होने लगी। बाबू की माँ बोली "सब नाश मिटा दिया, क्रिस्तान हो गया। अच्छा सपूत उपजा, घर में टांका लगवाया।

फूफी ने कहा "खैर आ तो गया। आदमी ही क्रिस्टान होते हैं, आदमी ही मेमों से शादी करते हैं। परन्तु कुमुद को नीचा दिखाने की गरज़ से उसने जो ऐसा किया है बुरा किया है। मेम नहीं लाया है डिग्री लाया है।" कमला बाबू भी आ गये। दरवाजे से झाँक कर वह भी लौट आये। मेम साहिबा के दर्शन तो कर लिये पर बाबू न दिखा न देखने को उनकी तबियत ही चाही। बाबू के आने की उतनी उन्हें प्रसन्नता नहीं थी जितना मेम के लाने का दुख। वे भी बोले "बाबू ने अच्छा नाम जगाया। अच्छा लड़का निकला। हमारी सात पीढ़ी में भी कोई ऐसा न हुआ होगा। मेरे भी नसीब में मेम नहीं बदी थी। बड़ा नीच निकला। कुमुद को नीचा दिखलाने की गरज़ से ही उसने ऐसा किया है। वृक्ष पर चढ़ने से किसी की ऊँचाई थोड़े ही बढ़ जाती है। मेम से शादी करने से क्या कोई डिग्री मिल जाती है। रहेगा नान मेट्रिक ही! इतना कह वह अन्दर चले गये। और स्त्रियाँ भी पीछे पीछे चली गई।

रमेश ने सुना और वह भी दौड़ा आया। सीधा बाबू के कमरे में चला गया। दोनों से शेक हैन्ड किया कुशल प्रश्न पूछा और कुरसी पर बैठ गया। बाबू उसे बिलकुल बदला हुआ आदमी मालूम पड़ा। उसकी चाल ढाल और रहन सहन सब अंग्रेजी हो गई थी। अंग्रेजी अब वह इतने सपाटे से बोलता था, कि रमेश को उसे समझने में भी कठिना; पड़ती थी उसकी टोन भी बदल गई थी। वह बिलकुल अंग्रेजों की तरह बोलने लगा था। मुँह से नहीं कंठ से उसकी आवाज निकलती थी। शब्दों को आधा अन्दर ही हज़म कर जाता था। मेम साहिबा ही उसे आसानी से समझती थीं और वह मेम साहिबा को। रमेश को अब उससे बात करनें का साहस भी नहीं होता था। डरता था कि कहीं बोलने में कुछ ग़लती न हो जाय तो मेम साहिबा के सामने शरमिन्दा होना पड़े। कहीं शब्दों का प्रोनान्शियेशन ही न गलत हो जाय, कोई बात ही न मुँह से ऐसी निकल जाय, जो मेम साहिबा को न पसन्द आवे, मेम साहिबा को भी इकटक नज़र भर देखना

चाहता था परन्तु नज़र से नज़र मिलाने से डरता था। अंग्रेज़ लोग एटीकेट के बहुत पाबन्द होते हैं, यह बात उसे मालूम थी। अब बाबू को वह उस नफरत से उस मज़ाक भरी दृष्टि से नहीं देखता था जिससे देखना चाहता था,। बाबू से अब उसे ईर्षा हो रही थी। चाहता था, मैं भी बाबू के साथ इंगलैंड गया होता तो एक लेडी लाया होता। बाबू ने धोखा दिया। मुझे बिना बतलाये ही भाग गया। बड़ा उस्ताद है। कितनी सुन्दर लेडी ले आया, कुमुद तो उस पर निछावर है।

रमेश को चुप बैठा देख बाबू ही बोला "क्यों मिस्टर क्यों चुप बैठे हो। यहाँ के क्या समाचार हैं। मेरे विषय में लोगों के कैसे विचार हैं।

रमेश क्षुद्रत्व का अनुभव करता हुआ बोला "लोगों के क्या विचार होंगे? आप भाग्यवान हैं, मैं आप की ईर्षा करता हूँ। और आप को बधाई देता हूँ। आप मुझे छोड़कर क्यों चले गये। आपने जाते समय मुझसे जिक्र भी नहीं किया। आखिर आप इतने इकाइक भाग क्यों गये थे।

बाबू विजय से प्रफुल्लित सा हँस कर बोला "आप ही के कारण, आपने मेरे भाई को जो पोइट्री सिखलाई थी उसका ही यह परिणाम है। आप ही बधाई के पात्र हैं। कहो मैंने ठीक किया न?

रमेश लज्जित सा हो कर बोला "ठीक तो किया पर कुमुद के साथ आपने अन्याय किया। मेरे अपराध का दंड आपने उसे दिया।

बाबू ने सगर्व उत्तर दिया "वह आपकी बहिन है न। रमेश सहमा सा बोला" पर मैं तो आपका मित्र हूँ। कितने दिनों से हम दोनों साथ ही साथ रहते, खाते पीते और खेलते थे। मुझे तुम्हारी मित्रता का घमण्ड था। पर आपने एक ही मज़ाक पर इतना बड़ा काम कर डाला। मुझे खुशी भी है और दुःख भी। सब से अधिक दुख है मुझे यहीं छोड़ जाने का। आप स्वार्थी निकले।

बाबू हँसकर बोला। आप का तर्क ठीक है, पर आप समझते हैं कि हृदय के सामने तर्क काम नहीं करता। उस समय मैं प्राणों पर

खेलने को तैयार था। प्राणों पर खेल विलायत से यह डिग्री लाया हूँ। क्या अब भी तुम मुझे अपनी बहिन से नीचा समझोगे। मैं ऐसा मूसर हूँ कि मेंमें भी बिलायत से ला सकता हूँ। ऐसा कह बाबू हँसने लगा। फिर बोला "रमेश वास्तव में तुम अनफारचुनेट हो! यूरोप का जीवन, जीवन है। जिसने यूरोप का भ्रमण नहीं किया उसने क्या किया! साथ चले होते तो तुम भी सैर सपाटे कर आते। नायाब चीजें देख आते। यूरोप से लौटा हूँ तो हिन्दुस्तान उजड़ा सा मालूम होता है। मुझे तो न जाने अब यहां कैसा लगता है। इन छोटे २ घरों को देखकर ही दम घुटता है। रहने की कौन कहे। मैं तो यहाँ से शीघ्र ही भाग जाऊँगा।

रमेश आह भरता हुआ बोला "क्यों जले पर नमक लगाते हो। साथ ले भी नहीं चले और ऊपर से ललचाते हो।

जावरा पास ही बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। दोनों कुछ हिन्दी कुछ अंग्रेजी में बातें करते थे। जावरा कौतूहल भरी आँखों से दोनों के मुख की ओर देख लेती और रहजाती। रमेश को बैठे आध घंटे से भी अधिक हो गया था। उठने का नाम भी नहीं लेता था। बार बार उसकी तरफ भी भूखी आखों से देख लेता था। जावरा को जब उनकी बातें अधिक बरदाश्त न हुईं बोल उठी "हू इज दिस ईडियट। डिसमिस हिम आफ" (इसे हटाओ यह कौन उल्लू है)

सुनते ही रमेश का रंग फीका पड़ गया। चुपचाप उठ आया। अब उसे मालूम हुआ कि इंगलिश लेडीज़ के साथ शादी करना इतना सरल नहीं। बाबू के साहस की प्रशंसा और अपनी मूर्खता पर पश्चाताप करता हुआ कमला बाबू के पास आया। उल्लू बनके आया था तब भी कमला बाबू पर रोब जमाता हुआ बोला "भाई मेम साहिबा का बड़ा कठिन मिजाज है। न जाने बाबू ने कैसे उसे बस में कर लिया। बाबू भी अब वह बाबू नहीं रह गये। अब तो शान ही दूसरी है। उनसे बात करना और समझना भी मुश्किल है। बिलकुल अंग्रेज हो गये हैं।

इस में शक नहीं, निकले बाबू बड़े साहसी। इङ्गलिश लेडी का लाना हंसी खेल नहीं है।

बाबू की माँ भी वहीं खड़ी थी। रमेश उनको सम्बोधन करते हुए बोला "अम्मा बहू को देख आओ। नेग दस्तूर भी जो होते हों कर आओ। मुँह दिखाई क्या दोगी?

बाबू की माँ मुंह फुलाकर बोली "अपनी बहिन को भेज दो। मैं तो उसका मुँह देख चुकी अब वह अपनी सौत का मुँह देख आवे और अपना सुख सुहाग मुँह देख दिखाई दे आवे।

कमला बाबू बोले "खैर इस मज़ाक में क्या रक्खा है। रमेश! बाबू से खाने पीने के लिये तो पूंछ आओ। खुद क्या खायगा, मेम साहिबा क्या खायेंगी? क्या किसी खानसामें को बुलाना होगा? दिन भर आये हो गये। कहेंगे पानी के लिये भी नहीं पूछा।

सिर हिलाते हुए रमेश बोला "नहीं भाई साहब मैं तो नहीं जाऊंगा एकहि बार आश सब पूजी" एक ही बार में तो उसने ईडियट बनाया है दूसरी बार न जाने क्या बनायेगी। आपही जाइये। ऐसा कहता हुआ रमेश चला गया। कमला बाबू सोचने लगे अब किसे भेजूं। मैं तो भाई नहीं जा सकता। कहीं मुझे भी मेम साहिबा ने कुछ कह दिया तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना होगा। कुमुद को भेजो! वही जायेगी! बी० ए० पास है, एटीकेट भी समझती है।

कुमुद पास ही खड़ी खड़ी इन लोगों की बातें सुन रही थी। आज डेढ़ वर्ष में उसके मुख पर कुछ परिवर्तन दिखलाई पड़ा था, आज वह कुछ प्रसन्न भी थी और कुछ दुखी भी। प्रसन्न थी बाबू के आजाने से। दुखी थी सौत के भी साथ लाने से। बाबू के आने की सब लोग आशा छोड़ चुके थे। वैधव्य का कलंक उसके सिर लग चुका था। आज वह कलंक उसके सिर से धुल गया। इस कारण से आज वह प्रसन्न अधिक थी। सौत के दर्शनों का कौतूहल भी उसे कम न था।

इशारा पाते ही बाबू के पास चली। संध्या कुछ अधिक ढल चुकी

थी ! दीपक जल उठे थे। कुमुद आगे बढ़ी परन्तु उसके पैर पीछे को हटने लगे। हृदय भी नीचे को धँसने सा लगा। कुछ विचित्र ही दशा हो चली। उसे ऐसा मालूम होने लगा जैसे मूर्छित होकर ज़मीन में गिरी पड़ती हो। अपने ही पति से मिलने जा रही थी परन्तु उसके मिलने में न जाने किस विपत्ति का सामना था कि वह काँप रही थी। बाबू का जितना उसे डर नहीं था उतना मेम का। क्या बात करूँगी, क्या पूछूँगी, कैसे अपना परिचय दूँगी ? इङ्गलिश लेडीज़ अविभाजित प्रेम चाहती हैं। उन्हें प्रेम में साझेदार पसन्द नहीं ! क्या बाबू ने अपनी शादी हो जानेका हाल उससे छिपा रक्खा होगा ? कहीं उस पर न कोई और आपत्ति आ पड़े ? इसी प्रकार के, अपने मन में प्रश्न करती हुई, कुमुद संज्ञाशून्य सी बाबू के सामने जा खड़ी हुई।

जावरा ने अँग्रेजी में बाबू से पूछा, यह शैतान की खाला कौन है ? क्यों बिना परमीशन के अन्दर आ गई। हिन्दुस्तानी औरतें कुछ एटीकेट नहीं जानतीं।

कुमुद को देखकर बाबू अवाक सा रह गया। उसकी शकल में भारी परिवर्तन हो गया था। उसका शरीर सूख गया था। गालों के गुलाब मुरझा गये थे। साक्षात् करुणा की मूर्ति थी। बाबू के हृदय में कुछ दया आ गई। अपनी गलती पर उसे कुछ पश्चाताप-सा होने लगा।

जावरा ने फिर पूछा "क्या तुम्हारी शादी हो चुकी थी ? क्या तुमने मुझे धोखा दिया है। यदि ऐसा है तो मैं विलायत चली जाऊँगी, तुम्हें हेवी पिनाल्टी देनी होगी।

बाबू फिर भी अवाक था। उसके सामने जटिल प्रश्न था। उत्तर के लिये वह कुमुद का मुँह ताकने लगा। कुमुद उसके भाव को समझ गई। अँग्रेजी में बोली "नहीं उनकी शादी नहीं हुई है, मैं तुम्हारी सेविका हूँ।"—

जावरा फिर आँखें लाल कर बोली "बाबू तुम क्यों नहीं बोलते ! क्या कुछ दाल में काला है ?

बाबू फिर भी अवाक था। जावरा का शक और भी बढ़ गया।

कुमुद को किक मारती हुई बोली "यू रेच भाग जाओ यहाँ से। तुम्हारी कोई जरूरत नहीं।

किक कुमुद के नहीं वरन् बाबू के पड़ी। उसका चेहरा पीला पड़ गया। अपनी स्वजातीय, अपनी परणीता अबला की यह दशा उसे असह्य सी हो गई। कुमुद से उसे घृणा नहीं थी, घृणा थी उसकी डिग्री से। जैसे को : निरीह गाय को मार पश्चाताप करे, बाबू उसी तरह पश्चाताप करने लगा। कुमुद का वह उदारतापूर्ण उत्तर उसे और भी लज्जित करने लगा। कुमुद के मूल्य को वह उसी उत्तर से समझ सका। उसकी आँखों में आँसू आ गये, तब भी उन्हें दबाकर रह गया।

कुमुद पिछले पैरों लौट पड़ी। उसके मन में कोई दुःख नहीं था। उसने अपने पति की इज्जत रख ली थी। भारतीय ललनाओं के आदर्श को निबाह लिया था। इस बात का उसे हर्ष था। उसका सिर अपने आप ऊँचा उठ रहा था। बाबू ने उसे परास्त करना चाहा था परन्तु स्वयम् परास्त हो गया था। वह कमरे से निकल आई परन्तु अब उसका साहस घर के अन्दर जाने का न पड़ा। अब घर में उसका कौन था। उसका पति दूसरे का हो चुका था। वह ठुकरा दी गई थी। उसकी आँखों में अँधेरा, हृदय में निराशा थी। अब उसे कोई अपना कहने वाला नहीं था। वह बिना लक्ष्य के चल पड़ी। उसे पता नहीं था, कहाँ और किस ओर जाती है।

१८

रात अधिक हो गई थी। आकाश में कुछ बादल भी घिर आये थे। एक एक दो बूँदें भी पड़ रही थीं। तारे सब छिप गये थे परन्तु बिजली की बत्तियाँ शहर में चमक रही थीं। रास्ता भी चलना करीब-करीब बन्द हो गया था। यहाँ वहाँ एक दो आदमी मिल जाते थे।

कुमुद अब भी आगे बढ़ती जा रही थी। न मंजिल का कुछ पता था। न कहाँ पहुँच चुकी है यह भी कुछ ज्ञात था। तब भी उसके पैर

विश्राम नहीं लेना चाहते थे। वह इस प्रकार चल रही थी जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो। अपनी धुनि में ऐसी मस्त थी जैसे कोई अभिसारिका। चलते चलते वह शहर के बाहर आ पहुँची। यहाँ एक वृक्ष के नीचे उसे एक ताँगे वाला खड़ा हुआ दिखलाई दिया। उसे क्रास कर आगे बढ़ने ही वाली थी कि ताँगे वाला बोला "बहिन जी क्या ताँगा चाहिये। स्टेशन सवारी जायगी।" ऐसा कहते हुए ताँगे वाला समीप आगया। कोई चालीस वर्ष का हट्टा कट्टा, फैशन वाला आदमी था। शरीर पर सफेद तंजेब का कुरता था, सिर पर कामदार टोपी, पैरों में चूड़ीदार पायजामा। देखने में तो शरीफ मालूम होता था परन्तु था पल्ले दर्जे का गुंडा।

कुमुद,उसे सामने देखते ही कुछ डरी। अचानक उसकी समाधि ही भंग हो गई। अपने को शहर के बाहर अँधेरी रात में पाकर मन ही मन पछताती सी बोली। 'नहीं मुझे सवारी नहीं चाहिये, पैदल जाऊँगी।"

ताँगे वाला उड़ती चिड़िया पहिचानता था। कुमुद की सूरत शक्ल से ही समझ गया, कोई बड़े घर की बहू बेटी है, घर से भाग कर आई है। अच्छी है, चङ्गुल में फँसाने योग्य है। कुमुद के मुँह की ओर टार्च फेंकता हुआ बोला "किराया न देना बहूजी, मैं जानता हूँ आप घर से भागकर आई हैं, पास में कुछ न होगा। ताँगे में बैठ लीजिये, पहुँचा दूँ, स्टेशन बहुत दूर है। आप बड़े घर की बहू बेटी हैं पैदल न चल सकेंगी।"

कुमुद घबड़ाई। सोचने लगी शायद ताँगेवाले ने पहिचान लिया। सहज में वह पिंड न छोड़ेगा! बदमाश मालूम होता है। बोली "चलो बैठ लूँ।

ताँगे वाले ने समझा चिड़िया फँस गई। ऐसा खुश हुआ जैसे कहीं का राज्य मिल गया हो। बड़ी उतावली से घोड़े को टिटकारता हुआ ताँगे के सामने लाया। बोला "लीजिये यहीं आगे की सीट पर न बैठ जाइये।

कुमुद उसकी बदमाशी को ताड़ती हुई बोली "नहीं पीछे ही बैठूँगी। आगे यह ललटेन की रोशनी में कीड़े आवेंगे।

अपनी नेकनियती ज़ाहिर करता हुआ बोला "कहीं बैठ जाइये। मरज़ी आपकी। बोझ कम है पीछे दचके लगेंगे इस गरज से कह रहा था कुछ बदनियती से नहीं। ताँगेवाले बदनाम हैं, आपका कुसूर क्या ?

कुमुद, कालेज में पढ़ती रही थी, ताँगेवालों की नस नस पहिचानती थी। कई एक की मरम्मत भी कर चुकी थी। सावधान होकर बैठ गई। मन में कहने लगी, तू डार डार तो मैं पात पात,।

ताँगेवाले ने घोड़े को इशारा किया "चल बेटा, तेरे ही दम का जहूरा है, तेरे सामने मोटर रेल, सब मिट्टी कूड़ा है। ताँगा कुछ दूर चलकर सड़क से नीचे उतर गया।—

कुमुद कुछ क्रोध में आकर बोली "कहाँ लिये जा रहा है, क्या इतनी लम्बी चौड़ी सड़क नहीं दिखती ! क्या खाई में पटकेगा। क्या अफीम खाली है।

कुछ जबान बुलन्द करते हुए ताँगेवाले ने कहा "इसे हैं कहते गुनाह बे-लज्जत। एक तो बिना दामों के ले चल रहा हूँ तिस पर जबान चूकती हो। जाने क्यों गम खा गया, कोई और होता तो मज़ा चखा देता, पल्ले दरजे का बदमाश हूँ। जाने कितनी तुम ऐसी जाँघ के तले से निकाल चुका हूँ। यहाँ, से रास्ता सीधा है, इस लये तांगा उतरा है, औरत की जाति बड़ी शकी होती है। तुम्हें घर नहीं ले चल रहा हूँ, मुझे अइयाशी नहीं करना है ! ऐसा कहते हुए उसने फिर घोड़े को टिटकारा। सीधे रास्ते पर लाया।

कुमुद की जान में जान आई। अपना कुसूर समझकर माफी माँगने लगी ताँगेवाला भी कुमुद को कुछ तसल्ली देने की गरज से धीमा पड़ गया। बोला बहू जी ? मैं और सब कुछ करता हूँ, मगर मैंने धोखादेही नहीं सीखी। मैं पाक साफ नहीं हूँ, बड़े बड़े जुर्म मैंने किये हैं बड़ों बड़ों की बहू बेटियों को, खुदा की फज़ल से, बरबाद

किया है। जिससे निगाह लड़ गई उसे सरे आम भी नहीं छोड़ा। तुम तो मेरे ही ताँगे पर सवार हो।

क्या कहूँ एक बार का जिक्र। आगरे से रेल में आ रहा था। डब्ब में इतनी भीड़ थी कि सीट के नीचे बैठना पड़ा। सामने ही एक बला की खूबसूरत औरत, एक बाबू के साथ मेरे सामने ही सीट पर आ बैठी। मेरा दिल, क्या कहूँ बहू जी, बाँसों ऊँचे उछलने लगा। ऐसी खूबसूरत औरत तो मैंने आज तक देखी ही नहीं। दिल सम्हाले न सम्हला एक शैतानी सूझी। उस हूर की साड़ी नीचे झूल रही थी। धीरे धीरे उँगली बढ़ाई और उसे नीचे को खींच दिया। उसका सीना उधर गया खुदा की कसम बहू, ऐसी तबियत हुई कि अब क्या जाहिर करूँ। कई बार यह खेल किया, मगर एक दूसरा बाबू सामने केमरा लिये बैठा था उसने देख लिया। वह भी अपना दाव पेंच लगा रहा था। पर मेरा खेल अभागे ने बन्द करा दिया। उस दिन से वह परी-जाद फिर देखने को नहीं मिली बहू। रात दिन उसकी तलाश में रहता हूँ। शहर शहर छान डाले। यह दिल दूसरे किसी को गवारा ही नहीं करता।

कुमुद को उस दिन की याद आ गई, जिस दिन अपने भाई के साथ आगरा से वापिस घर आ रही थी। शरद सामने केमरा लिये बैठा था। साड़ी भी उसी की फिसल फिसल कर गिर पड़ती थी। उस दिन का अपराधी इतने दिनों बाद मिला। क्रोध को रोक कर चुप बैठी रही। तांगे वाला और बढ़ने लगा। स्टेशन का अब भी पता नहीं था। रास्ता भी कुछ भूला सा मालूम होता था। पास कोई आता जाता भी न दिखलाई पड़ता था। तांगे की लालटेन भी अपना मुँह देख रही थी। कुमुद के हाथ में कुछ हथियार भी नहीं था। उसकी अकल चर्ख में थी। तांगे वाले का इरादा धीरे धीरे और भी अधिक साफ नजर आता जा रहा था। सहसा उसे एक बात सूझ गई। पैरो में स्लीपर पहने थी, जिसकी हील काफी कड़ी और मजबूत थी। उसने एक स्लीपर को उतार कर हाथ में ले लिया।

ताँगे वाले ने एक अंगड़ाई लेते हुए फिर कहा, बहू जी कसूर माफ करना, बदजात हिन्दू लोग अपनी औरतों को बहुत बुरी तरह से रखते हैं। उन्हें अपना गुलाम समझते हैं। उनकी कुछ भी इज्जत नहीं करते। उनकी इतनी भी कीमत नहीं जितनी पैर की जूती की होती है। तभी हिन्दू औरतें मुसलमानों को ज्यादा पसन्द करती है। बहू जी, तुम्हें खुदा की कसम है, सच कहना, क्या मैं गलत कहता हूँ। गलत हो तो हजार जूतियाँ मारना।

ताँगे वाले का इतना कहना ही था कि कुमुद पीछे से उसके सिर में एक इतने जोर से स्लीपर मारा कि उसे चीख आया। कुमुद ने और भी हाथ साफ किये, यहाँ तक कि ताँगा वाला बेहोश होकर ताँगे से नीचे गिर पड़ा। कुमुद आगे की सीट पर आ गई। घोड़े को सड़क पर लाई और उसे तेजी से हाँका। तांगे वाले से कहती गई वह परिज़ाद मैं ही थी।"

कुछ ही देर में स्टेशन आ गया। कुमुद ने तांगे को छोड़ा। ट्रेन लगी हुई मिल गई। पता नहीं कहाँ को जा रही थी बिना टिकिट के ही कुमुद फर्स्ट क्लास में जा बैठी। गाड़ी चलकर फिर थोड़ी देर में रुक गई। मालूम हुआ एक्सीडेन्ट हो गया। एक तांगा रेल के क्रासिंग के सामने आ गया और चूर चूर हो गया। कुमुद को कह आया, अच्छा हुआ। गाड़ी फिर चल दी।

१६

कुमुद भूलती भटकती नासिक में अपने घर आ गई। उसका अचानक आना एक कौतूहल का कारण था। विनोद, रमा, वासुकी सब उसे देखने को जुड़ आये। खड़ी २ रमा बोली "क्यों बेटा! अभी तेरे आने की तो कोई खबर नहीं थी अचानक कैसे आ गई? क्या भाग कर आई है। तेरा सामान कहाँ हैं?

कुमुद कुछ न बोली, जोर जोर से रोने लगी। सब लोग समझ

गये कुछ कारण अवश्य है। ससुराल के दुख को स्त्रियाँ आँसुओं ही से प्रकट करती हैं मुँह से नहीं। सब का ख्याल हुआ बाबू शायद मर गया। पर किसी को पूछने का साहस न हुआ। सब अवाक हो खड़े रहे। विनोद भी दया भरी दृष्टि से इकटक उसे देखते रहे, मगर बोले वह भी कुछ नहीं। रमा को भी कुछ संदेह हुआ। कुछ देर चुप रह कर बोली आखिर बेटी हुआ क्या। कुछ कह तो सही। क्यों हम लोगों को परेशानी में डाल रही है।

कुमुद आँसू पोंछती हुई बोली "क्या कहूँ? जो कुछ होना था हो गया। तुमने अपने मन की करली! मैंने अपने नसीब का लिखा बदा पा लिया। मेरी जगह पर एक मेम आ गई, मैं दूध की सी मक्खी निकाल बाहर की गई। तुम ही बड़ों से रिश्ता करने को मरी जाती थी। बड़ों से रिश्ता करने का फल यह निकला। अब जिन्दगी भर तुम्हारे सिर पर सवार रहूँगी।

विनोद ने कहा "खैर! बाबू सही सलामत लौट तो आया न? मुझे तो उसके लौटने में भी शक था। ऐसा कहते हुए विनोद बाबू अपने काम पर चले गये। अब बासुकी को बात करने का मौका मिला। बासुकी रमा पर जली भुनी रहती थी, उसके कारण कुमुद का घर से निकाला जाना उसे अच्छा ही लगा। उसे रमा को खोटी खरी सुनाने को मौका मिल गया। मुँह बनाती हुई बोली "क्यों माँ जी! अब हो गई न खुश। हो गया तुम्हारे मन का। यही चाहती थी न? हमारा सब का कहना तो विष सा लगता था। शरद के साथ शादी हो गई होती तो क्यों ऐसा होता। रुपये से भी लुट गये, कुमुद भी किसी घर घाट न लगी। न यहाँ की रही न वहाँ की। तुम्हारी लड़की थी। हम लोग क्या कर सकते थे। रुपया लगाने तक ही हमारा बस था। कर्ज़ अदा करना था।

बासुकी की बात सुनते ही रमा के शरीर में आग सी लग गई। मुँह बनाती हुई बोली "मैं क्या खुश होऊँगी, तुम खुश हो गई। तुम्हारे मन की बात हो गई। कौन कुमुद को फूटी आँखों देख सकती

थीं। तुम्हारा ही शाप उसे लगा है। शरद के साथ शादी हो जाती ? तुमने ही क्यों न करली ? रुपये से लुट गई ? सौ दो सौ रुपया लगा दिया सो लुट गईं। असली रुपया लगाया मैंने, लुट ये गईं। मेरी लड़की, मेरा रुपया, ताने कसने वाली तुम कौन ? तीन में न तेरा में।

रमा ने याद कर कर बासुकी की प्रत्येक बात का जबाब दे दिया। सब कुछ भूल जायँ, पर जबाब देने की बात भूलने की नहीं। सौ दो सौ की बात सुनते ही बासुकी का कलेजा फट गया। बोली "क्यों माँ जी ! क्यों ईमान को बिलकुल पी गई। सौ दो सौ रुपया है लगाया हमने ? तुम्हारा मुँह बदबू नहीं करता। खैर जो तुम कहो वही सही कौन तुमसे बदला लेना है। तुम्हारी तो बुढ़ापे में अक्ल सठया गई है। अपने हित की भी बात तुम्हें बुरी लगती है। तुम जानो तुम्हारा काम जाने मैं यह चली। ऐसा कहती हुई बासुकी चली गई।

जाती देख रमा धीरे से बोली जा रंडी तूने ही है सब नाश मिटा दिया। शादी के शुरू ही से हर एक बात में वाधा डाली, वह कैसे फलै। क्यों कुमुद ! यही है तूने बी० ए० पास किया था ! एक सीधे साधे छोकरे को भी न सम्हाल सकी। लानत तेरे बी० ए० पर।

कुमुद ने चिढ़कर कहा " इस बी० ए० ने ही नाश मार दिया है। बी० ए० न होती तो यह बला सिर पर न आती। मैं बी० ए० और वह मेट्रिक भी नही कहीं ऐसी भी शादी होती है। उन्हें ऐसी शर्म लगी कि मुझे मुँह भी नहीं दिखाया। मुझसे हुज्जत कर मेम ले आये। जब किसी की छाँह भी छूने को न मिले तब बी० ए० क्या कर ले। माँ जी ! सब दोष तुम्हारा है। अब जिन्दगी भर तुम्हारे और भैया के टुकड़े तोड़ूँगी और नसीव के लिये रोऊँगी।" ऐसा कह कुमुद फिर रोने लगी।

रमा अपने दोष को कब स्वीकार करने वाली थी। नाक भौहं सिकोड़ती हुई कहने लगी "बेटी मुझे तो दोष देवे गी ही ! ज़माना ही उलटा है सच्ची कहूंगी तो चींटा सा लगेगा ! दिल तो बेच चुकी थी शरद को, बाबू से कैसे पटती। सम्भव है तेरे चरित्र उसे मालूम हो

गये हों। बीस बिस्वा छिपे तो रहे न होंगे। घर ही में तो जासूस हैं। वासुकी और विनोद ने शादी में बाबू के कान फूँक दिये होंगे। तूने नाश मिटा दिया। अब रोती और चरित्र करती है।

रमा की बात, कुमुद को बाण सी लगी! उसके स्वार्थ त्याग, आत्मदमन और तपस्या, सभी पर पानी पड़ गया। जिससे वह तसल्ली की आशा करती थी, उसने और जहर पिला दिया। शील और संकोच को तिलांजलि देकर बोली" ईश्वर ऐसी माँ की काँख से दुश्मन को भी पैदा न करन इसकी इज्जत रखने के लिये मैंने अपने को मिट्टी में मिला दिया, पर इसने मेरी इज्जत न रक्खी। मुझे हर-जाई ही समझती रही। दूसरे को जासूस कहती है, जासूस है खुद।

रमा, कुमुद की बातों को न बरदास्त कर सकी। शीघ्र ही बोली भगवान तेरी ऐसी लड़कियाँ, दुश्मन के दुश्मन को भी न दे। घर बाहर किसी की भली नहीं। संसार भरके माता पिता अपने लड़के लड़कियों की शादी करते हैं, पर क्या लड़कियाँ ऐसा करती हैं। बड़ी बी० ए० हुई है। लड़के को मुँह भी नहीं दिखलाया! ऐसी बड़ी रूपवती है? मेम न लाता तो करता क्या? क्या स्त्री के सामने नीचा देखता। इज्जत में मनुष्य क्या नहीं कर डालता? संसार को दिखलाने के लिये वहाँ डेढ़ साल रह आई! बुलाने से भी नहीं आई। दुनिया इतनी भोली भाली नहीं। पाप और पाखण्ड को खूब अच्छी तरह समझती है। मुझे चकमें देती है! यह नहीं समझती कि मैं उम्तादों की भी उस्ताद हूँ। तुम ऐसी छोकरियों को उँगलियों पर नचा सकती हूँ। तुझे शरद ही से शादी करनी थी तो यह चरित्र ही क्यों रचा था। उसी के साथ भाग निकलती। क्यों मेरे सिर यह कलंक लगवाया।

कुमुद कपाल ठोंक कर रह गई "माँ कौन तेरे मुँह लगे जो तू कहती है ठीक है। ऐसा कहती हुई कुमुद अपने कमरे की ओर चली। कमरा खोला। आज डेढ़ साल के बाद फिर कमरे में आई थी। सब चीजें पर धूल चढ़ गई थी। ऐसा मालूम होता था कि उसके दुख से वे चीजें

भी दुखी हैं। उसकी आत्मा का उनके ऊपर भी प्रतिबिम्ब पड़ता रहा है। संज्ञाशून्य सी आ कर एक कुरसी पर बैठ गई। डेढ़ वर्ष पूर्व उसे उस कमरे में जो आनन्द, जो उत्साह जो प्रेम प्राप्त होता था, कुछ भी प्राप्त न हुआ। एक अजीब सी उदासीनता कमरे में छाई थी। जिन पुस्तकों को वह जहाँ जैसा छोड़ कर गई थी, वैसी ही पड़ी थी। किसी मे सफा भी नहीं उलटा था। हवा भी कमरे में झकने नहीं आई थी। टेबुल पर उसकी दावात कलम पड़ी थी। दावात की स्याही सूख चुकी थी। कुमुद की आँखों से कुछ आँसू टूट कर उसमें गिर पड़े। सामने शरद का बनाया हुवा उसका वही इन्लार्ज्ड फोटो टंगा था। उस पर भी धूल चढ़ गई थी। उसे देखते ही कुमुद का गला फिर भर आया। आखों में आँसू डबडबा आये। उसे उस दिन रेल की घटना याद आई जिस दिन शरद ने उसे शूट किया था। उस ताँगे वाले को भी वह न भूल सकी, उस पर उसे कुछ रहम भी आ गया। अपना अन्याय जँचा। रूप के मोह में फँस कर मनुष्य क्या नहीं करता। उस बेचारे का भी क्या दोष था। मेरे ही समान वह भी रूप का शिकार था। जब मनुष्य स्वयम् अन्याय करता है तभी उस पर अन्याय होता है। वह दिन भी उसे याद आ गया जिस दिन उस कमरे में रात को वह शरद से एकान्त में मिली,थी। कितना मधुर, कितना शुभ, था वह दिन। जाने किस आनन्द की लहर उसके हृदय में उमड़ आई थी। एक दिन वह भी था जब सब उस पर प्राण देते थे, आज वह है जब सब प्राण लेने को तैयार हैं। माँ, तू मां नहीं शत्रु निकली।

यों ही जब कुमुद बैठी विचार कर रही और रो रही थी, अचानक वासुकी, उसके सामने आ खड़ी हुई। कुमुद ने छिपाकर अंचल से आंसू पोंछ लिये। वासुकी बोली "चलो, चलो, कुमुद तुम्हें एक मजा दिखलाऊँ। जलदी चलो नहीं तो निकल जायगा।

कुमुद बिना कछ कहे उठ खड़ी हुई। वासुकी ने उसका हाथ पकड़ा और बाहर दरवाजे पर ले गई।

शरद, कैदी बना अदालत को जा रहा था। हाथों में हथकड़ियाँ

था पैरों में साँकल। कमर में रस्सी चार पुलिस के कान्स्टेबुल्स, वर्दी चढ़ाये, हाथों में सोंटे लिये साथ थे। जितने वे घमंड से चल रहे थे उतना ही शरद हीनता से। ग़नीमत यही थी कि सब उसे आसानी से नहीं पहिचान सकते थे। वह साधु के वेष में था। लम्बी डाढ़ी, मुँह पर झूलते हुए जटे, उसकी लज्जा को बचा रहे थे। तब भी आत्म ग्लानि उसके टुकड़े टुकड़े किये देती थी। वह नजर उठाकर ऊपर नहीं देखता था, न दायें बायें भी। पृथ्वी पर नजर गड़ाकर इस तरह देखता हुआ चलता था कि यदि कोई सूराख या गड्ढा मिल जाय तो उसमें समा जाय। परन्तु शहर की पक्की सड़कों पर सूराख या गड्ढा कहाँ? अदालत जाने के लिये कई रास्ते थे, परन्तु शैतान कान्स्टेबुल्स नित्य उसे विनोद बाबू के दरवाजे से ही निकालते थे। यह एक फर्लाङ्ग रास्ता उसे, कई मील से भी अधिक लम्बा मालूम पड़ता था। यद्यपि वह यहाँ अपनी चाल कुछ तेज कर देता था, तब भी उसके पैर साधारण से भी अधिक धीरे हो जाते थे। बेड़ियों के भार को वे सम्हाल ले जाते थे परन्तु लज्जा के भार से नीचे दब जाते थे। रास्ते में उसे अपना क्वार्टर भी मिलता था अपना लगाया हुआ ताला अब भी उसे लगा दीखताथा। कभी कभी विनोद के दरवाजेपर खड़े उसके आफिस के चपरासी भी मिल जाते थे। कोई उस पर तरस खाते हुए न दिखते थे। सब उसकी ओर हँसते और मजाक उड़ाते हुए नजर आते। परन्तु न शरद उनसे कुछ कह सकता न वे ही शरद से कुछ कह सकते। सब नजर आते परन्तु जिसकी उसे तलाश रहती वह न दीखती। कुमुद का पता न पड़ता।

कमुद ने आज उसे देखा। वासुकी ने कुछ व्यंग भरी हँसी हँसते हुए पूछा "क्यों पहिचाना इन साधू महाराज को, ये हरद्वार से गिरफ्तार होकर आये हैं। बड़े करामाती साधू हैं। सच्चे ईश्वर-भक्त हैं। इन्हीं के दर्शनों के लिये तुम्हें ले आई हूँ।

आश्चर्य से शरद की ओर देखती हुई कुमुद बोली, "नहीं मैंने तो

नहीं पहिचाना भाभी ! क्या मैंने इन्हें कभी पूर्व भी देखा है। य गिरफ्तार क्यों हैं। कितनी बुरी तरह से जकड़े हुए हैं ?

"देखा ही नहीं, परखा भी है," वासुकी ने हँसते हुए उत्तर दिया। कुमुद समझ गई। उसे सहसा शरद की याद आ गई। तब भी अपनी आँखों पर विश्वास न कर सकी। कुछ सहमी सी कुछ दीन हीन हो कर बोली "भा भी ? तुम भी मज़ाक उड़ालो। मेरे अभी ऐसे ही दिन हैं। इन्हें ही क्यों मैंने तो तुम सब को परखा है। पर सभी दुश्मन ही निकले। कोई काम न आया। तकदीर ही खोटी है। कोई काम आवे कैसे।

वासुकी कुछ गम्भीर हो बोली "कुमुद तुम अपनी माँ के कारण ही सब को नीम निवोरी हो गई भाई तो तुम्हें मुझसे भी अधिक चाहते थे। तुम्हीं ईमान से कह दो, क्या कभी उन्होंने तुम्हारे साथ कपट व्यवहार किया है। अकेली बहिन थी। तुम्हारे पढ़ाने लिखाने में दिल खोल कर उन्होंने रुपया लगाया। शादी में भी क्या न लगा दे। पर तुम्हारी माँ ने पहले ही से उनका दिल खट्टा कर दिया। तब भी उनसे जो कुछ बना शादी में लगा ही दिया। दुनिया में नेकी का फल वदी है ही। अपनी माँ की बातें सुन ही चुकी हो। जाने किस ईश्वर ने उन्हें गढ़ा था।

कुमुद आँखों में आँसू भर कर बोली "माँ नहीं शत्रु है। उसकी क्या क्या बात तुमसे कहूँ।"

कुमुद के मन में आ गया कि चोरी का सारा हाल उसे बतला दे परन्तु जीभ दबाकर रह गई। डरी कि कहीं बात खुल न जाय तो माँ कुए में गिर पड़े।—

वासुकी उसके भाव को ताड़ गई। बोली "कहो कहो, क्या कहती आ रही थीं। क्यों रुक गई। मैं किससे कहने जाती हूँ। इतनी ही बड़ी मर जाऊँ यदि तुम्हारी बात किसी से कुछ कहूँ। किसी को हवा भी न लगने दूँगी। तुम्हारे भाई से भी न कहूँगी।

"कोई ऐसी बात नहीं" कुमुद ने उसे बहला दिया।

इतने में अन्दर से विनोद बाबू निकल आये। बोले "देखा कुमुद तुमने उस कैदी को। यह, वही तुम्हारा "शरद"! हरद्वार से गिरफ्तार होकर आ गया है आज इसका फैसला है। जुर्म साबित हो गया है। उसने कबूल भी कर लिया है। दस वर्ष से कम को जेल न जायगा। उसने जुर्म किया है. तब भी न जानें क्यों मुझे उस पर रहम आता है। बेचारा है सीधा साधा।—

कुमुद, को सुनते ही रो आया आँखों में आँसू भर आये। फिर मन में आया कि चोरी का कच्चा चिट्ठा विनोद को बतला दे और निरपराध शरद को बचा ले, परन्तु कुछ कह न सकी।

विनोद बोले "मैं वहीं अदालत जा रहा हूँ। फैसला सुनूँगा। यह कहते हुए वह चले गये।

कुमुद के मन में विचार उठा कि वह भी अदालत चली जाय और जज को सब हाल बतला आवे। अब भी अवसर था। शरद उसी का बुलाया हुआ आया था उसकी हिफाजत की जिम्मेदारी उस पर थी। फिर वह बेचारा निरपराध था। दूर परदेश में मेरे सहारे ही पड़ा था। मैंने उससे प्रेम भरी बातें की थीं। उसे अपना दिल दिया था। उसका फल वह इस प्रकार भोगे। वाह रे संसार। वाह री दुनिया। क्या करूँ। कैसे उसे बचाऊँ। मेरे प्रेम के कारण दुनिया उससे जलती है। वह बेचारा बेकार ही दंड भोगने जा रहा है। इस माँ का बुरा हो। मर न गई राक्षसी। पर ऐसों को मौत कहां! काले कौए खाकर आती है।

वासुकी भीतर चली गई। कुमुद कुछ देर और वहीं खड़ी रही। एक तांगे वाला खाली ताँगा लिये हुए कहता हुआ निकला "कोई सवारी अदालत की। कोई सवारी अदालत को।" फी सवारी सिर्फ चार पैसे। फी सवारी सिर्फ चार पैसे।" कुमुद ने ताँगा रोका। जीने से नीचे उतर आई। परन्तु फिर न जाने क्यों लौट आई! ताँगे वाला आह भरता हुआ चला गया।

कुमुद ने नहाया धोया न था! कु? पर गई।

रमा वहीं बैठी अपने हाथ पैरों में साबुन लगा रही थी। कुमुद को आया देख बोली बेटा तू भी नहा धो डाल और खाना खाले, जो कुछ हुआ सो हुआ ! फिर दिन फिरेंगे तब सब ठीक हो जायगा। ईश्वर बाबू को अक्ल देगा। मेम से उसकी जिन्दगी नहीं कट जायेगी। यह तो साल दो साल का जवानी का शौक है उसका खुमार निकल जाने दे, फिर तू उसकी पत्नी और वह तेरा पति होगा। क्यों फजूल फिक्र करती है। बिगड़ी हुई बात समय पाकर ही सुधरती है।

रमाकी बात सुनकर कुमुद को ऐसा गुस्सा आया कि उसे उठाकर कुँए में फेंक दे, पर दाँत पीसती ही रह गई उसकी ओर से मुँह फेर कर बोली माँ जी तुम मुझसे न बोला करो। तुम मुझे फूटी आँखों नहीं सुहाती माँ न होती तो तुम्हें कब का इसी कुँए में फेंक देती। तुम्हें दया धर्म कुछ छूकर भी नहीं निकला। पूजा करती हो अपने हठ्ठे, उस शरद की दशा देखी ! बेचारा आज कैसा बेड़ी हथकड़ियों में कसा हुआ जा रहा था, न जाने कितने साल तक तुम्हारी करतूत का फल भोगे। तुम क्यों पत्थर की हो गई हो। एक निरपराध परदेशी पर तो रहम खाओ। उसकी जान बकसो मैंने उसे बुलाया था ! मेरे सिर पर ही उसकी रक्षा तथा देख भाल का उत्तरदायित्व है। क्यों मुझे पाप में ढकेल रही हो अपना कुसूर मान लो ! विनोद तुम्हारा क्या किए लेते हैं। रुपया तो तुमसे लिये नहीं लेते। कुछ भला बुरा ही कह लेंगे और चुप होकर बैठ रहेंगे बेचारे उस बिना मुँह के परदेशी की जान तो बच जाये।

रमा सुनते ही आपे से बाहर हो गई फिर झल्ला कर बोली। "बेहया ! तू फिर खोपड़ी खाने को आ गई। अभी टली थी तो तबियत चैन में हो गई थी। अपने उस यार के लिये तुझे अपनी माँ को भला बुरा कहते कुछ नहीं लगता। मुँह में कीड़े पड़ेंगे उसी यार के पीछे अपने सात भाँवर के पड़े पति से बिगाड़ कर आई और फिर यहाँ आ गई। उसके साथ भागने की इच्छा होगी तभी तुम बार-बार उसकी पैरवी कर रही हो तुझे उसकी गिरफ्तारी की इत्तला कैसे मिल गई !

तू आ कैसे गई ? तू ही दया धर्म जानती है जाने कौन मुल्क के बदमाशों से यारी करती है। बड़ी बी० ए० हुई है। तेरे बी० ए० में हींग रक्खूँ।

कुमुद ने आज कोसी बातें रमा के मुँह से पूर्व कभी न सुनी थी। शील संकोच को वह ठुकरा चुकी थी। गुस्से के मारे रोती हुई कुमुद बोली "माँ जी। तुम्हें क्या हो गया है पागल तो नहीं हो गई। मेरे कारण तुम एक निरपराध परदेशी के प्राण लिये लेती हो। मैं किसकी कसम खाँऊँ। कैसे तुम्हें विश्वास दिलाऊँ कि, मैं उसके साथ न भागूँगी न उसका मुँह देखूँगी। हाँ उसे जेल से छुड़वा दो। वह अपने घर जाये। उस पर नहीं मेरे पर रहम खाओ, मैंने उसे बुलाया था उसकी आत्मा मुझे कोसती है। तुम्हें चोरी स्वीकार करने में यदि शर्म आती हो तो कहो मैं स्वीकार कर लूँ, मैं अदालत में जाकर जवाब दे आऊँ। अब भी समय है तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। हा हा करती हूँ न मुफ्त में उस बेचारे की जान लो। मत पत्थर का हृदय करो। स्त्रीत्व तक को कलंकित कर रही हो! कुछ तो दया देखो ! धर्म पहिचानो। तुम मेरी माँ हो। मुझे तुम्हारा मान रखने का यहां तक ध्यान है कि अपने ऊपर सारा दोष लेने को तैयार हूँ। परन्तु तुम्हें मेरा कुछ भी ध्यान नहीं। तुम्हारी शीतल गोद में मैंने सदा आर्द्रता का अनुभव किया है सुख के सपने देखे हैं। तुम्हारे अंचल से सदा अपने आंसू पोंछे हैं। तुम्हारे स्तनों से अमृत का पान किया है। तुम्हारे कोमल करों के नीचे सदा अभय दान पाया है। पर आज तुम्हें क्या हो गया है। आज तुम्हारी वह आर्द्रता कहां गई। आज तुम्हीं मुझे रुला रही हो अपने शब्दों से ज़हर पिला रही हो। क्या तुम्हारा यह व्यवहार माँ के अनुरूप है। तुम्हीं बताओ किसके अंचल से आज अपने आंसू पोंछूँ। किसकी गोद में अपना यह कलुषित मुँह छिपाऊँ। पृथ्वी माता भी आज तुम्हारी सी निर्दय हो रही है। वह भी नहीं फट पड़ती कि उसी में समा जाऊँ। सच है दुःख में कोई किसी का साथी नहीं होता।

मौत भी मुझे भूल गई है। धन्य है मेरी तकदीर, मैं दूसरे का जीवन नष्ट करने को पैदा हुई थी।"

ऐसा कहती हुई कुमुद फूट फूट कर रोने लगी। उसकी दयनीय दशा को देखकर पत्थर भी पिघल जाते, परन्तु रमा का हृदय न पसीजा। मुँह मटकाती हुई बोली "उस बेचारे की कितनी जान प्यारी है। उसके कारण अपनी भी जान देने को तैयार है। ऐसा प्रेम अपने पति से न किया कि दीन दुनिया दोनों सुधरते। उस गुंडे के कारण सबको जलील कराने को तैयार है। अपनी मां की भी दया नहीं देखती, मां चाहे मर जाय पर वह गुंडा बच जाय। कालेज में यही तालीम पाई है। जानती कि तू ऐसी निकलेगी तो आज का इन्तज़ार न करती तभी तुझे स्तनों पर ज़हर पोत कर पिला देती। जिन हाथों के नीचे तुझे अभय दान मिलता रहा है उन्हीं से तेरा गला घोंट देती। रोकर मुझे डराती है। जब तू अपने ही मन की है तब तुझे जो कुछ करना हो कर डाल। न रहेगी मां और क्या होगा ?"

कुमुद ने रूमाल से आंसू पोंछते हुए कहा—"मां मैं आज भी तुम्हारे हाथों से मरने को तैयार हूँ। अभी गला घोट दो। चाहे ज़हर मंगाकर पिला दो। पर उसे तो छुड़ा दो। वह अपने घर जाय। जाने किस परिस्थिति से मजबूर होकर बेचारा यहां तुम्हारी नौकरी करने आया होगा। उसके भी मां बाप होंगे। उनकी भी उस पर आशा लगी होगी। रुपया खर्च कर और इतने दिनों शरीर घिसकर पढ़ने लिखने का क्या उसे यही फल मिलना चाहिये। जेल में ही सड़कर मर जाना चाहिये। सोचो तो सही। तुम्हारे भी तो पुत्र हैं। कहीं भैया पर ऐसी आपत्ति पड़ी होती तो तुम क्या करतीं। भैया के समान उसे भी समझो। माता का हृदय तो सारे संसार में एक है। उसे भी अपनी ही आत्मा समझो। अपने और पराये का भेद लगाना तो निरी मूर्खता है। न्याय की दृष्टि से देखो। यदि उसका कुछ भी अपराध होता तो मैं एक भी शब्द उसके पक्ष में न बोलती। मित्र हो या शत्रु किसी को निरपराध फांसी पर चढ़ते तो नहीं देखा जाता।

यह बात मनुष्यता के विपरीत है। मरते समय क्यों कलंक सिर ले रही हो। ईश्वर के सामने क्या जवाब दोगी ? लोक परलोक दोनों मत बिगाड़ो।

रमा झल्लाकर बोली—क्या अच्छा गुरु मिला है। कलकी छोकड़ी को, जिसके सिर की राख भी नहीं छूटी, मुझ साठ वर्ष की बुढ़िया को समझाते शर्म नहीं आती। मियां जी क्यों दुबरे शहर के अँदेशे से। मेरी तुझे क्या पड़ी है। मैं ईश्वर को जवाब दे लूँगी। ईश्वर भी यदि शरद की जगह होता तो उसकी भी ऐसी ही दशा कराती। जो दूसरे की लड़कियों को वरगलावे, दूसरे के तथा अपने कुल में दाग लगावे, उसकी क्या ही दशा न होनी चाहिये। क्या ईश्वर मेरी बात न सुनेगा। यदि मुझे दण्ड देगा तो उसे भी न छोड़ेगा। यदि तू यहां न आई होती और उसकी पैरवी न करती होती तो उसे कब का छुड़ा देती। परन्तु तू ही उसकी यह दशा करा रही है। उसके ही कारण तू अपने विवाहित पति से तृण सा तोड़कर आ गई है। भागना तो उसके साथ चाहती है, पति से कैसे पटती।

कुमुद बे-शर्म बनकर फिर बोली—"तो मां मैं अपनी ग़लती के लिये क्या करूँ। जो तुम कहो वही करने को तैयार हूँ। मैं मनुष्यता के नाते उसकी पैरवी कर रही हूँ, प्रेम के नाते नहीं। मैं प्रेम को अपने जीवन से कभी ठुकरा चुकी हूँ। तुम्हें कैसे विश्वास दिलाऊँ, कहो हृदय निकाल कर तुम्हारे सामने रख दूँ।"—

रमा घृणा की हँसी हँसती हुई बोली—हृदय तो तू उसे दे चुकी है। निकाल कर क्या रख देगी। मुझे अधिक बोलने के लिये बाध्य मत कर। मां और बेटी के बीच जो साधारण मर्यादा होती है, उसे भी तोड़ने को मुझे लाचार मत कर।

कुमुद समझ गई मर्ज लाइलाज है। मां पिघलने की नहीं। वह मां नहीं मां के रूप में नागिन है जो अपने बच्चों को ही खा जाती है। वह हृदयहीन है। अपढ़ और दुराग्रही है। उसके दिल में पाप है।

उसे नई सभ्यता की हवा नहीं लगी। उसके विचार संकीर्ण हैं। उसे समझा लेना हँसी खेल नहीं।

कुमुद को चुप देख रमा ने समझा कि शायद देवता वाचा में आ रहा है। बड़े प्रेम से समझाती हुई बोली—बेटी देख तू अभी बच्चा है! अबोध है। जवानी का जोश तुझे अन्धा किये है। संसार का तुझे ज्ञान नहीं। पढ़ी जरूर है पर गुनी नहीं। रमते योगियों का विश्वास नहीं किया जाता। जिन्दगी भाँवर के पड़े पति के साथ ही गुजरती है। उठाईगीरों के साथ नहीं। उस सिर कटे के पीछे पागल हुई जाती है। उसे भाड़ में नहीं जाने देती। दुनियाँ में ऐसे हजारों गुंडे फिरते हैं। सरकार ने गुंडों के लिये ही अदालतें और जेलें खोल रक्खी हैं। सब अपने किए का फल पाते हैं। हजारों वर्ष से जो अपनी परम्परा तथा रीति रिवाज चले आ रहे हैं वे कैसे तोड़े जा सकते हैं। हमारी लड़कियों ने कभी ऐसी उद्दंडता अंगीकार नहीं की। उन्हों ने कभी प्रेम करके शादी नहीं की, शादी करके प्रेम करना सीखा है, और अपने पतियों के साथ सती तक हुई हैं। क्या तूने सती सावित्री इत्यादि की कहानियाँ नहीं पढ़ी? सतीत्व में जितनी शक्ति है उतनी प्रेम में नहीं। भारत के अपने प्राचीन आदर्श को मत भुला दे। यह तो मेमों की देखा देखी भारत में एक लहर सी आ गई है। परन्तु यह आगे चलने की नहीं। यह चीज अपनी नहीं। जैसे विदेशीशासन बहुत दिन नहीं चलता वैसे ही विदेशी संस्कृति। मैं तो कुछ पढ़ी लिखी नहीं, परन्तु अनुभव अवश्य कर चुकी हूँ।

बाबू भी अभी बच्चा है। उसे भी अभी समझ नहीं। अंग्रेजी सभ्यता में वह भी पला है। नया मुसलमान सब से ऊँची अज़ान देता है। वह मेम ले आया तो कोई आश्चर्य नहीं। परन्तु मेम से उसकी जिन्दगी का निर्वाह होने का नहीं। मेम, हिन्दुस्तानी के साथ बहुत दिन नहीं रह सकती। यह कभी न कभी उसे छोड़ कर भाग ही जायगी। कुछ ही दिन धीरज धर, बाबू की आँखें शीघ्र ही खुलेंगी। वह तेरा पति होगा और तू उसकी स्त्री। एक दूसरे में प्रेम होगा।

दोनों का जीवन सुख से कटेगा। उठ अपना काम देख। अब दुःख मत कर। मैं कुछ बुरा कहती होऊँ तो मुझे दोष दे। तू तो स्वयम् समझदार है मुझे समझा।

कुमुद फिर चिढ़ कर बोली "तुम्हें ब्रह्मा भी नहीं समझा सकता आदमी की तो बात ही क्या है। तुम्हारे साथ तो तुम्हारे ही समान होने की आवश्यकता है। मैं सीधी साधी हूँ तुम्हारी इज्जत करती हूँ, इसी लिये तुमने मुझे इतना दबा लिया है। और कोई कालेज की निकली हुई लड़की होती तो तुम्हें कैफियत मालूम होती। न पढ़ने लिखने का ही कारण है कि तुम हजारों वर्ष पुरानी रूढ़ियों और अन्ध विश्वासों से चिपटी हो। भारत का स्त्री समाज इसी योग्य है कि वह अपने मरे पतियों के साथ जला करे। झूठे आदर्शों में ही फँसकर भारत ने अपने हाथों अपना सर्वनाश किया है। भारत की स्त्रियों के मुखों पर अब भी घूँघट पड़ा है। वह आगे देख ही कैसे सकती हैं। कहीं प्रेम करना भी सीखा जाता है। वे आत्मघात सीखती हैं। अपने हृदय की स्वच्छन्द लहरों को नालियों में ,से बहाना सीखती हैं। अपने उठते हुए उद्गारों को आँसुओं द्वारा बहाना सीखती हैं। गुलामी और पराधीनता का उन्हीं से सूत्रपात होता है। स्त्रियों की पराधीनता का ही परिणाम है कि आज भारत गुलाम है। जब तक तुम सी मातायें इस देश में रहेंगी तब तक यह गुलाम बना ही रहेगा।

रमा दाँत पीसती हुई बोली "बारा वर्ष कुत्ते की पूँछ मली में डाली, जब निकली तब टेढ़ी की टेढ़ी। बेटी! तुझसे कौन विवाद करे। तूने ही भारत के उद्धार का ठेका लिया है। उस गुंडे के साथ यदि तुझे भाग जाने दूँ तो भारत का उद्धार हो जाय। उसकी गुलामी हट जाय। स्त्री समाज सुधर जाय। स्त्रियों की पराधीनता मिट जाय। सारी हिन्दू जाति का कल्याण हो जाय। कहाँ तक जीभ को रोकूँ। बात में बात निकल ही तो आती है।

कुमुद को फिर क्रोध आ गया। रोती हुई बोली "माँ जी तुम बार बार गुंडे के साथ भागने की बात क्यों करती हो। क्या तुम्हें मेरे

मर्म को दुखाने में ही आनन्द आता है। तुम्हें ऐसी बात कहने में शर्म नहीं आती। तुम किस से ऐसी बात कहती हो। तुम्हें मेरे भागने का डर है तो मुझे क्यों नहीं जेल में डलवा देती या घर ही में जेल बनवा देतीं। मेरे अपराध का दंड दूसरे को देती हो। मैं तुम्हारी कोख से पैदा हुई हूँ। यही मेरा अपराध है।

रमा भी रोने लगी। बोली "बेटा मैं तुझसे हार गई। तुझे जो करना हो कर। तुझे समझाने का काम नहीं। जा तू उसे छुड़ा ले। अपने मनकी कर ले। मैं लोक लाज से बचने के लिये, ले यह चली! कुए में गिरी!" ऐसा कहती हुई रमा कुए की ओर बढ़ी।

कुमुद ने दौड़कर उसका रास्ता रोक लिया और बोली "माँ जी तुम न गिरो मैं ही गिरती हूँ। ऐसा कहती हुई वह धड़ाम से कुए में कूद पड़ी।

वह कुए में गिरी नहीं कि रमा ने जोर से चीख मारी। "दौड़ो दौड़ो, मेरी बेटी कुए में गिर पड़ी। मेरी प्यारी कुमुद! मेरी प्यारी बेटी। मैं ने जानती थी कि तू इतनी मूर्ख है, कि तूने यही पढ़ा है।

रमा की चीख को सुनकर वासुकी दौड़ी आई। घबड़ाई बोली "क्या हुआ, क्या हुआ माँ जी।

रमा—क्या हुआ, क्या वतलाऊँ। कुमुद कुए में गिर पड़ी।

वासुकी "तो दौड़ो किसी को बाहर से बुलाओ। उसे कुए से निकाले। यहाँ रोने से क्या काम चलेगा।"

रमा दौड़ी और दो चार आदमियों को बाहर से बुला लाई। दो आदमी कुए में उतरे, शेष उसे खीचने को ऊपर रहे। कुमुद आई, परन्तु कुमुद कहाँ थी। रमा और वासुकी उसे देख-देख कर फूट-फूट कर रोने लगीं। उसके चेहरे पर वही मधुर छवि थी। आखें अब भी खुली सी थीं। वे निर्दय माँ की ओर अब भी देख सी रही थीं। अब भी विनय सी कर रही थी कि शरद को छुड़ा दो। निरपराध उसके प्राण न लिये लो। कुछ तो दया देखो। धर्म को पहिचानो। तुम

माँ हो। ममत्व का अवतार हो। मैं उसके साथ न भागूँगी, कैसे विश्वास दिलाऊँ, क्या हृदय निकाल कर बाहर रख दूँ।

इतने में विनोद बाबू भी घर आगये। इका-इक रमा से बोले "माँ जी मैंने शरद को छुड़वा दिया। मुझ से उसका दुःख न देखा गया। रुपया गया तो गया, उसके बदले में मुझे सहृदयता मिल गई। मैंने शरद को जीत लिया।

विनोद को देखते ही रमा और वासुकी दहाड़ मारकर रोईं। विनोद ने घबड़ा कर पूछा। "क्या हुआ! क्या हुआ। रमा रोती हुई बोली "क्या हुआ? वही हुआ जो तुम्हारे मन में था। मेरी प्यारी कुमुद कुए में गिरकर मर गई। कुमुद को देखते ही विनोद बाबू जमीन पर बेहोश होकर गिर पड़े। रमा और वासुकी ने उन्हें सम्हाला। मुँह पर पानी के छींटे मारे। हवा की तब कहीं होश में आये। होश में आते ही रो कर कहने लगे "माँ तुमने कुमुद की आखिर जान ले ही ली। तुम अपनी लड़की की भी आखिर सगी न हुई। कितनी तुमसे अनुनय विनय की कि उसे अपने मन की शादी कर लेने दो, पर तुमने एक न सुनी। बेचारी अपने मन के अरमान मन ही में लेकर चली गई। शरद से शादी हो जाती तो तुम्हारा क्या बिगड़ जाता। जाति पाँति के झूठे बन्धनों ने ही भारत को बरबाद कर दिया।"

रमा अपना अपराध कब स्वीकार करनेवाली थी। क्रोध से बोली "विनोद जले पर नमक मत लगा। मुझे इस वृद्धावस्था में कलंक मत लगा। ये सब तेरी और वासुकी की ही करतूत है। उस गुण्डे को यहां बुलाकर रक्खा। मेरी लड़की को बर गलाया। उसे अँग्रेजी पढ़ाई। नई सभ्यता सिखलाई। सनातन से चली आती प्राचीन भारतीय संस्कृति को ठुकराया। मेरी ही लड़की से ये सब शौक पूरे करने थे। अपने पैदा होती तब कर लेते। अब हो गये तुम दोनों के दिल ठंडे?"—

ऐसा कहती हुई रमा फिर दहाड़ मारकर रोने लगी। विनोद तो रमा की बात सुनकर चुप रह गये, परन्तु वासुकी को धीरज न बँधा

झल्ला कर बोली "माँ जी क्यों अपना दोष दूसरे के सिर लादती हो। क्या संसार में लड़कियाँ पढ़ती लिखती नहीं? हमने ही कुमुद को क्या नया-नया पढ़ाया था? तुम्हारी तो बुढ़ापे में बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। उसी का यह परिणाम है। हमें तुम्हारी सब करतूतें ज्ञात हैं, और अधिक मत कहलाओ।

रमा क्यों चुप रहने लगी थी। बोली "क्यों दोनों आदमी मेरे पीछे पड़े हो। मेरी लड़की के प्राण ले लिये, क्या अब मेरे भी लेना चाहते हो। अब मुँह से बात निकालो तो इसी कुँए में मैं भी धड़ाम से गिर पड़ूंगी। मेरी तबियत दुःख में है। मेरी आँखों की पुतली, मेरी अनन्त साधना का फल, मेरे सामने आज मुरझाई हुई लता-सी पड़ी है। हा! अब किसको देख कर जियूँगी। मैं न जानती थी कि लोग पढ़ लिखकर इतने मूर्ख हो जाते हैं।"

ऐसा कहती हुई रमा फिर रोने लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की धार बह चली।"

वासुकी फिर कुछ कहनेवाली थी, परन्तु विनोद ने उसे रोक दिया। बोले "माँ जी का कोई दोष नहीं! वास्तव में सब दोष हमारा है। यह नये और प्राचीन विचारों का संघर्ष है। पुरानी रूढ़ियाँ सहसा नहीं तोड़ी जा सकतीं न पुराने विचार ही सहसा बदले जा सकते हैं। माँ जी को मत छेड़ो।

इतने में दिनेश बाबू भी आ गये। कुमुद का हाल सुनते ही उनपर वज्रपात-सा हो गया। फूट-फूट कर रोने लगे। रोने के शब्द से सारा घर गूँज उठा। सब रो रहे थे कुमुद ही एक चुप पड़ी थी। परन्तु उसकी मूक मुद्रा ही उसकी करुण कहानी कह रही थी। सब को रोने में सहयोग दे रही थी।—

घंटे दो घंटे रोने के बाद सब लोग शान्त हो चले। संसार का न सुख ही चिरस्थाई है न दुःख ही। अब कुमुद की अन्तिम क्रिया की तैयारी होने लगी।

तैयारी होते कुछ देर न लगी। उसे श्मशान भूमि पर ले गये।

चिता तैयार हुई। शीघ्र ही सहृदय ज्वालाओं ने उसे हँस कर अपनी गोद में ले लिया।

सब लोग आँसुओं की तिलांजली दे घर आये।

इतने में शरद ने भी इस दुर्घटना का हाल सुना। कुमुद अब भी उसके हृदय से निकली नहीं थी। अब उसकी सुन्दर मूर्ति उसके हृदय पर अंकित थी। वही जार्जिट की साड़ी, उसके भीतर से झलकती हुई रेशमी पेटीकोट को बेल, उसकी वह लम्बी वेणी, अब भी उसकी आँखों में उसी तरह झूल रही थी। रेल पर लिया हुआ वह फोटो आज भी उसके सामने था। वह पागल सा श्मशान भूमि को दौड़ा गया। देखा की कुमुद जलकर राख की ढेर हो गई है।

उसकी आँखों से दो बूद आँसू निकल पड़े।

हमारी अन्य प्रकाशित पुस्तकें

१	प्रसाद और उनका साहित्य	२॥)
२	डाक्टर सनयातसेन	१॥)
३	उपन्यास कला	२)
४	उत्सर्ग (कहानी) तारापांडे	१॥।)
५	आभा (काव्य) "	॥)
६	रेखाएँ (गद्य काव्य) "	॥।)
७	सीकर (काव्य) "	१।)
८	फ्रान्स की दो आंखें	१)
९	डाक्टर बनाम पहलवान लड़की (नाटक)	॥=)
१०	आंखो देखा महायुद्ध	३)
११	दोनों की भूल	१।)
१२	यान्त्रिक आविष्कार	१॥)
१३	कविवर रत्नाकर	४)
१४	बन्दी (काव्य)	१।)
१५	दीपदान "	१)
१६	नारी भूषण	१॥)
१७	गद्य प्रकाशिका	१॥)
१८	महारथी अर्जुन	१।)
१९	महावीर कर्ण	१)
२०	अशोक	॥।)
२१	काव्य कौस्तुभ	१॥)
२२	छाया	१।)
२३	टीला	१॥)
२४	कच्चा धागा	२)
२५	मनोवेदना (उपन्यास)	१)

मिलने का पता—

विद्याभास्कर बुक डिपो,

चौक, बनारस।

पं० [illegible]जेन्द्र ना[illegible] मिश्र [illegible] [illegible]नक

१—कच्चा धागा

यह निर्गुण सीरीज की तीसरी पुस्तक है। निर्गुण जी की प्रशंसा करना तो सूर्य को दीपक दिखाना है। कहानी संसार में आपने जो कीर्ति उपार्जित की है वह बड़े-बड़े कहानी लेखकों को उपलब्ध नहीं हुई है। निर्गुण जी के पात्र सजीव होते हैं। भाषा बड़ी मँजी हुई भाव हृदय को स्पर्श करते हुए पाठको को एक नई दुनिया में पहुँचा देते हैं। कहानी जब तक पूरी न हो जाय छोड़ने को मन नही करता। शीघ्र मँगाइए। मूल्य २) रु०

२—छाया

निर्गुण जी कहानी संसार में एक माने हुए व्यक्ति है। आपकी कहानिया इतनी उच्चकोटि की होती है कि आपकी मुक्तकण्ठ से बड़े-बड़े विद्वान आलोचकों ने सराहना की है। छाया में है—गांव की एक अपढ़ नारी, जो शहरू औरत को आदर्श समझती है। युवती विधवा के आसू जिसका सिन्दूर चिन्ह तक नहीं मिटा है। एक निराश प्रेमी के उच्छ्वास जिसकी आखे नही रही। हताश प्रणया रमणी के भाव जिसने पांच साल बाद पत्र लिखा। छाया की भूमिका यशस्वी कलाकार राय कृष्णदासजी ने लिखी है। पुस्तक का मूल्य है केवल १।) रु०

३—टोला

प्रस्तुत पुस्तक निर्गुण जी की दूसरी कृति है। इस की प्रशसा संसार के प्रसिद्ध समालोचक पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के शब्दो मे सुनिए—इस कहानी संग्रह को तो पढ़ कर मैं मुग्ध हो गया। इस संग्रह की पहली ही कहानी रावण की तो सहस्रों प्रतियां छपनी चाहिए। इसे तो चित्रित कराने की भी आवश्यकता है। हिन्दू मुस्लिम प्रेम का जीता जागता सजीव चित्र इसमें पाठकों को मिलेगा। निर्गुण जी की इस कलामयी कृति को पढ़ कर आप अवश्य तृप्त होंगे। १५० से ऊपर पृष्ठ मूल्य सिर्फ १) शीघ्र अपनी प्रति मंगाइए। बहुत थोड़ी प्रतिया बची हैं।

मंगाने का पता—विद्याभास्कर बुक डिपो,
चौक, बनारस